शंभुदास

(तीनटा दीर्घ कथा, मइटुग्गर, शंभुदास आ फाँसी)

शंभुदास

(तीनटा दीर्घ कथा, मइटुग्गर, शंभुदास आ फाँसी)

जगदीश प्रसाद मण्डल

ISBN : 978-93-80538-74-7

मूल्य : ₹ २००/-
पहिल संस्करण : २०१२

श्रुति प्रकाशन
रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली- ११०००८
दूरभाष- (०११) २५८८९६५६-५८
फैक्स- (०११) २५८८९६५७
Website : http://www.shruti-publication.com
e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at : Ajay Arts, Delhi- ११०००२

Typeset by : Umesh Mandal.

Distributor :
Pallavi Distributors, Ward no- ६, Nirmali (Supaul), मो.- ९५७२४५०४०५, ९९३१६५४७४२

Shambhudas : A Collection of three long Maithili stories (Maituggar, Shambhudas and Phaanshi) by Jagdish Prasad Mandal

अनुक्रम

मइटुग्गर

जहिना सरयुग नदीमे नहा भक्त मंदिरमे प्रवेश करिते भगवान रामक दर्शन करैत अछि, तहिना तपेसर अंगनाक मेहमे ओंगठि समाजकेँ भोज खुअबैक ओरिऔन देखि रहल छथि। पोखरिक पानि जकाँ शीतल, शान्त आ समतल मन अंगनाक सुगंधमे मस्त छन्हि। तइ बीच बेटी घुरनी चमकैत स्टीलक छिपलीमे पनरह-बीसटा सूखल बरी एकटा बर आ पानि भरल गिलास आगूमे रखि कहलकनि-

“कनी चीख कऽ देखियौ जे नीक भेल आकि नै?”

मुस्कुराइत बेटी आ छिपलीमे सजल बर-बरी देखि तपेसर हरा गेलाह। मन पड़लनि मइटुग्गर। मुदा चुल्हिपर चढ़ल लोहिया छोड़ि अँटकब उचित नै बूझि घुरनी चुल्हि लग पहुँचि गेली। कमलक फड़ सन एकटा बरी मुँहमे लइते मन पड़लनि परिवारमे अपन कएल काज।

साओन मास। भोरहरबामे मेघ फटि बरखो भेल आ अधरतियेसँ जे पूर्बा उठल, उठले रहि गेल। कखनो काल झकसियो अबिते रहल। जेना-जेना दिन उठैत गेल तेना-तेना पूर्बाक लपेटि सेहो बढ़िते गेल। प्रसवक दर्दक आगम सुशीला सासुकेँ कहलनि। पुतोहुक बात सुनि सुनयना बेटा तपेसरकेँ पलहनि बजबए कहलखिन।

ओसारक ओछाइनपर ओंघराएल सुशीलाक मनमे लड़ाइ पसरि गेलनि। एक दिस प्रसवक पीड़ा अपन दल-बलक संग अंगक पोर-पोरमे चढ़ाइ करैत तँ दोसर दिस जिनगीक कठिन दुर्गमे फँसल मन खुशीक लहरिमे झिलहोरि खेलाइत। नारी जिनगीक श्रेष्ठतम काज। जेहने भरिगर काज तेहने मुँहमंगा मातृत्वक उपहार। पूर्बाक लपेटि देखि सुनयनाकेँ ठकमुड़ी लगल रहनि। आइ धरि प्रसव गठुलामे होइत रहल अछि। जइ घरक टाट हवाक झोंककेँ नै रोकैत। आश्रमक घर जकाँ टाटमे लेब नै पड़ैत। मुदा वोनक बच्चाकेँ कोन घर रच्छा करैत अछि! गठुला छोड़ि मालक घरमे ओछाइन ओछा देलखिन। ओछाइन ओछा हियासए लगलीह जे अगियासी भइये गेल, फाट-पुरान लैये अनलौं। मालक घरसँ हुलकी मारि पुतोहु दिस देखलनि तँ चैन बूझि पड़लनि। मन असथिर भेलनि।

पलहनि ऐठाम जाइत तपेसरक मनमे अपन काजक भार उठलनि। एहेन भारी काजमे पुरुखक काज की अछि? डेग भरि हटल पलहनिक घर अछि तेकर बाद? मचकीपर झुलैत झुलनिहार जकाँ तपेसर झुलैत पलहनि ऐठाम पहुँचि

जनतब देलखिन। अपन उगैत लछमीकेँ देखि मुस्की दैत पलहनि कहलकनि-
''अहाँ आगू बढ़ू गाइयक थैर बनौने पीठेपर दौगल अबै छी।''

पाँचो मिनट पलहनिकेँ पहुँचला नै भेल आकि बेटाक जन्म भेल। धरतीपर बेटाकेँ पदार्पण करिते बिजलोका जकाँ परिवारमे खुशी पसरि गेल। देह पोछैत पलहनिक मन चालीस तम्मा निछौर, तइ परसँ निपनौन, लाढ़ि-पुरनि कटाइक संग उपहार, पसारी छी तँए मंगबोक अधिकार ऐछये जाइकाल एकटा सजमनियो मांगि लेब। सिदहा तँ देबे करतीह। हिसाबमे मन बौआ गेलनि। समाजमे भगवान केकरो सनतान दै छथिन तइमे सझिया कऽ दैत छथि ने। बच्चाक जिनगी हमरा हाथमे अछि, तहिना ने अपनो जिनगी दोसराक हाथमे अछि। तरे-तर मन खुशी भऽ गेलनि। मुस्की दैत सुनयनाकेँ टोनलनि-

''काकी, पहिल पोता छियनि, रेशमी पटोर पहिरबनि?''

धारक बेगमे दहलाइत दादीक मन, मुड़ी डोलबैत बजलीह-

''एकटाकेँ के कहए सातटा पहिरेबह।''

पलहनि-

''बच्चा मुँह, एन-मेन तपेसरे बौआ जकाँ छै।''

पलहनिक बात सुनि ओछाइनपर पड़ल सुशीलाक दर्द भरल देहक मनमे अपन सतीत्वक आभास भेल। मुदा अवसरकेँ हाथसँ नै जाए दिअए चाहि बुदबुदाएल-

''केहेन सपरतीभ जकाँ बजै-ए।'' मुदा पलहनि सुनलक नै। जइसँ आगू किछु नै बाजलि।

झीलक पानि जकाँ तपेसरक मन असथिर। सामान्य परिस्थिति तँए सामान्य मनक विचार। जहिना कठिनसँ कठिन, उकरूसँ उकरू काजपर लूरि डटल रहैत तहिना जिनगी काजपर नजरि दौड़ैत मन डटल। मन कहैत बीस-एक्कैस बर्खक उम्रो छेबे करन्हि, रोगो व्याधिक छुति देहमे नहिये छन्हि। बेटापर नजरि पहुँचिते पुत्र सन सम्पत्तिक आगमनसँ मन फुला गेलनि। जहिना लगौल गाछमे पहिल फूल वा फड़ लगलापर बेर-बेर देखैक इच्छा होइत तहिना तपेसरक मनमे उठैत। बर्जित जगह बूझि परहेज केने रहथि। मुदा तैयो जहिना डॉट टुटल कमल हवाक संग पोखरिमे दहलाइत तहिना खुशीक हिलकोरमे तपेसरक मन तड़-ऊपर करैत। मनमे उठलनि, पुरुख-नारी बीचक संबंधमे बच्चो पैघ शर्त्त छी। परिवारमे -संबंधमे- विखंडनक संभावना बनल रहैत अछि। लगले मन अपनासँ आगू उड़ि माए-बापपर गेलनि। हृदए बिहुँसि गेलनि। जहिना मातृत्व प्राप्त केलापर नारीक सौन्दर्य बढ़ि जाइत तहिना ने पितृत्व प्राप्त केलापर पुरुषोकेँ

होइत। लगले सिनेमा रील जकाँ बेटाक जन्मसँ अंतिम समए धरिक जिनगी नाचि उठलनि।

किछुए समए बाद सुशीलाकेँ पुन: दर्द शुरू भेलनि। समएक संग दर्दो बढ़ए लगलनि। दुखक संग छटपटाएब शुरू भेलनि। सुशीलाक छटपटाहटि देखि सुनयना पलहनिकेँ कहलखिन-

''कनियाँ, अहाँ देखिअनु ता बच्चा सम्हारि दै छी।''

पेटपर हाथ दैते पलहनि बूझि गेली जे दोसर बच्चा हेतनि। बजलीह-

''काकी, एकटा बच्चा आरो हेतनि?''

पलहनिक बात सुनि, जहिना मेघ तड़कैत तहिना सुनयनाकेँ भेलनि। जोरसँ तपेसरकेँ कहलखिन-

''बौआ, बौआ।''

अकचका कऽ तपेसर बाजल-

''हँ, माए।''

''हँ, अंगनेमे रहह।''

करीब बीस मिनट पछाति बेटीक जन्म भेलनि। अखन धरि जहिना खुशीक सुगंध अंगनामे पसरल छल एकाएक ठमकि गेल। बच्चाक जन्म होइतहि सुशीलाक देह लर-तांगर भऽ गेलनि। पलहनि सुनयनाकेँ कहलनि-

''काकी, पुरबा लपटै छै। अगियासी नीक-नहाँति जगा देथुन ओना तँ सभ भगवानक हाथमे छन्हि मुदा जहाँ तलिक पार लागत से तँ करबे करबनि। जानिये कऽ तँ भगवान दुख बढ़ा देलखिनहेँ। ऐ -पहिल- बच्चापर ई नजरि राखथु ऐपर हम रखै छी।'' कहि बच्चाक पोछ-पाछ करए लगली। साँस मन्द देखि मुँहमे मुँह सटा फूकि साँसक गति ठीक केलनि। बच्चाक लक्षण देखि पलहनिक मन बाजि उठल। जरूर दुनू बच्चा ठहरबे करत। नजरि पछिला काजपर पड़ल। एहेन की पहिल-पहिल बेर भेल। कतेकोकेँ भेलनि। किछु गोटेक दुनू बँचलनि, किछु गोटेक एकटा बँचलनि आ किछु गोटे बच्चाक संग चलि गेलीह। ओना काज तँ अनिश्चित अछि मुदा अपना भरि तँ तिया-पछा करबे करबनि। सुशीलाकेँ सुनयना पुछलखिन-

''कनियाँ मन केहेन लगै-ए?''

अर्ध-चेत अवस्थामे सुशीला अपन टुटैत जिनगी हाथक इशारासँ कहलकनि। मुँहक सुरखी कहैत जे नै बँचब। सुशीलाक इशारासँ सुनयना बुझलनि जे तपेसर भारी विपत्तिमे पड़ि गेल। भगवानपर खींझ उठलनि। बेचारा फट्टो-फनमे पड़ि जाएत। हम बूढ़े भेलौं, जएह कएल हएत सएह ने सम्हारि देबै। मुदा विपत्ति तँ

ततबेटा नै ने छै। खेती-पथारी, माल-जाल, कुटुम-परिवार छै तइपरसँ दू-दूटा चिल्का भेलै। कना सम्हारि पाओत। ने स्त्री बँचतै आ ने एक्कोटा बच्चा। हमहूँ कते दिन जीब। सभ किछु बेचाराकेँ हरा जेतै। हे भगवान, तोरा केहेन दुरमतिया चढ़लह जे एहेन गनजन बेचाराकेँ केलहक।

आंगनमे बैसल तपेसरक मनमे उठैत जे जतेटा मोटरी माथपर उठत ततबे ने उठाएब। नमहर मोटरी कते काल कियो माथपर सम्हारि कऽ रखि सकैए। मुदा तँए की? जीत्ता जिनगी हारियो मानि लेब उचित नै। करैत-करैत-लड़ैत-लड़ैत जे हेतै से देखल जेतै।

जहिना रणभूमिमे दू दलक बीच लड़ाइ अंतिम दौड़मे अबिते दुनू दलक मन मानि लैत जे के जीतत के हारत। मुदा हरलोहोक बीच कते रंगक विचार उठैत। किछु गोटे रणभूमिसँ भागए चाहैत तँ किछु गोटे अढ़ भजिया नुकाए चाहैत। मुदा किछु एहनो होइत जे अपन बलि देखि स्वेच्छासँ अंतिम समए धरि हथियार उठौने रहैत अछि। कन्ना नै उठाओत? अपन जिनगीक संगी, जे कौआ-कुकुड़क पेट भरि अपन मनोरथ पूरा करत, आ हम गुलाम बनि दुश्मनक जहलमे सड़ब।

अपन अंतिम बात सुशीला पलहनियो, सासुओ आ पतियोकेँ कहलक-

"हम नै बँचब। दुनियाँक सभसँ पैघ पापी छी जे अपनो रच्छा नै कऽ सकलौं। दुनू बच्चाकेँ अहाँ सभ देखबै।" कहिते आँखि बन्न भऽ गेलनि। प्राण तँ बँचल रहनि मुदा चेतन-शुन्य भऽ गेलीह।

सुशीलाक बात सुनि पलहनि चमकि उठल। बाप रे! सभसँ बेसी भार अपने ऊपर आबि गेल। जन्मक पालनक भार....। अखन धरि जते ठीन काज केलौं, एहेन काजसँ भेँट कहाँ भेल! बूझल बात कम आ अनभुआर बेसी बजरत। जते अपना दिस तकैत जाइत तते चिन्ता बढ़ल जाइत। बच्चाकेँ दूध पिआएब जरूरी भऽ गेल। माइक तँ यएह गति छन्हि। हे भगवान कोनो उपाय धड़ाबह। मन पड़लै अपन बच्चा। अपनो तँ दूध होइते अछि तखन एते घबड़ेबाक कि जरूरति अछि। मुदा अपन दूध तँ छह मासक बकेन अछि। गजुरा तँ नै। एत्ते विचार करब तँ बच्चे मरि जाएत। हे भगवान जानिहह तूँ। मने मन कहि दुनू बच्चाकेँ दुनू छाती लगा दूध पिआबए लगली। बच्चाक चोभ देखि पलहनिक मन खुशीसँ नाचि उठलनि। ठानि लेलनि जे बच्चाकेँ मरऽ नै देब। आइये बकरी दूधक ओरियान करैले सेहो कहि दैत छियनि आ टेम-कुटेम अपनो चटा देबै। मुदा अपनो बच्चा तँ छबे मासक अछि। सात माससँ पहिने कना दालिक पानि चटेबै। फेर मातृत्व जगिते बुदबुदेलीह- 'ऐसँ पैघ काज ऐ धरतीपर हमरा लिये

की अछि? जँ दुनियाँ देखए बच्चा आएल हएत तँ जरूर देखत।

पुतोहुक बात सुनि सुनयना चेतनहीन हुअए लगलीह। कासक फूल जकाँ मन उड़ि-उड़ि बौराए लगलनि। बच्चाक मुँहपर नजरि पड़िते उपराग दैत भगवानकेँ मने-मन कहलनि-

''कोन जनमक कनारि ऐ बच्चासँ असुल रहल छह। ऐ निमू-धनक कोन दोख भेलै। जँ तोरा नै सोहेलह तँ पेटेमे किअए ने कनारि चुका लेलह। एहेन बच्चाक एहेन गंजन तोरे सन बुते हेतह।'' चहकैत करेजसँ द्रवित भऽ कुहरि उठलीह। एक तँ वेचारीक -पुतोहुक- ऊपर केहेन डाँग पड़ल जे अमूल्य कोखि उसरन भऽ गेलै, तइ संग बच्चा लटुआएल अछि। मुदा अपनो वंश तँ उसरने भऽ रहल अछि। थाकल-ठहिआएल जकाँ छातीपर पथरो रखि आँखि तकब मुदा तपेसर तँ से नै अछि। जुआन-जहान अछि, हो-न-हो कहीं बौड़ ने जाए। केकरा के देखत? जहिना धारक बहैत धारामे माथक मोटरी खुललासँ मोटरीक वस्तु छिड़िया पानिक संग भाँसए लगैत जइसँ किछु बिछेबो करैत आ किछु भँसियो जाइत तहिना सुनयनाक विचार किछु उड़िआइत किछु ठमकल छाती दहलाइत।

ओसारक खूँटा लगा बैसल तपेसरक मन मानि गेल जे चूक हमरोसँ भेल। आइ धरि जे देखैत एलौं वएह मनमे बैसि गेल। की रेडियो-अखबारक समाचार झुठे रहैत अछि जे दू-तीन-चारि धरि बच्चा मनुखकेँ होइत छै। जहिना परम्परासँ अबैत बेवहारकेँ बिनु सोच-विचार केनौ सभ लकीरक फकीर बनि लहास ढोइत अछि तहिना तँ केलौं। मुदा हाथक डोरा टुटने जहिना गुड्डी अकासमे उधिया जाइत तहिना ने तँ उधिया गेलौं। सोचैक, बुझैक बात छल जे एक बच्चाक लेल कते सेवाक जरूरति होएत, दू बच्चाक लेल कते....। से नै बूझि सकलौं। आइ जँ बूझल रहैत तँ एहेन दिन देखैक अवसर नै भेटैत। परिवार उजड़ि जाएत। वंश विलटि जाएत। मुदा जे चुकि गेलौं ओकर उपाइये कि? जहिना लटुआएल अड़िकंचनमे सुन्दर सुकोमल पेंपी निकलैत तहिना तपेसरक मनमे आशाक पेंपी उगल। धारक धाराक सिक्त मनमे उठलनि, जहिना एक दिस परिवार, वंशकेँ उजड़ैत-उपटैत देखै छी तहिना तँ भूत, वर्तमान आ भविष्य सेहो आँखिक सोझमे लहलहा रहल अछि। लहलहाइत परिवारकेँ देखि तपेसरक हृदए उफनि गेलनि। जहिना धारक धारा माने बेगमे टपै काल ओरिया कऽ पएर रखितौं थरथराएल पएर पिछड़ैत रहैत तहिना तपेसरक मन सेहो असथिर नै भऽ पिछड़ए लगलनि। मुदा जी-जाँति कऽ माटिपर पएर रोपिते मनमे उठलनि, माइयो जीविते छथि, अपनो छी, तइपरसँ दूटा दूधमुहाँ बच्चा सेहो ऐछये। तखन परिवार किअए उपटत? हँ, ई बात जरूर जे पुरुख-नारीक बीच बच्चाक लेल माए

भोजनक पहिल बखारी होइ छथि। मुदा युग धर्मो तँ कहैत अछि जे आजुक बच्चाक नसीबसँ माइक दूध कटि रहल अछि। तैयो तँ बच्चा जीविये जाइत अछि। तखन ई बच्चा किएक ने जीति?

सोगाएल तपेसरक मुँह देखि माए -सुनायना- बोल-भरोस देबा लए घरसँ निकलि आबि बजलीह-

''बच्चा, गाड़ीये पहिया जहाँति जीते जिनगी सुख-दुख अबैत रहैए। तइले सोगे केने की हेतह? भगवानक लीले अगम छन्हि। अखनी हम जीविते छी। हमरा अछैत तोरा कथीक दुख होइ-छह।''

सिमसल आँखि उठा तपेसर माइक मुँहपर देलनि। हवामे थरथराइत दीपक बाती जकाँ सुनयनाक छाती डोलैत। मुदा जहिना हवाक झोंककेँ सहन करैत दीप प्रज्वलित रहैत तहिना धैर्यक लौ सुनयनाक बोलसँ टपकल विचार सुनि तपेसरक मनक डोलैत जमीन थीर हुअए लगल। मनमे उठलनि, यएह माए पुरुख जानि अपन सहारा बुझैत छथि आ अखन सहारा बनि ठाढ़ छथि। कोढ़ीसँ -कलीसँ- फुलाइत फूल जकाँ तपेसरक मन फुलाए लगल। तहीकाल पलहनि मुँह उठा कऽ बाजलि-

''काकी, एतै आबथु।''

पलहनिक बात सुनि सुनयना तपेसरपर नजरि दौड़ा सोइरीघर दिस बढ़लीह। मनमे एलनि, ओना अन्हारघर साँपे-साँप रहैत मुदा हथोरियो थाहि कऽ तँ लोक अन्हारोमे जीविते अछि। सभ मिलि जँ लगि जाएब तँ बच्चा जरूर उठि कऽ ठाढ़ हेबे करत।

तपेसरक मनमे उठल, 'जाधरि साँस ता धरि आस।' अपना सभ बुते काज नै सम्हरत। डॉक्टरकेँ बजेबनि। मुदा लगमे तँ ओहो नहिये छथि। जँ रोगियेकेँ लऽ जाए चाहब सेहो भारिये अछि। एक तँ तेहेन सवारी सुबिधा नै दोसर तीन-तीनि गोरेकेँ लए जाएब। ओतबे नै, अपनो सभकेँ जाइये पड़त। एक दिस अब-तबक स्थिति दोसर दिस सवारीक ओरियान आ डॉक्टर ऐठाम पहुँचैत-पहुँचैत बँचती आकि नै। जहिना अमती काँट एक दिस छोड़बैत-छोड़बैत दोसर दिस पकड़ि लैत तहिना तपेसरक मन ओझरा गेल। कोनो सोझ बाट आँखिक सोझामे पड़बे नै करैत। बेकल मने उठि कऽ सोइरी घर पहुँचि माएकेँ कहलक-

''माए....।'' माइक पछाति कोनो शब्द मुँहसँ नै निकलल।
तपेसरक बेकल मन देखि पलहनि बाजलि-

''बौआ, एना मन छोट नै करू। जे करतूत अछि सएह ने अपना सभ करब। केकरो जान ते नै ने दऽ देबै। जखैनसँ दुनू बच्चाकेँ छाती चटौलिऐ

तखैन से कल परल अछि। सबसे पहिने दूधक ओरियान करू। अखन महीसि-गाइक दूध पचबैवला नै अछि, कतौसँ बकरी कीन आनू। ताबे केकरो बकरी दुहि कऽ लऽ आनू। एक तँ बकरियो सब तेहेन अछि जे अपनो बच्चा पालैक दूध नै होइ छै, मुदा जेकरा एकटा बच्चा हेतै ओहन कीन लिअ।''

अशौच दुआरे दुनू जौआँ भाए-बहिनक -धीरज आ घुरनीक- छठियार नै भेल। ने कियो सोइरी सठनिहारि आ ने केकरो मन कखनो थीर होइत जे नीक-अधलाक विचार करैत। ओना तीनूक- पलहनि, सुनयनया आ तपसीक- मन सदतिकाल बच्चेपर रहैत छलनि मुदा कखनो काल नेकरमसँ अकछि मने-मन सोचैत जे दुनूकेँ ऋृण असुलए भगवान पठौलनि। जते ओकर ऋृण बॉकी छै ओते तँ असुले कऽ जान छोड़त। मुदा लगले मन घुरि जाइत जे विधातो भाग-तकदीरकेँ नै बदलि सकैत छथि। जँ दुनू बच्चा एहि धरतीक सुख भोगऽ आएल हएत तँ नहियो सेवा-बरदासि करबै तैयो पानिक पाथर जकाँ जीवे करत। मुदा बच्चाक छोड़ि तीनूक-पलहनि, सुनयना आ तपसीक- अपन-अपन जिनगी आ दुनियाँ सेहो छलनि। पलहनिये बेचारी कि करितथि? एक तँ दस-दुआरी दोसर अपनो बाल-बच्चेदार परिवार तइ परसँ तड़िपीबा घरबला। धन्यवाद बूढ़ी सासुकेँ दिआनि जे सुखाएलो-टटाएल हड़डीपर ने कखनो हाथ-पएर कामै होइत आ ने मुँह सापुट लैत। अखनो वएह रूआव जे कते दिन जीवि तेकर कोन ठेकान। हजार कि लाख आ कि नहिये मरब तेकर कोन ठीक। मुदा साँपक मंत्र जकाँ भरि दिन सुगिया -पलहनि- सासुक नीक-अधला बात सुनैत रहैत मुदा कोनो बातक उतारा नै दैत। अपन सभ किछु बूझि सासु -झिंगुरी- मालिक जकाँ काजक समीक्षा सदतिकाल करैत रहैत जे कोन-काज केहेन उताहुल अछि। जेहेन जे काज उताहुल तइ काजकेँ दोसर काज छोड़ि करए लगैत तँए सुगिया सासुक बातो कथा सुनि चुप्पे रहैत। तँए कि झिंगुरी सदतिकाल पुतोहुपर गरमाइले रहैत छलीह। कन्ना रहितथि, जखन सुगिया कोनो अंगनाक पवनौट, कोनो तीमन-तरकारी वा सिदहा आनि आगूमे देथि वा बैसलोमे टाँग पसारि जँतऽ लगैत तखन वएह सासु ने असिरवाद दै छलखिन जे हमरो औरूदा भगवान तोरे देथुन। यएह ने परिवार छी जे सदतिकाल सुख-दुख, नीक-अधला, हँसैत-कनैत मस्तीमे चैनसँ चलैत रहए। झिंगुरियोक जिनगीमे तहिना भेल। एक्के सन्तानक -बेटा- पछाति विधवा भऽ गेलीह। अपना खेत-पथार तँ नै मुदा आधा गाम -भैयारीक हिस्सा- तँ खानदानी सम्पति छलैक। जइसँ खाइ-पीवैक कोन बात जे दू पाइ बेटोकेँ खाइ-पीबैले दैत रहलीह। भलेहीं बेटा नसेरी किअए ने भऽ गेलनि। कि अखनो धरि बेटाकेँ कहियो एकटा खढ़ उसकबए नै कहलनि। जँ माए-बाप अछैत बेटा सुख

नै केलक तँ माए-बापक मोले की? एहि बातकेँ गीरह बान्हि झिंगुरी कहियो बेटाकेँ कोनो भार अखन धरि नै देने। भलहिं बेटा सहलोले किअए ने भऽ जाए मुदा सिद्धान्तो तँ सिद्धान्त छी। ओकरो अपन महत छैक। भलहिं करी वा नै करी। जँ से महत नै छैक तँ बुधियार लोकक बेटा बुड़िबक कन्ना भऽ जाइत छैक।

दसदुआरी रहने सुगियाकेँ घरसँ बाहर एते काज करए पड़ैत जे दिन-राति रेजानिस-रेजानिस रहैत छलीह। साँझ-भोर, राति-दिन काज। केम्हरो जँत्ते-पीचैक समए तँ केम्हरो बिआउ करैक ताक। धन्यवाद सुगियेकेँ दी जे घिरनी जकाँ सदतिकाल नाचि काज सम्हारैत। तहूमे मइटुग्गर धीरज आ घुरनीक तँ सहजहि माइये छी। दूध पिऔनाइसँ लऽ कऽ जाँति-पीचि देह-हाथ सोझ करऽ पड़ैत। दसदुआरी रहने दस दिस सेहो आँखि-कान ठाढ़ रखै पड़ैत। जिनगीक काज सुगियाकेँ एहि रूपे पकड़ि नेने जे दोसर दिस तकै नै दैत। मन कहैत जेकरा अपन माए जीवैत छैक ओरत होइक नाते अपन चिलकाकेँ अपनो सम्हारि सकैए मुदा ऐ दुनू -धीरज आ घुरनी- केँ दुनियाँमे के देखनिहार छैक? हमरा हाथे जन्म भेल छै, जँ पैतपाल नै करवै ते एकर प्रतिवाए केकरा हेतै। भगवानक घरमे दोखी के हेतै। वेचारी दादी सुनयना छथिन मुदा ऐ उमेरमे दूध तँ नै छन्हि। सोलाहो आना बकरिये दूधपर तँ दूधकट्टू भइये जाएत। जे बच्चा दूधकट्टू भऽ जाएत ओकर छाती कहियो सक्कत हेतै। खेने-बिनु खेने सुगिया भरि दिन ओइ जंगली जानवर जकाँ नचैत जे बच्चाकेँ दूध पिआ, गर लगा सुता चरौर करए जाइत, तहिना।

अधवयसू सुनयना अपन राजा बेटा तपसीक दुखक बोझ देखि दिन-राति ओइ बोझकेँ हल्लुक बनबए लेल एकबट्ट करैत रहैछ। जहिना युद्धभूमिमे अपन राजापर दुश्मनक अबैत तीर देखि सेनापति उपयुक्त तीर तरकससँ निकालि दुश्मनक तीरकेँ रोकैक प्रयास अंतिम साँस धरि करैत तहिना सुनयना तपसीपर अबैत तीर- 'भगवान केहेन डाँग मारलखिन जे जे जइ काजक लूरि पुरुखक हिस्सामे देबे ने केलखिन ओइ फाँकमे फँसा देलखिन। कोशिकन्हाक खेत जकाँ आड़ि-धूर मेटा बालुसँ भरि देलखिन। स्त्रीगण होइत हमहूँ तँ स्त्रीगणक सभ काज -बच्चाकेँ दूध पिआएब- नहिये सम्हारि सकब। जँ एहेन फाँसे लगवैक छलनि तँ आरो नमहर लगा दुनू बच्चोकेँ माइये संगे नेने जइतथि। पुरुखक -बेटा- देह तँ खाली रहितै। मन होइतै चिड़ैक खोंता जकाँ परिवार बना रहैत नै मन होइतै लौका-तुम्मा लऽ दुनियाँमे घूमि-फीड़ि जीबैत। जाधरि हम जीबै छी ताधरि माइक ममता पकड़ि रखितै। मुदा तहू बीच जँ पत्नीक सिनेह बेटा-बेटीक सोह जगितै तखनो तँ मन बौरेबे करितै! अनायास सुनायनाक मनमे उठलनि

माया-मोहक लत्ती जते दूर धरि चतरै-ए ओते दूर धरि मनुख तँ नै चतरत। मनुखक तँ बाढ़ि छैक। तइ बीच हम तपसियाक माए भेलिऐ, जते धरि कएल हएत ततबे ने करबै। आकि ओकरा दुखसँ दुखी भऽ अथबल बनि बैसि कऽ कानब। माइक काज जते दूर धरि छै ओइमे कलछप्पन नै करबै। परिवारे केकर छी केकरो नै छी? तखन तँ मनुख रहत घरेमे। खाएत अन्ने, पीति पानिये। जाबे जीबै छी ताबे बुझै छी जे सभ किछु छी आँखि मूनि देबै अन्हारमे हरा जाएब। फेर मन घुरलनि हमरा अछैत बेटाक आँखिक नोर देखब हाड़-चामक मनुखकेँ सहल जाएत? ओ तँ पाथरक नै छी जे कतौ पड़ल रहत। मनुखकेँ तँ चलै-फिरै, सोचै-विचारै, बुझै-सुझैक बखारी छै ओ तँ देखिये-सुनि कऽ चलत। दुनियाँ बेइमान भऽ जाएत भऽ जाए मुदा जहिना तपसीक माए छिऐ तहिना तपसी देखत। ओकरा मनमे कहियो ई नै उपकए देबै जे दुनियाँक संग माइयो पएर पाछू केलक। ताधरि तपसीक परिवारकेँ पकड़ि सम्हारने रहबै जाधरि बेकाबू नै भऽ जाएत। भगवान केलखिन आ दुनू पिलुआ उठि कऽ ठाढ़ भेल तँ जरूर परिवार फड़त-फुलाएत। अखन बेकाबू कहाँ भेलहें? अखन तँ सम्हारैबला अछि। माटिक तरमे सजमनि झिंगुनीक बीआ गारि दै छिऐ, समए पाबि जहिना ओ जनमि कऽ ऊपर आबि धरतीसँ आसमान धरि लतरि जाइत अछि मुदा ई तँ -दुनू बच्चा- माटिक ऊपर अछि। जँ समुचित सेवा भऽ जाए तँ जरूर कलैश कऽ गाछ बनत। आशा-निराशाक बीच सुनयनाक मन वृन्दावनक कदमक गाछपर झुलैत राधा-कृष्ण जकाँ झुलए लगलनि। ने अक चलनि ने बक। आँखि निहारि दुनियाँ दिशि देखए लगलीह। दू-पत्ती, चारि-पत्ती सजमनि-झिंगुनीक गाछक, जे लत्तीक आशा अपनाकेँ ठाढ़ रखैत, चारू भाग जहिना छोट-छोट कड़चीक टुकड़ी गारि ओकर रक्षा, लगौनिहार करैत तहिना सुनयना फुड़फुड़ा कऽ उठि बड़बड़ेलीह-

"अनेर गाएक धरम रखबार।" मुँहसँ अनायास हँसी निकललनि।

पितृ-प्रमुख परिवारमे पिताक परोछ भेलापर ताधरि मातृ-प्रधान परिवार बनल रहैत जाधरि पुत्र पितातुल्य नै बनि जाइत। ओहुना किछु काजमे मातृत्वे प्रमुख परिवार रहैछ। एक तँ ओहिना बच्चाक पालन मातृ पक्षक काज बूझल जाइत तइपर सँ अखन धरि तपसी माइयेक आदेशक पालन करैत अबैत, तँए धैन-सन। मुदा तैयो टुटैत परिवार आ नव उलझन देखि मन ओझराए लगलनि। एते दिन खेती-पथारी करै छलौं, दिन-राति ओहीमे लागल रहै छलौं। आब तँ से नै हएत। एक तँ दिनोदिन माइक हूबा सेहो घटत दोसर बच्चा सभले बकरीसँ गाए धरि पोसए पड़त। ओहिना थोड़े हएत। कहुना करबै तँ खुऐनाइ-पीऐनाइ, दुहनाइ-

गारनाइसँ लऽ कऽ ओगरवाहि धरि करए पड़त। खूँटापर छोड़ि कऽ कतौ जाएबो मसकिल हएत। कुत्ता-बिलाइसँ लऽ कऽ साँढ़-बत्तू धरि उपद्रव करत। ओह से नै तँ खेत बटाइ लगा देब। जँ से नै करब तँ नै सम्हरत।

छह मासमे छह दिन कम। बच्चाकेँ जँतै-पीचैक समए होइते पहलनि -सुगिया- हाँइ-हाँइ गाएक नाइदमे सानी-कुट्टी लगा विदा भेली। डेढ़िया टपिते वामा भागसँ दहिना भाग बिलाइकेँ टपैत देखलनि। मनमे सगुन अप-सगुन हुअए लगलनि। जँ दहिनासँ वामा भाग जाइत तखन ने अपसगुन होइत मुदा से तँ नै वामासँ दहिना टपल। सगुन बूझिते खुशी उपकलनि। मुदा लगले फेर तर्कक संग विर्तक, अतितर्क, अतिवितर्क हुअए लगलनि। मन औनाए गेलनि। पुरुखक कहब ने छियनि जे वामसँ दहिन टपने सगुन होइत मुदा पुरुखक दहिन स्त्रीगणक वाम होइत आ वाम दहिन। प्रश्नक उत्तर नै पाबि मन ठमकि गेलनि। मुदा लगले सोचलनि- अनजान-सुनजान महाकल्याण। जे पूत हरबाही गेल, देव-पितर सभसँ गेल। अनेरे कोन ओझरीमे ओझराएल छी। जानि कऽ रोग बेसाहि लेब तँ दोख ककर हएत। मन हल्लुक भेलनि। मन हल्लुक होइतै दुनू बच्चा धीरज आ घुरनीपर नजरि बढ़लनि। दुनूक जन्मक दिन गनए लगलीह। वरस्पति दिन पूस मास। आंगुरपर गनैत-गनैत पाँच मास चौबीस दिन पुरलनि। छह मासमे छह दिन कम। हिसाब जोड़िते मन मधुआ गेलनि। अकास-पतालक बीच हृदए नॉचए-गाबए लगलनि। एक दिन बीतने तँ उनतीस माघ हरा जाइत आ छह मासमे तँ छबे दिन कम रहलहँ। सकताइत-सकताइत बच्चा छहमसुआ भऽ गेल। माइयोक पेटमे जे छह माससँ कम रहैए ओकर आँखि नै फुटैत अछि मुदा छह मास पुरलापर जे जनमैत अछि ओ तँ भगवतीक बेलक आँखि सन आँखि नेनहि अबैत अछि। छबे दिन ने कम छै आँखिक गुणक सिरखार तँ आबिये गेल हेतै। कोढ़ी -कली- फूल जकाँ पत्ती सभ जरूर निकलि गेल हेतै। अधखिल्लू फूल जकाँ सुगियाक मन हर्ष-विषादक बीच पड़ि गेलनि। पीपरक पात जकाँ सदतिकाल डोलैबला नै बड़क पात जकाँ भऽ गेलनि। ऐ दुनू बच्चाक माए तँ हमहीं भेलिऐ किने। अपन दादी -सुनयना- तँ पकले आम जकाँ छथिन। मुदा तैयो धैनवाद हुनके दियनि जे घर-अंगनाक काजक संग दुनू बच्चोकेँ सम्हारैत छथि। ओना भैयो -तपेसरो- अपन पुरुखपना काज -खेती-पथारी- छोड़ि अंगने-घरक काजमे भरि दिन लगल रहै छथि। ई तँ ओही बेचारेकेँ धैनवाद दियनि जे एहेन दूधमुहाँ बच्चाकेँ पोसि-पालि रहल छथि। दस दुआरी रहितो की कम करै छियनि। मन शान्त भऽ गेलनि। नजरि भगवान दिस बढ़लनि। भगवान दिस नजरि बढ़िते तामस लहरए लगलनि। कहैले भगवान छथि। सभपर एक्के रंग

नजरि रखै छथि मुदा वएह कहथु जे केकरो-केकरो तते दै छथिन जे तौला-कराही घिनाइ छै आ केकरो-केकरो चुट्टियाह बँसबाड़ि जकाँ ओधि धरि कोकैन कऽ उपटि जाइ छै। जुगो तेहेन भऽ गेल जे जेहने पुरुखक किरदानी देखै छी तेहने मौगीक। जीबैयोबला बेटा-बेटीकेँ कियो मोड़ीमे फेकैए तँ कियो नून चटबैए। फेर लगले मन अपना परिवार दिस घुरि नसेरी पतिपर पड़लनि। पतिपर नजरि पड़िते सासु-ससुरपर खौंज उठलनि। बुदबुदेली-

“बेटाकेँ बिगाड़ैमे जहिना बुढ़ियाक -सासु- किरदानी भेलनि तहिना बुढ़वाक। गाजाक गुल सुनगबैत-सुनगबैत बेटो अपने जकाँ गजेरी भऽ गेलनि। असकरे की करब? घरसँ लऽ कऽ बाहर धरि खटैत-खटैत देह अकड़ि जाइए।”

तपेसर ऐठाम पहुँचिते सुनयनाकेँ बच्चा लग बैसल देखलनि। बाटक सभ बात बिसरि मुस्कुराइत बजली-

“काकी, छह मास पुरैमे छबे दिन कम छन्हि। आब दुनू दुनियाँ देखबे करतनि।”

पलहनिक बात सुनि जहिना सुनयना अपन सभ किछु बिसरि बच्चाकेँ हृदैमे समा लेलनि तहिना तपेसर रोपल गाछीक फड़ देखि विस्मित भऽ गेला। मनमे आनन्दक हिलोर उठि गेलनि। दुनूक -सुनयनो आ तपेसरो- मनमे सबुरक गाछ जनमि गेलनि।

अखन धरि सुनयना पलहनिपर जते ओँगठल छलीह ओइमे कमी करैक एहसास भेलनि। छह मसुआ बच्चा भऽ गेल। दूधक संग अन्नो चाटत। दालिक झोर बना खुआएब। मुदा लगले मनमे उठलनि जे दालियो तँ कते रंगक होइ छै। सभ एक्के रंग थोड़े होइ छै। कोनो गलनमा -सुपाच्य- होइ छै तँ कोनो गरिष्ट। सबहक अपन-अपन चालि-ढालि -गुन-धर्म- होइ छै। मन औना गेलनि। औनाइत-औनाइत मन खेरही दालिपर गेलनि। जेहने आकार तेहने गलनमा। अखन की कोनो रोटीपर लठगर खुआएब। पलहनिकेँ कहलखिन-

“कनियाँ, सभसँ नीक खेरहिये दालि हएत?”

“हँ। जेना-जेना देह सकताइत जेतै तेना-तेना खोराको बढ़बैत जैहऽथिन। आब अपनोसँ ओरिया-ओरिया जतबो-पिचबो करिहथिन आ तेलो-कुर दिहएथिन।”

पलहनिक सभ बात सुनायना सुनबो नै केलनि आकि बीचहिमे मन उड़ि कऽ तपेसरक जिनगीपर चलि गेलनि। बेचाराकेँ दुनियाँक कोनो सुख नै भेल। पाँचो बर्ख कनियाँ संग नै रहल। कोन जनमक पाप बिषेलै से नै जानि। फेर मन उनटि अपनो दुनू परानीपर गेलनि। माइयौ-बापक कएल नीक-अधला काजक फल बेटा-बेटीकेँ पड़ैत छैक। जेना-जेना विचार उठनि तेना-तेना मुँहक सुर्खी

क्षीण -उदास- होइत जानि। कहीं हमरे सबहक -माए-बापक- कएल पाप ने तँ बेचाराक ऊपर डिरिआइ छै। फेर मन आगू बढ़ि समाज दिस बढ़लनि। एहेन बेर-बिपति की तपेसरेपर पड़ल अछि आकि आनो-आनकें पड़लै।

सोगमे पड़ल तपेसरक मन अपन गिरैत परिवारपर अँटकल। जते उपजा-बाड़ी होइ छलाए बटाइ लगौने दूधक डारही होइए। एक तँ समैक कोनो ठेकान नै तइपर लोढ़ि-बीछि कऽ सेहो लैये जाइत अछि। मगर खरचा तँ बढ़िये गेल। अपनो काज उद्यम छोड़ि भरि दिन अंगने-घरक काजमे लटपटाइत रहै छी। छोड़ियो कन्ना देबै? कोनो कि भेड़ी-बकरीक बच्चा छी जे पेटसँ निकलल आ कुदए-फानए लगल। मनुक्खक बच्चा तँ ताड़क गाछ जकाँ होइत अछि। जकर जड़िये बन्हैमे कतेक समए लगैत अछि। ई भिन्न बात जे वोनमे जइठाम ताड़क गाछ ने दोसरकें रोकैत अछि तइठाम आ ने अपने रूकैत अछि।

भक्क टुटिते सुनयना पहलनिकें पुछलनि-

''कनियाँ, की कहलिऐ से नै बुझलौं?''

पहलनि- ''यएह कहलियनि जे आब अपनो सभ काज सम्हारि सकै छथि।''

सभ काज सुनि सुनयनाक मनमे परिवार नाचि उठलनि। सोचए लगलीह जे जखन परिवारमे लोकेक बाढ़ि ठमकि गेल तखन धने-सम्पति लऽ कऽ की हएत? पुन: विचार घुरलनि। जँ भगवान दुनूक औरूदा देथिन तँ धन-सम्पति कमा लेत। कमाइक बात मनमे उठिते अपन काज दिस नजरि बढ़लनि। विसवास जगलनि जे जखन पिलुआ सन दुनू छल तखन तँ पालि लेलौं। आब तँ सहजे छह मसुआ भऽ गेल। हमरा अछैते बेटा -तपेसर- कानै ई केहेन हएत। पुन: मनमे उठलनि, अपने पुरना साड़ीक विसटी पोताकें बना देब आ पोतीकें घघरियो सीबि देब। उमेरे बेसी भऽ गेल तँए की। जाबे देहमे हूबा अछि ताबे तँ खटबे करब जहन हूबा टूटि जाएत तहन बूझल जेतै। तँए की बेटाकें कानए देब। दुनियाँमे कियो ओकर नोर पोछैबला नै छै? जँ नै छै तँ सुगिये -पलहनिये- किअए एते करै छै। ओकरा हमरा परिवारसँ कोन मतलब छै। मुदा छै। जेकरामे प्रेम छै ओकरे दुनियाँमे सभ छै।

दुनू बच्चाकें जाँति पलहनि बाजलि-

''आब जँ बकरीक दूध नहियो हेतनि तँ गाइयोक दूधसँ काज चलि जेतनि। आब ओछाइनपर बच्चा अपनो उनटै-पुनटैले जोर करतनि। आस्तेसँ कर घुमा दिहऽथिन ओना बेर-कुबेर हमहूँ अबिते रहब। भैयाकें कहि दथुन जे काल्हि पटोर पहिरि अंगनासँ निकलबनि।।''

चिन्तामे डुमल तपेसर अपनो सोचै आ दुनू गोटेक -माए आ पलहनि- गपो-

सप्प सुनै। ओना किसानी बुइध तपेसरकेँ तँए जत्ते मन काज दिस दौड़ैत ओते गप-सप्प दिस नै। अखन धरिक जे जिनगी रहलनि ओइमे एकाएक मोड़ एलनि। १०८दानाक तुलसीमालाक जप जकाँ तपेसरक दिन-राति अपन घर-गिरहस्तीक काजक बीच बीत जाइत। ओना जहिना मनक बिसवासकेँ आँखि नै झुठला सकैत तहिना तपेसरक हृदैमे माए आ पलहनि, चौपड़ि मारि बैसलि। तँए चिन्ता ओते नै जते हेबाक चाहियनि।

दुनू बच्चाकेँ जाँति पलहनि हाथ-पएर सोझ कऽ टाँग पकड़ि उल्टा झुला चानिमे काजरक टीक्का लगा मुस्की दैत सुनयनाकेँ कहलखिन-

''काकी, भैयाकेँ बिआह करा दिअनु?''

बिआह सुनि सुनयना सुख-दुखक -नीक-अधलाक- बीचक सरोवरमे पैसि सोचए लगलीह। हमरे आशा कते दिन हेतै। चौथापनमे पहुँचि गेल छी, जते दिन जीबै छी जीबै छी। मुदा ओकर -तपेसरक- जिनगी तँ से नै छै। अखन ओकरा की भेलहेँ। बच्चाक कोन ठेकान अछि। जुआनो-जहान चलि जाइए। एक तँ मनुक्खे माटिक काँच बरतन छी तइपर ओ -दुनू बच्चा- तँ आरो गिलगर माटि जकाँ अछि। नीक जकाँ सुखबो ने कएल अछि। एक रती कोनो चीजक टोना लगतै टन दे चलि जएत। मुदा परिवार तँ पुरुख-नारीक संयोगसँ चलैत अछि। जाबे दुनूक संयोग नै हएत ताबे दुनियाँ -सृष्टि- आगू मुँहे कन्ना ससरत? बातकेँ टारैत सुनयना बजलीह-

''कनियाँ, कहलौं तँ नीके बात मुदा साल भरिक बीच कन्ना एहेन गप करब।''

सुगियाक बात तपेसरो सुनने। तरे-तर मन बजैले ओढ़ मारैत मुदा बुइध रोकैत। कतबो बुइध रोकलक तैयो बजा गेलै-

''कनियाँ, अहूँ नीकेले कहलौं, कटै नै छी मुदा जँ दुनू बच्चा उठि कऽ ठाढ़ हएत आ दुनियाँ दिस डेग बढ़ौत तखने, एक तँ ओकरा मइटुग्गर बूझि कियो अपन बेटा-बेटीकेँ ऐ घर आबै ने दैत तैपर जँ दोसर बिआह कऽ लेब तखन तँ आरो कियो अपना बेटा-बेटीकेँ सतमाए लग आबए नै दिअए चाहत।''

तपेसरक बात सुनि पलहनि बजलीह-

''भैया, हिनका सन-सन समाजमे कते पुरुख छथि। समाजो तँ एकरा अधला नै बूझि उठा लेने अछि। रास्ता बना देने अछि तखन किअए एना बजै छथि।''

सुगियाक बात सुनि जहिना तपेसरक मुँह बन्न भऽ गेलनि तहिना सुनयनाक। मने-मन सुनयना सोचए लगली, कोनो नवकनियाँ -जेकरा दुनियाँ दारीक थोड़

ज्ञान छै- परिवारमे सासु-ससुर, पति, भैसुर-दिओर, ननदिक बीच अबैत। ओकरा काँच कड़ची जकाँ जइ रूपे लीबा कऽ बनौल जाइत ओइ रूपक बनैत। किअए लोक सतमाएकँ दोख लगबैए। ओहो तँ मनुक्खे छी। जँ ओकरा मनुक्खक रास्ता छोड़ा देब तँ ओ मनुक्ख बनत कन्ना? मुदा किछु मनुक्खो तँ ओहन होइत जे जेरमे रहए नै चाहैत? हँ मुदा ओहन सतमाइये टा तँ नै होइए, आनो-आन होइए।''

सुनयनाक मन ओझरा गेलनि, तँए चुप भऽ गेली।

तपेसरक मनमे उठलनि जिनगी की? जँ जीबैले जिनगी तँ जीबैक लेल अनेको तरहक साधनक जरूरति सेहो होइत। परिवारिक जिनगीक लेल पुरुख-नारी दुनूक जरूरति होइत अछि। जँ से नै हएत तँ परिवार कते दिन परिवारक रूपमे ठाढ़ रहत। अखन बूढ़ि माइक आशापर दुनू बच्चा जीब रहल अछि जखनकि हुनको -माइयो- भानस-भात करए, सेवा-टहल करए लेल टहलूक जरूरति छन्हि। जँ ओहो मरि जेती तखन अपनो-सभकँ के भानस कऽ खुऔत। अपने खाइक ओरियान करब आकि भानस करब। जँ भानसे नै हएत तँ खाएब केना? जँ खाएब नै तँ जीब केना? जँ मनुक्खे नै जीवित रहत तँ परिवार केना बनल रहत? मुदा मनुष्यो तँ अजीव होइत अछि। कियो अपन घरमे लागल आगि मिझबै पाछू अपनो जरि-पकि जाइत तँ कियो हँसि-हँसि घरमे आगि लगबैत अछि। मुदा अपना ऐठाम तँ से नै अछि। अनजानमे भलहिं जे भऽ गेल हुअए मुदा जानि कऽ तँ किछु नै भेल। पलहनिक विचार तँ अधला नहिये छन्हि। ओहो बेचारी दुनू बच्चाक मुँहे देखि बजलीह। अपन जानि बजलीह। हुनको मनमे कहाँ छलनि जे दोसर स्त्री कुल्टे हेतनि। सुपात्रो भऽ सकैए। खाएर जे हौ, मुदा परिवारमे जरूरति तँ जरूर अछि। भलहिं अखन माए सम्हारि रहली अछि मुदा परोछ भेलापर -मुइलापर- तँ जरूरति हेबे करत। फेर मनमे उठलनि जँ कहीं माइयक सोझेमे बेटी भानस-भास करै जोकर भऽ जाएत तखन......। बिआह भेलापर ओहो सासुर जाएत। ताधरि पुतोहुओ तँ हएत।

साल लगि गेल। ऐबेर अदरा पावनि रीब-रीबेमे रहि गेल। माघमे तेहेन मारूख हवा चलल रहै जे एकोटा आमक गाछ मोजरबे ने कएल। धिया-पुताक कोन गप जे सियानो सभ आमक मास बुझबे ने केलक। जहिना बिना बरक बरियाती नै होइत तहिना बिना आमक आद्रा पावनिये की? पुरुखे रहने ने मौगी गिरथानि बनैत, बिना पुरुखे तँ राँड़-मसोमात कहबैत। अंतिम जेठमे मौनसुनी तँ नै बिहड़िया बरखा भेल। बरखा भेने धरतीक रंगे बदलि गेल। आन साल जकाँ ने बेसी गरमी पड़ल आ ने बाध-वोनक रूप बिगड़ल। हरिअर घाससँ बाध सुग्गा

पाँखिक साड़ी पहिरल जकाँ सुन्दर लगैत। अगता हाल भेने पूबरिया घरक पछुआरक दाबापरक गेनहारी सागक गाछ सुनयनाक जनमि गेलनि। बीसे दिनमे आंगुर भरि-भरिक भऽ गेल। कनौजरि छोड़े जोग भऽ गेल। काल्हिये बीरार देखि सुनयना विचारि लेलनि जे काल्हि एकरा -सागकेँ- रोपि लेब। अखन रोपलासँ पाँच दिन पछुएबे ने करत मुदा कनौजरि तँ ठीक रहत। तहूमे पछबा थोड़े बहैत अछि जे रोपलापर एकोटा लटुआएत। दुनू साँझ पानि देबै लगले लगि जाएत। कनी-मनी रौदमे अलिसाएत तँ सेहो रातिक ठंढमे उठि कऽ ठाढ़ भऽ जाएत। जँ अखन नै रोपि लेब तँ भदबारिमे तीमनक दिक्कत हएत। फेर मनमे उठलनि भदबारिक साग! तत्-मत् करिते रहथि आकि मनमे उठलनि पोरो-पटुआ साग ने भदबारिमे कफाह होइ छै सभ साग थोड़े होइ छै। जहिना जाड़मे सेरसो-तोड़ी झँसगर होइए, चैत-बैसाखमे पोरो-पटुआ तहिना ने भदबारिमे गेनहारी-ठढ़िया होइए। मनमे खुशी भेलनि। मनमे चमकलनि गेनहारीक रूप। हरिअर साड़ीसँ सज्जित पात, तहिक बीच लाल डॉटक पाढ़ि, धरतीपर ओलरि मस्तीक आँखिसँ दुनियाँ दिस देखैत। अपन जिनगी दोसराक सेवा लेल अरोपि बेर-बेर मुड़ी कटला बादो पुन: मुड़ी पैदा कऽ सेवा लेल इशारा करैत।

जहिना मुरगी चूजाक संग खोपसँ निकलि ओचाओन बाड़ी-झाड़ीमे चराओर करैत, बोलियो सीखैत आ दुनियोँ देखए जाइत तहिना दुनू बच्चा धीरज-घुरनीक संग सुनयना लोटामे पानि नेने पछुआर दिस विदा भेली। दावा लग पहुँचि ठाढ़ भऽ गेनहारीक बीरार देखिते मन पड़लनि भीतमे साटि कऽ राखल गुरमीक बीआ। आँखि उठा कऽ देखलनि तँ चक-चक करैत बीआ। बीआ देखि मन पड़लनि जे गुरमियो रोपैक समए आबि गेल। मारे बीआ अछि, एते थोड़े अपने रोपब। अनको देबै। गुरमी मनमे रहबे करन्हि आकि दुनू बच्चा दिस तकलनि। गुरमीक कोमलता मनमे अबिते मुँहसँ अनायास निकललनि-

“बौआ, आइ साग रोपि दै छी काल्हि गुरमियो रोपि देब।”

दादीक बात सुनि धीरज बाजल-

“कोन गुलमी?”

भीतमे साटल गुरमीक बीआ आंगुरसँ देखबैत सुनयना बजलीह-

“ओ बीआ गुरमीक छी। जहिना अहाँ दुनू भाए-बहिन बच्चा छी तहिना ओहो बीआ छी। ओकरा खुरपीसँ माटिकेँ खुनि रोपि देबै। पाँच-छह दिनमे गाछ जनमि जाएत। जहिना अहाँ दुनू गोरे हमरा एतेटा हएब तहिना ओहो बढ़ि कऽ फड़ए लगत।”

दादीक बात सुनि घुरनी ठुनकैत बाजलि-

“गुरमी लेब। गुरमी लेब।”

घुरनीक ठुनकबपर धियान नै दऽ सुनयना लोटाक पानि सागक गाछपर छीटिलनि। पानि छीटैत देखि घुरनियो चुप भऽ गेल। लोटा रखि गाछ निहारि कऽ देखलनि तँ बूझि पड़लनि जे एक दिससँ उखाड़ैबला सभ गाछ नै अछि। से नै तँ छोटकाकेँ बैराए बड़का उखारब। चारि दिनक बाद छोटको रोपाउ भऽ जाएत। फेर मन पड़लनि जे एक डेढ़ धूर करीबमे रोपब। चारि-पाँच डेग पूबे-पछिमे आ चारि-पाँच डेग उत्तरे-दछिने। एक-एक बीतपर रोपब। मने-मन हिसाब जोड़ि बीआपर नजरि दैते बूझि पड़लनि जे चारियो हिससँ कम्मे गाछ लगत। खाएर, भगवान सभ चीज एहिना देथुन जे अपनो खाए आ दोसरोकेँ दिऐ।

निहुरि कऽ सागक गाछ उखाड़ए लगली। तइ बीच दुनू भाए-बहिन -धीरज-घुरनी- एक्के गाछपर हाथ दऽ उखाड़ए चाहलक। एक-दोसराक हाथ-हटबैक कोशिश दुनू करए चाहलक। हाथ पकड़ि दुनू कटाओज करए लगल। दुनूक कटाओज नै छोड़ा सुनयना हाँइ-हाँइ छैँटगरहा गाछ उखाड़ि कहलखिन-

“चलै चलू। भऽ गेल।”

आगू-आगू दुनू बच्चा आ पाछू-पाछू सुनयना आंगन एली। आंगन आबि बाटीक पानिमे गाछक जड़ि धोय बाटियेमे रखि देलखिन। रोपाउ जगहपर जनमल घासकेँ उखाड़ि कातमे फेक ओसारक चारसँ खुरपी उतारि बीत-बीत भरिपर छअ मारि-मारि दड़ी बनबए लगली। गोर दसेक दड़ी बनैबते दुनू भाए-बहिन हाथसँ खुरपी छीनए लगलनि। काजकेँ बाधिक होइत देखि सुनयना दुनू बच्चाक हाथ छोड़ा, बीच आंगनमे खुरपी फेक देलनि। शंका रहनि जे खुरपी ने लागि जाइ। दुनू बच्चा खुरपी आनए दौगल तइ बीच ओ बाटीसँ गाछ निकालि हाँइ-हाँइ रोपए लगली। दुनू बच्चा खुरपी पकड़ि फेर छीना-छीनी करए लगल। हाथमे खुरपी लगैक डर फेर भेलनि। दसो दड़ी रोपि बाल्टी लऽ पानि आनए कल दिस विदा भेली। दुनू बच्चा खुरपी छोड़ि पाछू-पाछू दौगलनि। पानि आनि लोटासँ रोपलाहा गाछमे पानि दिअए लगली। फेर दुनू लोटा छीनए लगलनि। हाँइ-हाँइ पटा लोटा दऽ देलखिन। फेर दुनू लोटा छीना-छीनी करए लगल। तइ बीच खुरपी आनि फेर दड़ी खुनए लगली। दुनू बच्चा बौआऽ गेल। खुरपी लऽ दड़ी खुनब कि रोपब आकि पटाएब।

अढ़ाइ बर्ख बीत गेल। दुनू भाए-बहिन दादियो आ पितोसँ बाजब सीख लेलक। दुनूक बोलो फरिछा गेल। सुपुट बोल निकलए लगल। पियास लगलापर पानि आ भूख लगलापर भात-रोटी बजए लगल। बजरूआ बच्चा जकाँ मोबाइलसँ गप, छुड़ी, पिस्तौलक खेलौना, आ छुड़छुड़ी फटाका फोड़ब नै बुझैत मुदा तैयो

गमैआ बच्चाक जिनगी जरूर जीबऽ लगल। गाम-घरमे जे गति विधवाक, निस्सहायक होइत से गति मइटुग्गर धीरज आ घुरनीक परिवारमे नै छलैक। गाम-घरमे गरीब मइटुग्गर, बपटुग्गरक प्रति सियानोक नजरि विषैला होइत। विधवाकेँ डाइनक संग अशुभ बूझल जाइत तहिना दुखताहसँ घृणा आ मइटुग्गर-बपटुग्गरसँ सेहो कएल जाइत अछि।

पानिक बाल्टीन नेनहि सुनयना कलपर पिछड़ि खसि पड़लीह। ओना देहमे चोट लगलनि मुदा माथ उठले रहि गेलनि। ईंटा चोटसँ दहिना गट्टा टूटि गेलनि। तत्काल चोट तँ तेहेन नै बूझि पड़लनि मुदा गट्टा फुलब शुरू भऽ गेलनि। तपेसर बाँसक पात आनए गेल रहए। ओसारपर ओछाइन खसा एक्के हाथे सुनयना ओछा पड़ि रहली। ओछाइनेपर दुनू बच्चा बगलमे बैसल। पात लऽ कऽ अबिते माएकेँ सुतल देखि तपेसर पुछल-

''माए, सुतल किअए....?''

नोर पोछि सुनयना उत्तर देलनि-

''बौआ, कलपर खसि पड़लौं।''

खसैक नाओं सुनि तपेसर चमकि कऽ बाजल-

''चोटो-तोटो लगलौं?''

''ईंटापर कनी चोट लगि गेल।''

लग आबि तपेसर गट्टाकेँ फुलल देखि गुम भऽ गेल। फुलबक हिसाबसँ भरिसक टूटि गेलै। मन चनकि करेज दरकि गेलनि। मनकेँ थीर करैत बाजल-

''डॉक्टरकेँ बजौने अबै छियनि। दवाइ देथुन नीक भऽ जेमे।'' कहि कलपर पहुँचि हाथ-पएर धोय, अंगा पहिर तपेसर विदा भेल। आंगनसँ निकलिते मनमे उठलनि जहाँ धरि पार लागत तहाँ धरि तँ करबे करबनि। जखन जिनगियेक कोनो ठेकान नै अछि, कखन कि भऽ जाएत तेकर कोन ठीक। अपने बाँसपर चढ़ै छी जँ ओतैसँ खसि पड़ी तखन कि हएत? चिन्ता बढ़ए लगलनि।
डॉक्टर संग आबि तपेसर माएकेँ कहलनि-

''माए, जेना जे भेलौ से सभटा बात डॉक्टर सहाएबकेँ कहुन।''

सुनयनाक बात सुनि डॉक्टर पलस्तर कऽ देलखिन। फीस लऽ चलि गेलाह।

गाएकेँ पानि पीआ तपेसर बाँसक पात टोनिअबए लगल। मनमे उठलनि काजक बोझ। एक तँ ओहिना दिन-रातिमे एक्को छन निचेन नै होइ छी तइपर माइक गट्टा टुटब तँ आरो काज बढ़ा देलक। छोड़ैबला कोन अछि। गाएकेँ खुएनाइ-पीएनाइ, घर-बाहर केनाइ छोड़ि देब से नै बनत। एक तँ लछमी दुआरपर

कल्पती दोसर बच्चाक माए तँ वएह छी। अखन की भेल दू-अढ़ाइ बर्खक अछि, जँ ओकरा कनियो कऽ दूध नै हेतै तँ सक्कत छाती कन्ना बनतै। अपने नै हएत तँ नै हएत। माइयो तँ तहिना भऽ गेलि। एक तँ बुढ़ाड़ी तइपर जँ पाबोभरि दूध नै हेतै तँ बुढ़ाड़ीक हाड़ कन्ना जुटतै। एते दिन दुनू बच्चेक ताक-हेर करए पड़ैत छल आब माइयोक तँ करए पड़त। उपजा-बाड़ी तँ तेहेन होइए जे पार लागब मोसकिल भऽ गेल अछि। रौदी भेने ऐबेर आरो संकट बढ़ि गेल। पछिले माससँ बेसाह लगि गेल। पाइ-कौड़ीक कोनो दोसर उपाए नै। हे भगवान कोन जन्ममे चूक भेल जे चर्मरोग जकाँ सौंसे देह एकबट्ट भेल अछि। मुदा कि चिन्ता केने दुख भागि जाएत? पत्ता टोनि कुट्टी काटए लगल। मन पड़लनि बाँसक पातक कुट्टी। एक तँ लगहरि गाएकेँ बाँसक पात खुअबै छी। मुदा उपाये की? जँ दू मुट्ठी हरिअरी नै हेतै तँ नारक कुट्टी कन्ना खाएत। अपने घास आनए जाएब से ओते पलखैत रहैए। गाइक नादिमे कुट्टी लगा माए लग आबि बाजल-

"माए, चिन्ता-फिकिर नै कर। दिनक दोख छलै, भेलै। तोरा कोन चीजक कमी छौ। हमरा सन बेटा, दूटा पोता-पोती लगेमे छौ तखन तोरा कथीक दुख।"

भरभराएल स्वरमे सुनयना बाजलि-

"बौआ, आँखिक सोझमे तोहर दुख देखि छाती छटपटाइए। जेहो कोनो काजमे संग-साथ दै छेलियह सेहो आब हएत।"

माइक बात सुनि तपेसर अवाक भऽ गेल। बोल बन्न भऽ गेलै। मनमे उठलै रतुका सिदहा। बेर टगि गेल। केना राति चुल्हि चढ़त। बिनु खेने केकरो नीन हेतै। जे कनी-मनी हाथमे छलाए सेहो दवाइये-दारूमे चलि गेल। एना भऽ कऽ कहियो हाथ खाली नै भेल छलाए। ने तँ पचासे रूपैरूा दुआरे डॉक्टर सहाएबकेँ एना कहितिअनि। तरे-तर छाती डोलए लगलनि। आगू नाथ ने पाछू पगहा। माएकेँ कहलनि-

"माए, खेत बेचने बिना एक्को दिन पार लागब कठिन भऽ गेल। से....।"

बेटाक बात सुनि सुनयना चुपे रहलीह। मनमे उठए लगलनि घर-परिवार तँ ओकरे छिऐ। केना हँ आकि नै कहबै। हमरा बुते कि हेतै। धारक बेग जहिना भौर लैत तहिना सुनयनाक मन भौर लिअए लगलनि। एक-एक पाइ कम भेने घर खसैत आ एक-एक पाइ जमा भेने उठैत अछि। एक-एक कट्ठा जँ बिकाइत गेल तँ निरभूमि होइमे कते दिन लागत। एक दिस परिवारक खर्च दोसर दिस समएक मारि तइपर जते सम्पति कमत ओते तँ कमे होइत जाएत। माएकेँ चुप देखि तपेसर बाजल-

“जाइ छी, चौरी खेत बेचैक गप-सप्प करए।”

खेत बेचैक बात करए तपेसर विदा भेल। आंगनसँ निकलिते मनमे उठलनि सुपतोसँ कम दाम देत। जहिना गरामे उत्तरीबलाकेँ कौआसँ खैर लुटाओल जाइत तहिना ने हएत। मुदा लगले मन सकताएल बाजल-

“तोहर कोन दोख। मन-पेट काटि लोक घर बनबैए आ बिहाड़िमे उड़ि जाइ छै तइमे बनौनिहारक कोन दोख।”

सबुर भेलै डेग आगू बढ़ौलक। दुनियाँ बड़ीटा छै। जँ भगवान हाथ-पएर दुरूस रखने रहताह तँ कहुना नै कहुना जिनगी गुदस कैये लेब। मुदा आइक जे परिस्थिति अछि ओकरा छोड़ि कऽ भागब? भागब तँ कायरता हएत। कोन मुँह लोककेँ देखाएब। हमरा सन-सन ढेरो लोक अछि। लगले मन उनटि गेलै। जहिना गाममे कतेको वृत्तिक लोक होइत अछि तहिना गामोक अनेक रूप होइत। एक्के गाम केकरो लेखे विद्वानक होइत तँ केकरो लेखे मुरुखक। केकरो लेखे शराबी-जुआरीक होइत तँ केकरो लेखे बेइमान-शैतानक। तँए की आमक गाछमे तेतरि फड़ि जाएत आ तेतरीक गाछमे आम। सभकेँ अपन-अपन गुण-स्वभाव आ चलैक रास्ता होइ छै। कियो फटेहाल जिनगी पाबि जीबैत अछि आ कियो सुभितगरसँ जीबैत अछि। एकर माने ई नै जे फटेहाल जिनगी जीनिहार पतिते भऽ जाए। हँ, होइतो अछि। मुदा जेकर जेहेन विचार तड़गर रहैत अछि ओ ओहन जिनगी बना जीबैमे आनन्द प्राप्त करैत अछि। आनन्दे प्राप्त करब तँ उद्देश्य होइत अछि। कियो तत्व-चिन्तनमे समए लगबैत तँ कियो दिन-राति लुचपन्नी केने घुरैत। एहनो-एहनो तत्व चिन्तक ऐ धरतीपर भेल छथि जे दोहरा-तेहरा कऽ जिनगी मांगि तत्व-चिन्तन करैत रहलाह। ऐ असीमित भूमाकेँ, कठिन मेहनतेसँ जानल आ ताकल जा सकैत अछि। टोलक अंतिम छोड़पर पहुँचिते तपेसरकेँ कलकत्तासँ आएल खुशीलाल पुछलकनि-

“भाय कत्तऽ जाइ छी?”

खुशीलालक बात सुनि तपेसर ठमकि गेला। जहिना खुशी मनमे मधुआएल बोल पनपैत तहिना दुखी मनमे सिनेहक बोल कनीकाल चिकुरिआएल ठोर, थरथराइत पिपनी रूपमे ठाढ़ भऽ मिरमिराइत तपेसर बाजल-

“बौआ, विपत्तिमे पड़ल छी। माइक हाड़ टूटि गेलनि। पलस्तर तँ करा देलयनि। मास दिनक पछाति पलस्तर कटतनि। तइ बीच पथ-पानिक संग-संग दवाइ दारू सेहो चलतनि। कते कहबह?”

“भैया, हमहूँ अही समाजक बेटा छी। जते शक्ति अछि ओते मदति करब। साल भरिपर चारि-पाँच हजार रूपैया लऽ कऽ कलकत्तासँ आएल छी। अखन

जत्ते पाइक काज अछि लिअ छह मासमे बिना सूदिक घुमा देब। अखन अहूँक काज चलि जाएत आ कनी दिके कि सिके अपनो चला लेब।''

बिनु सूदिक रूपैया सुनि तपेसरक मनमे खुशी आएल। मुदा लगले मनमे भेल जे बेथा सुनि ओ औगुता कऽ बाजल। जहिना ओ बाजल तहिना की हमहूँ करब। जहिना देहमे रोग सन्हिआइते रसे-रसे पसरए लगैत तहिना तँ अखन अपनो अछि। छह मासक समए दैए मुदा ओरियान हएत। दिन-दिन खरचो बढ़बे करत जखनकि आमदनीक कोनो जोगार नै देखै छी। तखन केना लेब? बाजल-

''बौआ, दू कट्ठा खेते लऽ लाए।''

खेतक नाओं सुनि खुशीलाल सहमि गेल। एक तँ बेचारे विपत्तिक मारल छथि। तइपर सँ खेत लेब। करेज थीर रहतनि। जखन करेजे थीर नै रहतनि तखन तँ आरो सोग बढ़तनि की नै। बाजल-

''भ.... इ..... अ.....।''

बजैत-बजैत आँखिमे नोर आबि गेलै। पुन: बाजल-

''छह मासक बदला दू-चारि मास पछाइते देब।''

बिनु सूदिक रूपैया तपेसरक मनकेँ तड़का देलकनि। मनमे चमकलनि सूदि प्रथा। जइपर दुनियाँक बैंक ठाढ़ भऽ नंगटे नचैत धनीकक शासनक -सत्ताक- फुलवाड़ीक शोभा बढ़ौने अछि। जइसँ देशक उन्नति -मनुखक कल्याण- मुँहक बोल मात्र रहि गेल अछि। तइठाम समाजमे......। जइ समाजकेँ सूदि दू भागमे बाँटि देने अछि- सूदिखौक आ सूदिदार। बैंकक सूदि कम होइ छै मुदा छबे मासमे मूल धन बनि सूदि पैदा करए लगैत छै। बिआजक बंश दुनियाँमे पसरि गेल अछि। जखनकि समाजक सूदि एकहरफी चलै छै। भलहिं महाजनक बही गीता-रामायणिक थाकमे रहि पारसमणि जकाँ बहियो गीता-रामायण बनि जाए। देल-लेलक सीमा-सरहद तोड़ि गीता-रामायणपर हाथ रखैत खौदुकाक घराड़ीक रजिष्ट्रीक समए बना लैत। लगले मन घुरि अपन समस्यापर एलनि। छोट भाए जकाँ खुशीलालकेँ कहलकनि-''बौआ, लोकक लागिमे लोक अही दुआरे बसैत अछि जे सुख-दुख संग मिलि जीब। टुटल सीढ़ी जकाँ अखन परिवारक स्थिति बनि गेल अछि। कोहुना कऽ एकटा पएर रौपे छी तँ दोसर टूटि जाइए। एक्को डेग ससरब कठिन भऽ गेल अछि। जेना बूझि पड़ैए जे पानि-बिहाड़ि, पाथर, ठनका सभ संगे आबि गेल अछि। जिनगीक कोनो ठेकान नै देखि रहल छी। जहिना पानिमे नाव खेबनिहारक लग्गी थाह नै लैत तहिना भऽ गेल अछि।''

खुशीलाल- ''भैया, लोकेक काज लोककेँ होइ छै।''

तपेसर- ''बेस कहलह। मुदा लोकोक बीच खाढ़ी बनल अछि। तोरासँ सात

कछे बेसी सम्पति अछि। जखन दुखेक जिनगी भगवान देलनि तखन ओइसँ कते पड़ाएब। जीता-जिनगी आँखि केना मूनि लेब। मुदा तोड़ा पाबि छाती सूप सन भऽ गेल। जहिना पानिमे डुमैत चुट्टीकेँ खढ़क आशा होइत तहिना भेल। एकटा संगी भेटल। मुदा दुखो असान नै अछि। समैया नै बरहमसिया अछि। तोरो कहबह जे जखन एते मेहनति कऽ कमाइ छह तँ पाइकेँ राइ-छित्ती नै करिहह। अखन जे खेत बेचै छी लऽ लाए। फेर जँ बेचब तँ तोरे देबह। मरियो जाएब तैयो तोहर बेटा-पोता बाजत जे फॅल्लाबला खेत छी। बेचारा माइयक सेवामे बेचलक।''

तपेसरक बात सुनि खुशीलालक हृदए पसीज गेल। चुप-चाप घरसँ एटैची निकालि अनलक। चाभीसँ खोलि पाँचो हजार रूपैया निकालि तपेसरक आगूमे रखि बाजल-

''भैया, अखन धरि ने केकरो कोनो चीज ठकलिऐ आ ने चोरा कऽ एकोटा खढ़ उठौलिऐ। दुनू हाथ उठा भगवानसँ कहै छियनि जे जहिना अखन धरि निमाहलौं तहिना आगूओ पार लगाएब।''

गंगाजल जकाँ खुशीलालक विचार सुनि तपेसरक मनक बखारीक मुँह खुजि गेलनि। बाजला-

''बौआ, सभ बुझैत छथि जे जमीन जाल सदृश होइत। जाल बनाओले जाइत अछि फँसबैले। तोहर हृदए सौदा कागज जकाँ छह। ऐपर प्रेमोकथा लिखल जा सकैत अछि आ आपराधिक सेहो। मुदा हम नै चाहब जे तोरा मनमे कनियो गंदगी आबह। देखहक जमीनेक चलैत झूठ-फूसिसँ लऽ कऽ बेइमानी-शैतानी, मारि-पीट, केश-मोकदमा सभ होइत अछि। कियो जबुरिया लिखा बेइमानी करैत अछि तँ कियो महदा लिखा। कियो दोसरसँ निशान लऽ दोसराक हड़पैत अछि तँ कियो बलजोरी आड़ि तोड़ि अपनामे मिला लैत अछि। कते कहबह?''

तपेसरक मुँहसँ नव बात सुनि, जहिना तैयार खेतमे बाओग कएल फसल अकुरि धरतीसँ ऊपर अबैत तहिना खुशीलालक मनमे जिनगीक नव-नव अंकुर जनमऽ लगल। नव अंकुर देखि जहिना धरतीकेँ अपन निरोग कोखिक एहसास होइत तहिना खुशीलालक हृदैमे भेल। विह्वल होइत बाजल-

''भैया, दुनियाँ किछु हौ आगि लगौ, पाथर खसौ मुदा मनुख अपने जिनगीक जबाबदेह होइत। एक्के गाछक एक डारिमे बॉझी लगलासँ बँझिया जाइत तँ दोसर चुट्टिआ जाइत। मुदा एकर माने ई नै ने जे ओकरामे फड़ैक शक्ति नै छै। फड़बो करैत अछि। कियो किछु करैए करह, जहिना अखन धरि, ओना जिनगीमे कोनो लेन-देन नै भेल छल, भाए-भैयारी जकाँ रहलौं तहिना जीता जिनगी रहब।

अहाँ जेठ भाय तुल्य छी जे कहब करैले तैयार छी।''

खुशीलालक बात सुनि तपेसरोक हृदए परसाएल आम जकाँ पल-पल करए लगलनि। बजला-

''बौआ, अपना गाममे चारि मेलक जमीन अछि। बाड़ी-घराड़ी, भीठ, मध्यम, धनहर आ चौर। एक गामक रहितो चारि तरहक दाम छै। कारणो छैक अपजा आ उपयोगक। घराड़ीक जमीन ऊँचगर होइए जइसँ घर बनबैक काजमे अबैत अछि। भीठ सीमापर अछि। घरो बनाओल जा सकैत मुदा घर नै बनने उपजो-बाड़ी होइत आ बागो-बगीचा लगाओल जाइत। मध्यम धनहरमे सिर्फ अन्ने उपजैत। जखनकि नीच जमीन भेने चौरीक महत सभसँ कम होइ छै। कारण छैक जे बेसी बरखा भेने वा बाढ़ि एने दहा-भसिया जाइत। ने पानिक उपज होइत आ ने उपराड़िक। जँ ओकरा मुँह-कान बना पानिक बस्तु उपजाओल जाए तँ ओहो ओहने मूल्यवान हएत जेहेन दोसर होइत। ओना ओहो धरतिये छी बनौलापर सभ तरहक बनि सकैए। मुदा कते कहबह? बड़ीखान घरसँ निकललौं, अखन जाइ छी।''

तपेसरक दुनू बाँहि पकड़ि खुशीलाल बैसबैत कहलक-

''भैया, अहाँ पाबि बहुत पेलौं। आइ बूझि पड़ैए जे हमहूँ समाजक लोक छी। सोझे गामक सीमानमे धर बान्हि रहने तँ नै होइत तँ तखन जखन सबहक सुख-दुख मिलि जाए। जइसँ सभ एकबट्ट भऽ जिनगी बिताओत। खाली हाथे केना जाएब? जँए एत्ते समए बीतल तँए कनी आरो बीतह। अहूँक एकटा काज भेल रहत।''

तपेसर- ''बौआ, खेत कोनो अन्न-पानि छी जे नापि-जोखि मूल्य बनत। एकर मूल्य आड़ि-पाटिक चुगलसँ होइत। सभ तरहक जमीनक लेन-देन समाजमे चलिते रहैत अछि। अपना गामक चौरी खेत डेढ़ हजार रूपैये कट्टा बिकाइत अछि दू कट्टा खेत देबह तीन हजार रूपैया दाए।''

तीनू हजार रूपैया गनि खुशीलाल तपेसरकेँ देलक। रूपैया नेने विदा भेलाह। बाटमे हिसाब बैसबए लगलथि जे सभसँ बेसी जरूरी बुतातक अछि। मास भरिक बुतात कीन लेब। बॉकी जे बचत हाथ-मुट्ठीमे राखब। जखन घरमे आगि लगले अछि तखन कोन लुत्ती किमहर उठत तेकर कोनो ठीक छै।

मास दिन बीतलापर सुनयनाक हाथक पलस्तर काटि डॉक्टर कहलखिन-

''भारी काज नै करब। ओना बुढ़क हड्डी छी तँए बच्चा जकाँ नहिये जुटत मुदा तैयो बचा कऽ रहब तँ नीके रहत।''

डॉक्टरक बात सुनि सुनयनाकेँ भेलनि जे जँ भारी काज नै करब तँ जिनगी

भारी केना बनत। जिनगीमे हल्लुक-भारी सभ रंगक काज अबैए। मुदा जीते-जिनगी ने दुनियाँ देखै छी, आँखि मुनब सभ हरा जाएत। कहुना भेलौं तँ बुढ़े भेलौं मुदा जाबे पोता-पोती अपने जीबै जोकर हएत ताबतो जँ जीब जाएब तैयो नीके हएत।

शरीरसँ शरीरी धरि सुनयनाक सोगसँ सुकुड़ए लगलनि। एक दिस बेटाक बेथासँ बेथित दोसर दिस मइटुग्गर पोता-पोतीक जिनगी देखि झखति, तँ तेसर दिस जिनगी भरि पालल-पोसल -छाउर-गोबर- खेतकेँ बोहाइत देखैत तँ चारिम दिस अपन देहक दुखसँ दुखी। ओना जीबैक आशा मनमे उत्साह जगबनि मुदा जेना डिबियाक इजोतकेँ घनगर अन्हार घेरैत-घेरैत छोट -कम प्रकाशित- बना दैत तहिना सुनयनाकेँ भऽ गेलनि। अन्हार छोड़ि दुनियाँमे किछु देखबे ने करैत छलीह। जेना खसैत जिनगी उठल जिनगीकेँ दाबि सवारी बना लेलकनि। जइसँ ओछाइन धऽ लेली। कतबो हूबा उठैक करथि मुदा उठि कऽ बेसी काल बैसल नै होइन। बिछानपर पड़ल-पड़ल पहिलुक कएल काज भरि दिन पढ़ैत रहथि। जखन कखनो केम्हरोसँ आबि तपेसर पुछनि जे माए, मन केहेन लगै छौ। तँ जहिना कोनो फल वा तरकारीमे गुण तँ रहैत मुदा कोनो रसक सुआद नै रहैत तहिना सुनयनाक मन बेरस हुअए लगलनि। बेरस होइत-होइत मरि गेली।

फगुआक तीन दिन उत्तर चैती बरखा भेल। ओना कुमासक बरखा भेल मुदा मौसमक रंग आरो हरिया गेल। कनी-मनी जे तापसँ दुपहरमे पसेनाक आगमन हुअए लगल, एकाएक रूकि गेल। घुरक ओरियान जे बन्न हुअए लगल छल फेर दोबरा गेल। घरक राखल कम्मल, सीरक, सलगी, फेर निकलि गेल।

पहिल बरखा भेने सबहक घर चुबल। शीतसँ भीजैत आएल चार रौद पड़ने पएरक बेमाए जकाँ चिड़ी-चोंत भऽ फटि गेल। जइसँ बरखामे बखूबी चुबल। चुबैक आरो कारण छलैक। चारमे फड़ल गराड़केँ तकैत-तकैत चिड़ै सभ तना-खोदिया देने जेना चौरी खेतमे धिया-पुता अनेरुआ केशौर उखाड़ैमे खुनैत। जइसँ छप्पर सभमे खाधि बनि गेल। मुदा पहिल बरखा होइक कारणे केकरो मुँह मलिन नै भेल। पहिल बरखामे एहिना होइत आएल अछि, जे सभकेँ बूझल। मुदा जहिना चैत माससँ साल शुरू होइत तहिना बरखाक शुरूआत सेहो चैतेसँ भेल। पहिल पानि भेलापर सबहक मनमे उठल जे जखने अँटियेलहा नार-खढ़ सुखत आकि घर छड़ा लेब। से भेल कहाँ? पहिल बरखाक दोसरे दिन दोहरा गेल। दोहरेबे नै कएल जे दोहरबिते रहि गेल। गोटे दिन दोहरा कऽ, गोटे दिन नागा हुअए लगल। पूस-माघ-फागुनमे जे नार वा खढ़ चैत-बैशाख-जेठमे छाड़ैक उद्देश्यसँ अँटिआएल गेल ओ जाँकेमे भीज-भीज सड़ए लगल। जहिना एक बेर

धारक नासी बाढ़ि सभमे बहैत-बहैत सनमुख धार बनि जाइत तहिना चुबैत-चुबैत सबहक घर चुबाठ घर बनि गेल। चारक खढ़ो आ बत्तियो-कोरो सड़ि-सड़ि खसए लगल। तहिना भीतक माटि धोखड़ि-धोखड़ि खसए लगल। थाल-कादोक घर बनि गेल। बरखा हुअए लगै आकि कियो छिपली-बाटीसँ घरक पानि उपछैत कियो कोदारिसँ काटि-काटि भीतक खसल माटि हटबैत। खाएल अन्न पचब कठिन भऽ गेल।

अपन घरक दशा आ अपना परिवारकेँ अवग्रहमे फँसल देखि तपेसर भगवानकेँ सुमरि-सुमरि कहनि हे भगवान अपना देश लऽ चलू। किअए नर्कमे घिसियौर कटबै छी। मुदा खाली कहनहिटा सँ नै होइत लइयो गेनिहार ने चाही। अपन आगूक रास्ता बन्न देखि तपेसर पाछू घुरि देखैत तँ कनैत मन चिकड़ि-चकड़ि बजैत जे आनो जनमक पाप लोककेँ बिसाइत छै मुदा पछिलो जनमक पाप मन नै पड़ैत अछि। हारि-थाकि बेचारा अन्हारमे चलैत बटोही जकाँ आँखि मूनि थाहि-थाहि आगू डेग बढ़बए लगला। साल बीतल, सबहक जान तँ बचल मुदा रहैक घर रहैबला नै रहल।

धारक पानि जकाँ समए ससरल। दुनू भाए-बहिन धीरज पाँच बर्खक भऽ गेल। घरक छोट-छोट काजो आ खेतसँ बथुआ सागो तोड़ि-तोड़ि दुनू भाए-बहिन आनए लगल। आमक मासमे चटनीले गाछीसँ आमो बीछ-बीछ आनए लगल। जहिना गहुम-बदामक अकुराकेँ कौआ उखाड़ि-उखाड़ि खाएत, से डर आब तपेसरकेँ दुनू बच्चाक प्रति नै रहलनि। गील माटिक बनल वर्तन वा मूरती जहिना रौद पाबि सकता जाइत तहिना दुनू भाए-बहिनक सकताइत शरीर देखि तपेसरक मनमे खुशी भेलनि। नहियो माए छै तैयो दुनू उठि कऽ ठाढ़ भेल। आब तँ केकरो गाइयो-महीस चरा गुजर कऽ सकैए। कहुना जीवियेे लेत। दुनियाँ देखबे करत। जँ मइटुग्गरो कलंक लगल छै तँ की बिआह दान नै हेतै। जरूर हेतै। जहिना हमर बेटा-बेटी मइटुग्गर अछि तहिना कतेकोकेँ हेतै। अपन कमैत भार देखि तपेसरक मन दुनूक -बेटा-बेटी- जिनगीपर पड़लनि स्कूल जाइ जोकर भऽ गेल। जुग-जमाना बदलि रहल अछि। तेहेन समए आबि रहल अछि जे बिनु पढ़ल-लिखल लोककेँ के पुछत? से नै तँ दुनूक नाओं स्कूलमे जरूर लिखा देब। स्कूल मनमे उठिते लत्ता-कपड़ा, सिलेट-पेन्सिलपर पड़लनि। खएर जे होउ बरस्पति दिन जरूर नाओं लिखा देब। आंगुरपर दिन गनिते तेसरे दिन बरस्पति भेटलनि। परसू तँ नाउए लिखाएब तइ बीच लत्तो-कपड़ा आ सिलेटो-पेन्सिल कीन देबै।

दोसर दिन भोरे तपेसर रोटी सन्ना बनौलनि। तीनू गोटे खा बजार विदा

भेलाह। दुइये कोस बजार उठैत-बैसैत साँझ तक घुरि आएब अपना डेगे नै ओकरे सबहक डेगे चलब। कहुना अछि तँ धिया-पुताक नवका पएर छिऐ किने, कुदिते-फनिते चलि जाएत। भूख लगतै तँ मूढ़ी कचड़ी कीन देबै। दू फक्का अपनो खा लेब। एकटा काज तँ भऽ जाएत किने।

बजार पहुँचि दुनू भाए-बहिनकेँ एक-एक जोड़ पेन्ट, एक-एक गंजी, एक-एक अंगाक संग एक-एक सिलेट कीन डिब्बो भरि -एक दर्जन- पेन्सिल कीन तीनू गोटे घूमि गेला।

सूर्योदयसँ पहिनहि तपेसर उठि जलखैक ओरियान केलनि। भिनसुरका स्कूल। बेरू पहर नाओं लिखाएब ओते नीक नै। अखन जे नाओं लिखा देबै तँ बेरसँ पढ़ैयोले जाए लगत।

टेल्हूक बेटा-बेटी भेने तपेसरक जान हल्लुक भेलनि। आंगन बहारब, चुल्हि चिनमान नीपब, थारी-लोटा घुरनी घुअए लगल। अंगनाक काज पतराइत देखि तपेसर सोचलनि जे खेती अपने करब। मुदा समए बदलने खेतीमे नव-नव ओजार आएल। जइसँ उपजो-बाड़ी बढ़ल आ हल्लुको भेल। जइठाम तीन-तीन, चरि-चरि गार करीन लगा लोक छह कट्ठा आठ कट्ठा खेत भरि दिनमे पटबै छल तइठाम दमकल बोरिंगसँ चारि कट्ठा घंटा भरिमे पटैत अछि। तहिना ट्रेक्टरसँ खेत जोतब, थ्रेशरसँ गहुम-धान दौन करब सेहो असान भऽ जाइत अछि।

एक चौथाइसँ बेसी खेत तपेसरक बिक गेल। मुदा जे बँचल अछि ओकरे जँ नवका ढंगसँ खेती करब तँ पहिनेसँ कते गुणा बेसी उपजा हएत। जहिना नव-नव औजार बनल तहिना नव-नव किस्मक बीआ सेहो बनल। जे धान आधा मनसँ लऽ कऽ कट्ठा मन उपजैत छल से क्वीन्टल कट्ठा उपजए लगल। जते आगू दिस नजरि तपेसर बढ़वैत छला तते आशाक प्रखर ज्योति आँखिक सोझमे आबए लगलनि। मुदा समस्यो तँ झमटगर अछि। बाध सभमे छिड़िआएल खेत, नीच-ऊँच साइज माल-जालसँ लऽ कऽ बोनैआ जानवर, चिड़ै-चुनमुनीक संग मूसक उपद्रव, चोरा कऽ जजात कटैसँ लऽ कऽ गाए-महींससँ चोरा कऽ चरबै धरिक उपद्रव इत्यादि। ओझरी देखि तपेसरक मन ठमकि गेलनि।

जहिना सघन वोनमे लोक हरा जाइत, केम्हरो बढ़ैक साहसे ने होइत मुदा बिना निकलने जानो बँचैक संभावना नै रहैत तहिना तपेसरोकेँ भेलनि। ओझराएल मन संगी-सहयोगी तकए लगलनि। संगी तँ जरूर अछि मुदा संगी दू तरहक भेटैत अछि। पहिल, ओहन संगी जे जीवनक एक रास्ता बूझि अपनो कल्याण बुझैत आ दोसर, दोसराक कान्हपर बन्दूक रखि चलबए चाहैत। सोचैत-विचारैत तपेसरक नजरिपर तीनटा संगी पड़लनि पहिल समाजक -गौआँक- सहयोग, दोसर

बैंक तेसर सरकारी।

समाजमे जाति-समप्रदाय ऐ रूपे पसरि गेल अछि जइमे केकरो कल्याण होएब कठिन अछि। सभ अपने ताले बेताल अछि। ने एक दोसरकेँ सोहाइत आ ने नीक देखए चाहैत। तहिना बैंकोक अछि। उचित सूदिपर कर्ज लैमे दौग-बरहा आ खर्च एते पड़ि जाइत अछि जइसँ लोकक मन टूटि जाइत अछि। सरकारी मदति -अनुदान- मात्र दिखाबा अछि। जहिना कनैत धिया-पुताकेँ माए-बाप रासि-रासिक लोभ देखा चुप करैत तहिना सरकारियो अनुदानक अछि। फेर तपेसर ओझरा गेला। प्रश्न उठलनि- की कएल जाए? अपनो तँ पूँजी अछि। पूँजी दू रंगक पहिल- श्रम दोसर धन। नगद नै अछि। मुदा खेत तँ अछि। जहिना खेत बेचि माइयक सेवा आ दुनू बच्चाकेँ पाललौं-पोसलौं तहिना आरो बेचि लेब। जँ किछु जमीन कमबो करत तँ ओते उपजो बढ़त गामक स्कूलसँ धीरजो आ घुरनियो पास कऽ निकलि गेल। दस बर्खक भेने दुनू घर-अंगनाक काजसँ पितोक काममे हाथ बटबऽ लगल। आगू पढ़ैक आशा ऐ लेल नै रहै जे लोअर प्राइमरी स्कूल तँ गाममे रहए मगर मिड़लसँ ऊपरक स्कूल दू कोस गामसँ हटल रहए। सभ दिन चारि कोस चलि पढ़ब कठिन रहै तँए पढ़ाइ छोड़ि देलक। होस्टलक खर्च जुटा नै पबैत।

अखन धरि तपेसर गिरहस्तीक रूपे-रेखा बदलि लेलनि। बाधे-बाध छिड़िआएल खेतक घट्टो लगा-लगा एकठाम कऽ लेलनि। खेते बेचि कऽ बोरिंग-दमकल बड़द सेहो कीन लेलनि। अपना हाथमे पानि एने सालो भरि खेती करए लगला। ओना चारिये मास -बरसात- कँ किसान खेतीक रीढ़ बुझैत। जँ बेसी बरखा भेल, बाढ़ि आएल तँ दहार भेल। नै जँ कम बरखा भेल तँ रौदी भेल।

दस बजेक समए। चारिटा मकैक बालि खेतसँ नेने तपेसर डेढ़ियापर सँ बेटीकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

''बुच्ची, चारू बालि ओराहि दूटा अहूँ दुनू भाए-बहिन लऽ लेब आ दूटा दलानपर नेने आउ।''

हँसैत घुरनी धीरजकेँ कहलक-

''भाय, देखियो केहेन मकै अछि। एहने मकैक मिठाइयो बनैए।''

मकैक बालि घुरनीकेँ दए तपेसर दरबज्जाक ओसारक खूटा लगा ओङठि कऽ बैसि अपन जिनगीक संबंधमे सोचए लगला। पेटक उपाए भऽ गेल। मुदा पेटे जकाँ घरो अछि। ओना अखन परिवारो नमहर नहिये अछि। मुदा तैयो रहैले तँ घरे चाही। तहूमे गिरहस्तक परिवार छी। बोरिंग ने खेतमे गारल अछि मुदा दमकल रखैले तँ घरे चाही। जँ से नै करब तँ बरसातमे बीझा जाएत। जइसँ

कते पार्ट-पुरजा बिगड़ि जाएत। संगे बाहरमे रखने चोरो चोरा लेत। आब कि कोनो पहिलुका चोर रहल जे ऊखरि-समाठ चोराओत। आब तँ यएह सभ-दमकल, ट्रेक्टर, थ्रेशर इत्यादि- चोराओत। तहिना बड़दोले घर चाही। बेटो-बेटी ढेरबा भेल। काज केनिहार घरमे बढ़ने काजो बढ़बए पड़त। खेतसँ जोड़ल जे-जे काज अछि। वएह बढ़ाएब ने नीक हएत। अखन दुइयेटा गाए कीनब। पहिलुका तँ बुढ़ भऽ गेल। आब ओ थोड़े पाल खाएत। अन्नेक खेती नै तीमनो-तरकारी आ फलो-फलहरीक खेती करब। कोन चीज सस्ता अछि। जितियामे पचास रूपैये मडुआ चिक्कस आ नरक निवारण चतुर्दशी दिन चालीस रूपैये अल्हुआ-सुथनी बिकैत अछि। बोरिंग लग सेहो इंजनबला पानि खसैत अछि से जइसँ कट्ठा भरिमे कोनो उपजा नै होइए। ओना जँ मोथी रोपि दिअए तँ सेहो हएत मुदा आब की लोक मोथीक बिछानपर सुतैए। आब तँ पलास्टिक जिनगी ओहन प्रेमी बनि गेल अछि जे दिन-राति संगे रहैए। तइसँ नीक जे कट्ठो भरि खुनि माछे पोसब। नै बेचै जोकर हएत, खाइयो जोकर तँ हेबे करत। जखन एते मेहनति करै छी तँ नीक खेनाइ आ नीक घर बना नै रहब तँ धने लऽ कऽ की करब। आँखि मुनि तपेसर अपन अगिला जिनगीक संग पाछू दिस सोचए लगलाह। तखने घुरनी दुनू ओराहल मकैक बालि नेने आबि कहलकनि-

"बाबू, बाबू.....।"

चौंकेत आँखि खोलि तपेसर बजलाह- "हँ।"

मकैक बालि हाथमे देखि बजला-

"नोन-तेल औंस देने छहक किने?"

"हँ।" तहीकाल उत्तरसँ दछिन मुँहेँ जाइत चेतनाथ दरबज्जा सेझे आबि ठाढ़ भऽ गेला। हाथमे बालि लऽ निहारि-निहारि तपेसर देखते रहथि आकि आँखि बढ़ि चेतानाथपर गेलनि। चेतनाथकेँ ठाढ़ देखि कहलखिन-

"किअए ठाढ़ छी। किनकासँ काज अछि?"

तपेसरक बात सुनि चेतनाथ बजलाह किछु नै, ससरि दरबज्जा दिस बढ़लाह। लग अबैत देखि तपेसर दुनू बालि हाथमे नेनहि उठि कऽ ठाढ़ होइत वामा हाथक आंगुरसँ आँखि पोछि देखिते सिहरि गेला। माथक सोन-सन केश दाढ़ी मोंछ झबड़ल। देहक हड्डी झक-झक करैत, दाँत विहीन मुँह, मैलसँ कारी खट-खट देहक वस्त्र।

अनायास तपेसरक मुँहसँ निकललनि-

"कने एक घोंट पानि पीब लिअ?"

पानि सुनि चेतनाथक मनमे उठलनि। जिनगी भरि परमात्माक सेवा केलौं,

अंतिम अवस्थामे बिनु सेवाक फल केना खाएब-पीब? भूखसँ जरैत वायु -पेटक- हुमरि-हुमरि शान्त करैले कहनि। मुदा जिनगी भरिक तपल मन मानैले तैयार नै होन्हि। चेतनाथ बजलाह-

“पिरिवारमे के सभ छथि?”

चेतनाथक प्रश्न सुनि तपेसरक मन ठमकि गेलनि। ठमकल देखि चेतनाथ दोहरबैत कहलखिन-

“चुप किअए भेलौं?”

जहिना पतझारक समए गाछमे कोनो-कोनो कलशक मुड़ी जहिना सुख-दुखक बीच अपन अस्तित्व जीवित रखए चाहैत तहिना तपेसरक मनमे भेलनि मिरमिरा कऽ बजलाह-

“माइयो-बाप आ पत्नियो मरि गेली। अपने छी आ दूटा बच्चा अछि।”

घुरनी लगेमे ठाढ़ रहनि। धीरज आंगनमे मकै खाइत रहए। चेतनाथ-

“दुनू बच्चाकेँ सोर पाड़िओ?”

घुरनीकेँ देखबैत तपेसर कहलखिन-

“एकटा यएह छी दोसर आंगनमे अछि।” कहि धीरजकेँ सोर पाड़लखिन। दुनू बच्चाकेँ देखि चेतनाथ कहलखिन-

“एक शर्त्तपर पानि पीब सकै छी?”

“की?”

“जँ दुनू बच्चाकेँ पढ़बैक -संगीत कला- काज दी।”

जिनगी भरि कमा कऽ खेलौं मरैकाल एहेन अधर्म नै करब। अपन मनक विचार पाबि तपेसर खुशी भेलाह। अह्लादसँ हृदए ओलड़ि गेलनि। पेटमे गुद-गुदी लागए लगलनि। ठहाका मारि हँसैत कहलखिन-

“अपनेक शर्त्त सहर्ष स्वीकार अछि। पहिने पानि पीब लेल जाउ।”

अपन झड़ैत जिनगीमे आशाक किरण उगैत देखि मुस्की दैत चेतनाथ बजलाह-

“हँ, आब पानिये नै भोजनो करब।”

दुनू गोटे एक-एक मकैक ओरहा खा पानि पीब, गप-सप्प करए लगलाह।

चेतनाथ- “आइयेसँ दुनू बच्चाकेँ पढ़ाएब शुरू करब।”

तपेसर- “आइ छोड़ि दियौ दसम बर्खक अंतिम दिन आइ छी। काल्हि एगारहम चढ़त। एगारहम जन्म दिनक अवसरपर दसटा समाजोकेँ भोजन करेबनि आ दुनू बच्चाकेँ पढ़ाइयो शुरू करब। तइ बीच अपने अपन जिनगीक किछु बात कहिऔक।”

तपेसरक बात सुनि चेतनाथ विस्मित भऽ गेला। आइ धरि जे प्रश्न कियो ने पुछने छलाह ओइ प्रश्नक उत्तर दिअए पड़त। एक क्षण चुप भऽ सौंसे जिनगी देखि बजए लगलाह-

''माता-पिता बहुत पहिने मरि गेलाह। पत्नियो मरि गेली सखा-सन्तान नै भेल। असकरे छी। पाँच बर्ख पूर्व धरि कहियो असकरुआ नै बूझि पड़ल। मुदा पाँच बर्खक बीच जे गति भेल ओ बजै जोकर नै अछि।''

तपेसर- ''से, की?''

चेतनाथ- ''जहियासँ होश भेल तइ दिनसँ कहै छी- चारि भाए-बहिनक बीच सभसँ छोट छलौं। माइक बड़ दुलारू। आठे-नअ बर्खक रही तहियेसँ नाच-तमाशा, कीर्तन भजन दिस मन लागए लगल। गाममे नाचो पार्टी रहै आ भजनियो पार्टी। सभ मंगल दिनकेँ महावीरजी स्थानमे साँझू पहरमे कीर्तन होय। अपना गामक संग-संग आनो गाममे अष्टजामो आ नाचो करए पार्टी जाए। भाँज लगा-लगा हमहूँ जाय। ओतैसँ गोटे-गोटे पाँति सीखने आबी। जेकरा भरि दिन गाबी। खजुरी बनबैक फुरल। फुटल घैलक कान हाँसूसँ काटि बेलक लस्सा लगा कागज साटि खजुरी बनेलौं।''

हँसैत धीरज पुछलकनि-

''कागजक खजुरी फुटबो करए?''

धीरजक बात सुनि चेतनाथकेँ क्रोध नै उठलनि। वात्सल्यक बाढ़िमे बहए लगलाह। बजलाह-

''खूब फुटे। मुदा काजो बड़ भारी नहिये रहए जहिना अनेरुआ बेल भेटए तहिना दोकानक पुड़ियाक कागज। लगले फेर बना ली। गबैत-बजबैत साजपर हाथो बैसि गेल आ बोलियो सर्रास भेल। गाममे रामलीला आएल। आंगनमे खाऽ ली आ भरि दिन-राति ओकरे सभ लग रही। जखन जाए लगल हमहूँ संग पकड़ि लेलौं। साजो बजाएब सीख लेलौं आ पार्टो खेलए लगलौं। जेहने आवाज सुरिला रहए तेहने हरिमुनियाँपर हाथ। एक दिन ठीकादास देखलनि। ओ राजक गबैया छलाह। संगे लऽ गेला। हमहूँ राजक गबैया भऽ गेलौं जखन राजशाही टुटलै तखन उनटि कऽ गाम चलि एलौं। किछु दिन गामे-गाम उत्सव सभमे जाए लगलौं। ओहो कमि गेल। तइ दिनसँ दिनो-दिन दशा बिगड़िते गेल।''



शंभुदास

जिनगीक ओइ सीमापर शंभुदास पहुँचि गेल छथि जतए पछिला जिनगीक बहुतो विचार आ काज स्वत :छुटि गेलनि। किछु नव जे मनमे उपकि रहल छन्हि ओ करैले जइ शक्ति आ सामर्थक जते जरूरति छन्हि ओ तकनौ नै भेट रहल छन्हि। जेना आगिक चिनगोरा रसे-रसे पझा-पझा या तँ मैल जकाँ ऊपर छाड़ने जा रहल छन्हि या झड़ि-झड़ि खसि रहल छन्हि। डंटीसँ टुटल पोखरिक कमल सदृश हवाक सिहकी वा पानिक कम्पन्नसँ दहलि रहल छन्हि। जे कहियो कामधेनु ,फूल-फड़सँ लदल वृक्ष सदृश छलनि वएह आइ ठाँठ वा पत्रहीन ठूठ बूझि पड़ि रहल छन्हि। जे कहियो राजभोगक बीच दिन बितबैत छलाह आइ अन्न-वस्त्र विहीन भीखक घाटपर बैसि अपन जिनगीक हिसाब-वारी जोड़ि रहल छथि। मन कहैत छन्हि जे सभ दिन तँ गुनगुनाइत रहलौं -जे बच्चा कनैत ऐ धरतीपर अबैत अछि आ हँसैत जाइक चाहिऐ ,मुदा से कहाँ......? जे आत्मा बिनु विवेकक जिनगी टपि विवेकवान लग पहुँचल ओ आगू नै बढ़ि पाछू दिस किअए ढड़कि रहल अछि। सोन-सन उज्जर धप-धप दाढ़ी-मोछक संग माथसँ पएरक अंगुरिक धरिक केश ,आमील सन सुखाएल गालक संग अगिला भाग , सामर्थ हीन हाथ-पएरक मुदा आँखिक ज्योति भोरक ध्रुवतारा जकाँ ललौन मन उफनि उठलनि जे देवस्थान जकाँ तिरपेखनि ऐ दुनियाँक करब।

जहिना बाध-वोनक ओहन परती जइपर कहियो हर-कोदारि नै चलल सुखि-सुखि गाछि-विरिछ खसि उस्सर भऽ जाइत ,ओइ परतीपर या तँ चिड़ै-चुनमुनीक माध्यमसँ वा हवा-पानिक माध्यमसँ अनेरुआ फूल-फड़क गाछ जनमि रौद-वसात ,पानि-पाथर ,अन्हर-विहाड़ि सहि अपन जुआनी पाबि छाती खोलि बाट-बटोहीकेँ अपन मीठ सुआदसँ तृप्ति करैत तहिना जमुना नदीक तटपर शंभुदासक जन्म बटाइ-किसान परिवारमे भेलनि। रवि दिन रहने समाजक दाय-माय शुभ दिन मानि शंभु नाओं रखलकनि। परदेशिया जकाँ तँ नै जे जन्मसँ पहिनहि माए-बाप नामकरण कऽ लैत। छठम दिनसँ पूर्वक सभ कष्ट बिसरि शंभुदासक माए सुखनी अपन सुखैक निआसा छोड़ि अपन देवस्थानक देवता पूजनमे हराएल। अपन मर्यादा गसि कऽ पकड़ि शंभुक सेवामे जुटि गेलीह। परिवारक बोझक तर पिता ,तँए बिलगा कऽ किछु नै सोचथि।

पाँच बरख पूर्व धरि संतोखीदास आ सुखनी ,खेतिहर बोनिहार छलाह। खेतियो तँ मौसमेक हाथक खेलौना। बेठेकान। मुदा तैयो तँ सभ बुझैत जे

जाड़ ,गरमी आ बरसात ,सालक तीन अवस्था छी। भलहिं गोटे साल शीतलहरी पाबि जाड़ अपन बिकाराल रूप देखबैत तँ रौदी पाबि गरमी। बरखा पाबि बसात बाढ़िक संग नंगटे नचैत तँ झाँट पाबि ताण्डव करैत।

बजारवादक हवा सिहकल। जे विहाड़ि सदृश उठल मुदा पहाड़ आ वोनक टाट अँटकौलक। गतिकेँ कम केलक मुदा तैयो बहिते रहल। जाड़-रौदीक मारल किसानो आ बोनिहारो गाम -खेती-पथारी- छोड़ि बजार दिस विदा भेल। जहिना घर बनबैमे पातरसँ मोट खूँटाक जरूरति होइत तहिना करखाना चलबए लेल मजदूरसँ लऽ कऽ संचालक धरिक आवश्यकता भेल। उजड़ल-उपटल गामक रूखिमे बदलाव आबए लगल। खेतमे काज केनिहार बोनिहारकेँ कारखानाक नव मजदूरी भेटए लगल। जइसँ जिनगीमे हरिअरी आबए लगलै। मुदा हवाक गति धीरे-धीरे तेज हुअए लगल। सस्त मजदूर पाबि रंग-बिरंगक कारोबार शहरमे जन्म लिअए लगल। जइसँ श्रमिकक मांग बढ़ल। टुटैत गामक जिनगीसँ तंग भऽ बेबस श्रमिक जेर बना-बना बजारक बाट पकड़लक। श्रमक विकरीक कारोबार जोर पकड़लक। खुल्लम-खुल्ला विकरी बट्टा हुअए लगल।

गामक श्रमिकक पड़ाइनसँ गामो हलचलाएल। खेतबलाकेँ कारखाना पहुँचने खेतीमे ठमकाउ आएल। श्रमिकक अभावमे खेती ठमकल। समाजक विचारधारामे बदलाव आएल। एक विचारधारा -जे अखनो धरि सम्पतिकेँ प्रतिष्ठा बुझैत -जे पहिलुके खेतीकेँ थोड़-थाड़ अन्न-पानि खुआ-पिआ जीवित रखलनि तँ दोसर विचारधारा -शहरी कारोबार देखि- खेत-पथार माने ग्रामीण सम्पत्तिकेँ पूँजी बूझि आमद-खर्चक हिसाब जोड़ि विचारमे बदलाव अनलनि। संग-संग बटाइ खेतीक बीच नव-समस्या सेहो उठल। जइठाम अखन धरि गामक जमीनदार खेतक उपजे बेर-टामे खेतक दर्शन करैत ,ओ गामसँ बाहर भेने सालक-साल खेतक दर्शनसँ बिमुख भेलाह। संग-संग गाममे श्रम-शक्तिक अभाव भेल। बटेदार वर्गक वृद्धि भेल। खेतक बटाइ प्रथामे बदलाव आएल। जइसँ आमक कन -फड़क हिसावसँ- उपजाक मनखप आ पोसिया माल-जालमे बदलाव आएल। कोनो धरानी संतोखीदास एकटा बड़द बनौलक। दू परानीक हाथ-पएर आ एकटा बड़द पाबि संतोखीदास बटेदार किसानक रूपमे ठाढ़ भेल। पेट भरने परिवारमे खुशीक बाढ़ि तँ नै मुदा पटवी पानिक खुशी जरूर आबि गेल। संतोखीदास बीघा भरिक खेतिहर बनि गेल। नव आर्थिक विकास भेने परिवारक बच्चो सभमे मौलाहट कमल। जइसँ बच्चाक मृत्युक संख्यामे कमी आएल। ओना अखनो धरि श्रमिक परिवारमे बेटा-बेटीमे अन्तर नै बूझल जाइत किएक तँ भगवानक अगम लीलाक बीच हस्तक्षेप नै करए चाहैत मुदा बजारक बिखाएल वयार तँ बहिये रहल अछि।

शंभुकेँ तीन बर्ख पुरिते जहिना शीतलहरीमे पहु फटिते सुरूजक रोशनीक आशा जगैत ,बदरीहन समए बादलकेँ छिड़िआइते घरसँ बहराइक आशा जगैत तहिना संतोखियोदास आ सुखनियोकेँ भेल। जिनगी भरिक लेल मनखप खेत भेटने किअए नै दुनू परानीक मनमे आशा आओत। तहूमे बाढ़ि-रौदीक सालक कोनो देनदारिये नै ,रहल सुभयस्त समैक देनदारी। ओहो देनदारी कि अन्तैसँ कमा कऽ आनए पड़त। धरती माता कामधेनु। जते करब तते पाएब। जखन मन हएत तखन खाएब। दिन-राति ओँघराइत रहब।

अखन धरि सुखनी शंभुक पाछू आंगनसँ नै निकलि पबैत छलीह मुदा आब तँ शंभु तीन सालक भऽ गेल। अगहन मासमे खेतक आड़िपर धानक खोंचड़िक घर बना देब ओइमे खेलेबो करत आ ओँघी लगतै तँ सुतबो करत। गरमी मासमे गाछक छाहरिमे रहत। लऽ दऽ कऽ बरसात रहल। तँ बरखो कि लोककेँ बिना चेतौने अबैए। अबैसँ पहिने राजा-रजवार जकाँ समाद पठा दैत अछि। तहूमे बरखा केहेन रूपमे आओत सेहो तँ कहिये दैत अछि। जेठुआ बरखामे जे दुइयो बेर देह धुआ जेतै तँ सालो भरि धुआएले रहतै। बच्चा कि कोनो सियान सैतान होइए जे भरि दिन डाँउ-डाँउ करत। ओकरा तँ अन्न-पानि भेट जाइ ,भरि दिन बौआइत रहत। जहिना नव दाँत जनमने मसुहरि किछु करैले सबसबाइत अछि तहिना बच्चोक मन।

जेठक दसहारा। वरसपति दिन। गिरहस्तीक पतराएल काज। अटुट फड़ल आम-जामुनक गाछ। गामक-गाम लोकक मन गदगद। किअए ने रहत। दू मास जे अमृत फल भेटत। बाधक चौबगली गाम अष्टयाम कीर्तनक मंत्रसँ अकास गनगनाइत। केम्हरो ''सीताराम ,सीताराम सीताराम जय सीताराम'' तँ केम्हरो ''काली ,दुर्गे राधे श्याम ,गौरी शंकर सीताराम।'' केम्हरो ''हरे राम ,हरे राम...।'' तँ केम्हरो ''हरे कृष्ण हरे कृष्ण।''

दसहारा रहने ब्रह्मस्थानमे घोड़ा चढ़ौल सजाओल जाएत। ऐबेर तँ जहिना ब्रह्मबाबा खुशी छथिन तहिना लोकोक मन। आन साल जकाँ कि ऐबेर हल्लुक दामा टंगसुखा घोड़ा लोक चढ़ौत पहिने सए-पचास बेना दऽ दऽ सरैसो घोड़ासँ निम्मन-निम्मन चढ़ौत। दूध-पीठ खाइत-खाइत ब्रह्मोबाबाक मन अकछा गेल छन्हि तँए ऐबेर सेरही ,पन सेरही ,दस सेरही ,अध मनीक संग मनही मुंगबा सेहो परदेसिया सभ चढ़ौत।

दिनक एगारह बजैत। माटि-पानि तबने हबो तबि गेल। खेतक जे खढ़ अछि ओ रोहनि मिरगिसरामे नै सूखत तँ सालो भरि ओकर ओधि थोड़े सूखत। तँए संतोखीदास मरूआ खेत जोतए आ सुखनी खढ़ बिछए गेल। मुदा छोट

बच्चा शंभुकेँ असकरे आँगनमे केना छोड़ि दितथि। शंभु लेल बाटीमे भात आ भरि डोल पानि नेने खेत गेलीह। अपनो सभकेँ पियास लगतै तँ पीबैक खियालसँ। खेतसँ कट्ठा दुऐक हटि आड़िपर एकटा बज्जर केराइक अनेरुआ गाछ। जेकरा निच्चाँमे सघन छाहरि तँ नै मुदा छाहरि। जतए शंभुकेँ खेलाइले छोड़ि अपने दुनू परानी संतोखीदास खेतमे काज करैत। काज लगिचाएल देखि , खाली हड़मड़ी चौकी देब बॉकी ,हर खोलि चौकी ठेक संतोखीदास पत्नीकेँ कहलखिन -

"रौदमे मन तबधि गेल हएत ,कनीखान छाहरिमे जिरा लइले चलू।"

सुखनी -"सएह कहए चाहै छलौं मुदा काज लगिचाएल देखि नै कहै छलौं। जे काज ससरि जाइ छै ओते तँ जाने हल्लुक होइ छै किने।"

"हँ से तँ होइ छै। मुदा काजो कि......?"

"से की?"

गैंचियाह नजरि पत्नीपर दैत संतोखीदास मुस्की दैत कहए लगलखिन -

"जहिना भाँग-गांजा अपन सेवककेँ, बेशिया इश्कबाजकेँ बौड़ा दैत तहिना ने काजो अपन कर्ताकेँ बाबला बना जान लइपर तुलल रहैत।"

"नै बुझलौं?"

"देखै नै छिऐ ,दोकान सभमे लिख कऽ टांगल रहैए जे ,काज करैत चलू फलक आशा नै करू। 'जखन मनुख छी रोड-सड़ककेँ नापि मीलक पाथर गारल रहैए तखन कतए कोन रास्ता चलक चाही से तँ सोचए पड़ैत किने। आकि रस्ते भुतिया जाए। जे बाट नै देखल रहै छै ओही बाटमे ने लोक भुतिआइए। खैर ,छोड़ू ऐ सभकेँ चलू कनी ठंढाइयो लेब दू घोंट पानियो पीब लेब आ तमाकुलो खा लेब।"

दुनू परानी बज्जरकेराइक गाछसँ फड़िक्के देखलनि जे शंभु पूबारि पारक अष्टयामक मंत्र -"हरे कृष्णा ,हरे कृष्णा ,कृष्णा-कृष्णा हरे-हरे" एक ताले छठिक ढोल जकाँ थोपड़ी बजबैत गबैत रहए। बेटापर नजरि पड़िते सुखनी अधखिल्लू फूल जकाँ बिहुँसैत पतिकेँ कहलनि -

"देखियौ ऐ छौंड़ाकेँ। आन धिया-पुता रहैत तँ माए-माए करैत। केहेन मगन भेल अछि।"

पति -"रौदमे तबैध तँ ने गेल अछि?"

"तबधल बच्चा थोपड़ी बजा गाओत आकि अहोछिया काटत।"

"हँ से तँ ठीके।"

जहिना तत्व चिन्तक आत्माक तार जोड़ि ब्रह्मतत्वक अन्वेषण करैत तहिना

शंभु कृष्ण मंत्रसँ अपन मनक तार जोड़ि अष्टयामक धुनमे बेसुधि भेल मीरा जकाँ गाबि रहल अछि।

जहिना एक्के फुलवाड़ी वा गाछीमे भिन्न-भिन्न रंगक फूल वा फल ताधरि अपन परिचयसँ हराएल रहैत जाधरि बच्चा सदृश पालल-पोसल जाइत ,मुदा जखन अपन गुण वा रूप देखबै जोकर भऽ जाइत तखन एकठाम रहितो बेड़ाए लगैत तहिना छह बर्ख अबैत-अबैत शंभुओ बेड़ाए लगल। परिवारमे अनेको रंगक वस्तु-जात रहितो ओतबे सिनेह रखैत जते काजक वस्तु बुझैत। जइ वस्तुक प्रयोजन आन-आन रूपकेँ आन-आन काजमे होइत तइसँ भिन्न ओइ वस्तुक उपयोग अपन काज देखि करए लगल।

अपना खेत-पथार नै रहितो संतोखीदासक परिवार गामक किसान परिवारक खाढ़ीमे आबि चुकल छल। जहिना किसान परिवारमे वाइस-बेरहट कऽ कऽ खाइत अछि तहिना संतोखियोदासक परिवारमे चलए लगलनि। ओना ई गति लगातार नै चलि पबैत किएक तँ किसान परिवार डेंगी नाह जकाँ सदति ऊपर-निच्चाँ होइत रहैत। जइ साल खरचट्टा वा दहार समए भेल तइ साल सभ धुआ-पोछा गेल। मुदा जइ साल सुभितगर समए भेल तइ साल पुन :नव-पुरानक चालि पकड़ि लैत। नवे- पुरानक चालि ने रसगरो आ सुअदगरो होइए , अगिला-पछिला बाट देखि चलबे ने दिशा दैत। जेना एक्के आमक चटनी टटका नीक होइत तँ अचार बसिया। जते- पुरान तते रसगर। मुदा चटनी तँ लगले अरुआ जाइत। तहिना नवका कुरथीक दालि आ पुरान राहड़िक दालि।

अखन धरि शंभु ,परिवारकेँ खाली खाइ-पीबै ,माता-पिताक संग रहैक टा बुझैत। किएक तँ बाल-बोध बूझि ,ने माता-पिता किछु करैले अढ़बैत आ ने शंभु परिवारक काजकेँ अपन काज बुझैत। सदति धैनसन। सोलहन्नी वैरागी जकाँ। मुदा तँए कि शंभु भरि दिन ओछाइनेपर ओँघराएल रहैत सेहो बात नै। जँ किछु नै करैत तँ दिन-राति केना कटैत छैक।

अखनो धरि गामक किसान धरतीसँ अकास धरिक स्मरण साँझ-भोर जरूर करैत अछि। भोरमे धरतीक स्मरण तँ साँझमे अकास विचरण जरूर करैत अछि। आने परिवार जकाँ संतोखियो दासक परिवार। परिवारमे शंभुक कोनो मोजरे नै। मात्र खाइ-पीबै आ सुतै बेर माता-पिता सिर चढ़बैत। बॉकी समए साँढ़-पारा जकाँ अनेर बौआइत ढहनाइत। तँए कि सींग-नाङरिबला पशु जकाँ कि शंभुकेँ थइर-पगहाक जरूरति होइत। 'अनेर गाएकेँ धरम रखबार 'होइत।

भोरमे जखन संतोखी दास खेत-तमैक विचार करए लगथि तँ नचैत हृदेक घूंघड़ूक कम्पन्न ठोठक स्वर होइत खापड़िक मकै-जनेरक लाबा जकाँ कूदि-कूदि

निच्चाँ खसैत तहिना संतोखियो दासक मुँहसँ रंग-बिरंगक मौसमक संग मौसमी सिनेह छिड़ियाए लगैत। जेकरा बीछ-बीछ शंभु खेलेबो करैत आ तहिया-तहिया सीनाक डायरीमे लिखि-लिखि रखबो करैत। हृदयंगम करैत। मुदा बच्चाक कचिया डायरी रहने किछु लिखेबो करैत आ किछु नहियो लिखाइत। मुदा प्रति भोर आ साँझक स्वर 'सीताराम-सीताराम' ,'राधेश्याम-राधेश्याम 'डायरीक ऊपरेक पन्नामे लिखा गेल। जेकरा भरि दिन शंभु गो-मुखी रूद्राक्षक माला बना जपैत रहैत। कामधेनु गाए जकाँ सदति दूधक ढारसँ नव-नव राग-रागिनी स्वत :आबए लगल। कंठक स्वर-लहरी हाथकँ थिरकबए लगल। जइसँ कखनो दुनू हाथ मिलि ताल मिलबैत तँ कखनो पल्था मारि बैसि ठेहुनपर ताल मिलबए लगल।

घर-अंगना एक रहने पिताक संग आ माइयोक पाछू-पाछू आंगन बाहरैत समए ,चुल्हि-चिनमार नीपैक समए ,जाँत-ढेकी चलबैक समए शंभु नाचए-गाबए लगल। बेटाक बौराइत मन देखि माइयो आत्म-विभोर भऽ झूमि-झूमि शंभुक आँखिमे आँखि गारि फड़ैत-फुलाइत फुलवाड़ीमे हरा जाइत।

माता-पिताक उसकैत हाथ देखि शंभुओक हाथ खाइबला बाटीपर उसकए लगल। खजुरी जकाँ ओकरा बजाएब शुरू केलक। केना नै करत? कामेसँ राम आ रामेसँ काम ने चलैत अछि। मुदा भारी द्रव्यक बाटी रहने हाड़-मासुक हाथक ओंगरी कतेकाल ठठत। जे बात शंभु तँ नै बूझि सकल मुदा संतोखी दास बूझि गेलखिन। सोचलनि जे जँ खजुरी बना दिऐ तँ चौबीसो घंटा शंभु आनन्दमे मगन रहत। बेटाक प्रति पिताक दायित्वे की? यएह ने जे हँसी-खुखीसँ दिन-राति चलैत रहए। मन मानि गेलनि जे बेटाकँ खजुरी बना देबै। एकलव्य जकाँ साजमे खजुरियो ने अछि। ने ओकरा दोसर संगीक जरूरति होइत आ ने कखनो अपनाकँ असगर बुझैत। जहिना हवामे उड़ैत रोग लोककँ पकड़ि लैत , लगन अबिते बर-कन्याकँ पकड़ए लगैत ,तीर्थ-व्रतक डोरी लगैत तहिना शंभुओकँ गीत-नादक माने संगीतक रांग पकड़ि लेलक। जइसँ पिताकँ हर जोतैत ,कोदारि पाड़ैत ,धान-रोपैत कालक गुनगुनीक संग आंगन बाहरैत ,धान कुटैत ,जत्ता चलबैत कालक गुनगुनी पकड़ि लेलक। जेकरा संग शंभु भरि दिन मगन भऽ गारा-जोड़ी केने बुलए-भंगए लगल। मुदा तँए कि शंभु एतबेमे ओझराएल रहल? नै! ने ओकरा गामक आन घर अनभुआर आ ने लोक अनठिया बूझि पड़ैत। तहूमे एकठाम रहने जखन माए-बापक संग बाध-वोन दिस जाए तँ वएह घर वएह लोक देखए। समाज तँ ओहन सरोवर छी जइमे घोंघा-सितुआसँ लऽ कऽ कमल धरि फुलाइत अछि। देवस्थानमे साँझ-भोर घड़ीघंट ,शंख बजैत खरिहाँनमे धान फटकैत सूपक अवाज अकासमे उड़ैत। काठपर ओंघराइत टेंगारी-कुड़हरि गर्द

करैत तँ चुल्हिपर चढ़ल बरतनक अदहन झ-झ-काली करैत रहैत।

छह बर्खक बेटा शंभु लेल संतोखी दास खजुरीक ओरियान करैक विचार केलनि। ओना हाट-बजारमे खजुरी तँ नै बिकाइत अछि मुदा हरिहरक्षेत्र ,सिहेश्वर , जनकपुर आ देवघरमे तँ बिकाइते अछि। मुदा ओतएसँ आओत केना? अखन तँ ओम्हर मुँहे जाइक निआर नै अछि। ओना गामोमे बरही लकड़ीक कठरा बनबैए। सरिसोबा सनगोहि मारि मघैया खेबो करैए आ ओकर छाल बेचबो करैए। अगर जँ कठरा बनबा लेब आ सनगोहिक छाल कीन लेब तँ तेबखाक बेसनसँ अपनो छाड़ि लेब। हम सभ कि कोनो शहर-बजारक लोक छी जे बेटा-बेटीकेँ पेस्तौल बम-बारूद-छुड़छुडी-फटाका -खेलाइले देबै। जँ खेत-खरिहाँन दिसक मन देखितिऐ तँ खिएलहा हँसुआ-खुरपी खेलाइले दैतिऐ जँ से नै देखै छिऐ तँ एकरा खजुरियेक ओरियान कऽ देबै। सएह केलनि।

जहिना हाथमे औजार ऐने श्रमिक बड़का-बड़का इंजिन बना चलबैत तहिना हाथमे खजुरी ऐने शंभुओ परिवारक संग समाजक कीर्तन ,भजन ,यज्ञ इत्यादिमे शामिल हुअए लगल।

छह बर्ख बीतैत-बीतैत शंभुक हाथ खजुरीपर बैसि गेल। जइसँ असकरे आंगनक ओसारपर बैसि जाधरि हाथक आंगुर नै दुखाए लगै ताधरि एकताले सीता-राम सीता-राम ,राधेश्याम ,राधेश्याम खजुरिक अवाजक संग अपन कंठक अवाज मिला उन्मत्त भऽ गबैत-रहैत।

भगवानोक लीला अजीव छन्हि। एक्के मनुख वा पशु-पक्षीक गोटे बच्चाकेँ उम्रसँ बेसिऐ बना दैत छथिन आ कोनोकेँ कम बना दैत छथिन। कियो पाँचे बर्खमे पनरह बर्खक बुधि-ज्ञान अरजि लैत अछि तँ कियो पनरहो बर्खमे पाँचो बर्खसँ निच्चे रहैत अछि। जेना शंभुओकेँ भेल। छबे बर्खमे पनरह बर्खक बच्चाक कान काटए लगल। तहूमे तेहेन समाजक स्कूल अछि जे जते मेहनति करए चाहब ओते फलो भेटबे करत।

सदिकाल कतौ ने कतौ कोनो-ने-कोनो उत्सव समाजमे होइते रहैत अछि। देवस्थानसँ परिवार धरि कतौ अष्टयाम-कीर्तन तँ कतौ बच्चाक मूड़न ,कतौ सत्यनारायण भगवानक पूजा तँ कतौ बिआह-दुरागमन। शुभ काज तँए शुभ वातावरण बनबए लेल शुभ-शुभ क्रिया-कलाप। शुभ क्रिया-कलापक लेल कतौ ढोलक-झालि हारमोनियमक संग रामधुन चलैत तँ कतौ ढोल-पिपहिक संग गीत-नाद। ततबे नै संग-संग परिवारक उत्सवमे समबेत स्वर माए-बहिनक गीत-नाद सेहो चलबे करैत अछि। जहिना पाँच बर्खक बच्चा स्कूलमे नाओं लिखा दोसर-तेसर बच्चा संग पढ़ैत तहिना शंभुओ समाजमे कतौ ढोलक-झालि वा

ढोल-पिपहिक अवाज सुनिते ठोकले ओइ जगहपर पहुँचि ,वेद पाठी जकाँ आँखि-कान समेटि ताधरि देखैत-सुनैत रहैत जाधरि विश्राम करैले बन्न नै होइत। शंभुक क्रिया-कलापसँ दुनू परानी संतोखी दास सेहो निचेन भऽ अपन काज करैत रहैत। काजमे मस्त रहैत। किएक तँ दुनू परानी बूझि गेलाह जे जतए ढोल-पिपही बजैत हएत शंभु ओतए जरूर हएत। तँए जखन खेत-पथारसँ काज कए घुमैत तँ ठोकले ओइ स्थानपर पहुँचि शंभुकेँ ताकि अनैत।

समाजो तँ ओहन बाट बना चलैत जइसँ हँसैत-खेलैत जिनगी बिनु थकनहि सदति चलैत रहैत। केना नै चलत? धार ककर आशा-बाटक प्रतिक्षा करैत। जहिना अपना गतिये दिन-राति चलैत रहैत तहिना ने समाजो अपना गतिये सदैत चलैत रहैत।

नवम् बरख चढ़ैत-चढ़ैत शंभुआ शंभु बनि गेल। कारण भेल जे आन-आन बच्चासँ भिन्न काजक प्रति झुकाव हुअए लगलै। जहिना जीवनी -जीवनक पारखी- वोन-झाड़ वा गाछी-बिरछीमे ,बरसातोपरान्त आसिन-कातिकमे नव-नव गाछकेँ माटिसँ ऊपर होइते डारि-पातसँ परखि लैत जे ई फॅल्ला वस्तुक गाछ छी मुदा अनाड़ी नै परेख पबैत तहिना समाजोक पारखी शंभुकेँ परखए लगल। छोट बच्चा जहिना लत्ती-फत्तीमे फड़ल हरिअर चारि पएरबलाकेँ ,जेकर मुँह घोड़ा सदृश नमगर होइत ओकरा घोड़ा मानि पकड़ि अपन खेलक एक भाग ,सर्कश जकाँ , बना खेलैत तहिना कीर्तन मंडलीक बीच शंभुओ एक अंग बनि गेल। ओना अदौसँ लोक किछु समटल किछु बिनु समटल जे लोकक वोन-झाड़मे हराएल रहल ,केँ चिन्हैत आबि रहल अछि। जँ से नै रहैत तँ किछु बनैया किअए शिकारक पात्र बनैत। मनुखक लगाओल खेती-बाड़ी वा माल-जालकेँ जँ बोनैया नष्ट करए चाहत तँ किअए लगौनिहार अपना सोझामे अपन श्रमकेँ नष्ट होइत देखत। एहनो-एहनो पारखी लगमे रहनिहार अपन -मनुखक- बच्चाकेँ नै परेख पबैत। केना परखत? मनुख तँ गाछ-विरीछ नै जे डारिक रंग-रूप आ पातक सिरखारसँ परेख लेत ,मुदा मनुख तँ जीवक श्रेणी -जिनगीक पाँति- मे रहितो आनसँ अधिक नमगर-चौड़गर ,फूल-फलसँ लदल दुनियाँबला छी। जे बाहर नै भीतर छिपा कऽ रखने रहैत अछि। रखने अछि कि राखल छैक ओ भिन्न बात।

जे शंभु अखन धरि मनुक्खक मेलाक बच्चाक जेरमे नुकाएल छल ओ नमैर धान-गहुमक गाछ जकाँ बेदरंग हुअए लगल। मुदा रंग-रूप अधिक गाढ़ नै भेने ने अपने देखए आ ने आनेक नजरिक सोझ पड़ए। भलहिं उम्मस भरल भादोमे पुरबा-पछियाक लपकी नै बूझि पड़ै मुदा ओहन लपकी तँ माघमे जरूर अपन

रूपक दर्शन करबिते अछि। तहिना शंभुओक भेल। एक आँखिसँ दोसर आँखि , एक कानसँ दोसर कान बीआ-बान हुअए लगल। मुदा बीआ तँ बीआ छी ,कोनो फले बीआ ,तँ कोनो ऑठिये। कोनो पाते बीआ तँ कोनो डारिये। तहिना जते मन तते खेत। जते खेत तते रंगक गाछ। जते गाछ तते रंगक फल-फूलक आश। मुदा मनुक्खक बीआ तँ सभसँ बेढंग -अजीब- अछि। जेहेन-जते खेत तेहेन तते रंगक बीआ खसि तते रंगक गाछ संगे जनमैत। गाछ देखि कियो बजैत ,''शंभुक सिनेह संगीतसँ तते भेल जाइए जे कहीं घर-परिवार छोड़ि ओकरे संगे ने चलि जाए।'' तँ कियो बजैत ,''भगवान अपने बेटा जकाँ लुइर-बुइध देने जाइ छथिन एक-ने-एक दिन लगमे बजाइए लेथिन।''

ज्ञान स्वरूप देवत्व प्राप्त करए लेल प्रेमास्पदक बाट धड़ए पड़ैत। जे बिनु बुझनहि शंभुमे आबए लगल। जहिना एक माटि एक पानि जगह पाबि अपन भिन्न-भिन्न रूप बना भिन्न-भिन्न गुण पसारैत तहिना तँ समाजो अछि। माटिक आड़ि बनि-बनि बाध बँटल अछि ,घेरा पाबि-पाबि पानि बँटल अछि तहिना ने समाजो अछि। समाजोक तँ भिन्न-भिन्न रूप आ भिन्न-भिन्न अर्थ अछि। कतौ गामक सीमान मानि समाज मानल जाइत अछि तँ कतौ जाति। कतौ कर्मक हिसाबसँ समाज बनैत अछि तँ कतौ बेवसायिक। कीर्तन मंडलीक समाज ओहन अछि जइमे घर-परिवार सम्हारि लोक -मंडलीक- भगवानोक दरबार पहुँचि अपन नीक-अधला -उचिति-विनती- बात सेहो कहैत अछि। तइले ने संगी-साथीक जरूरति आ ने साज-बाजक। थोपड़ी बजा वा चुटकी बजा वा बिनु बजेनौ मुँह खोलि वा बिनु मुँहो खोलने जतबे समए पबैत ओतबेमे राधा जकाँ कृष्णक संग रमि जाइत।

नवम् बरख खटिआइत-खटिआइत शंभु गामक कीर्तन मंडलीक सदस्य बनि गेल। तइले ने नाओं लिखबैक जरूरति भेलै आ ने कोनो रजिष्टरक। मनक डायरीमे विचारक कलम चललै। मुदा दुनूकेँ -शंभुओ आ मंडलियोक- आगू चलैक बाटो आ संगियो भेटलै। संगी पाबि जहिना शंभुकेँ ,घरक छप्परसँ खसैत धरिआएल पानि आगू बढ़ि धारमे पहुँचि जाइत तहिना भेल। मंडलियोक फुलवारीमे एकटा नव फूलक गाछ पोनगल। जहिना नमहर थैरमे नव गाए-महींसकेँ जातिक समाज भेटलासँ अपन खुशहाल जिनगीक खुशी होइत तहिना शंभुओक संबंध रंग-बिरंगक कला-प्रेमीसँ भेलै। जहिना टाला-कोदारि लऽ बोनिहार ,रिंच-हथौरी लऽ मिस्त्री अपन सेवा दइले जाइत तहिना खजुरीक संग शंभुओ मंडलीक बीच सेवा दिअए लगल। अठबारे मंगलकेँ महावीरजी स्थान आ अठबारे रवि कऽ महादेव स्थानमे साँझू पहरकेँ कीर्तन होइत। जइमे कीर्तन मंडलीक समाजक संग भक्त

प्रेमी सभ सेहो एकत्रित भऽ खाइ-पीबै राति धरि मगन भऽ भजनो-कीर्तन करैत आ सुनिनिहारो संगीक संग समुद्रमे दहलाइत-उधिआइत। मुदा बाल-बोध शंभु ने दिनक ठेकान बुझैत आ ने मासक। मंगल केना घूमि-घूमि अबै छै ने से बुझैत आ ने रवि। तँए अन्हारमे बौआइत। मुदा जहिना अगिला बाट भेटने शंकाक समाधान भऽ जाइत तहिना शंभुओ मंगल आ रविकेँ भजिअबए लगल। खोजनिहार जहिना घनगर वोन-झार सँ कोनो जड़ी वा जरूरतिक गाछ ताकि कऽ लऽ अबैत तहिना शंभुओ मंगल आ रविकेँ भजिऔलक। सातो दिन आ बारहो मासक गुण-अवगुण भजिआ मनमे रोपि लेलक। जइसँ तीसो दिन मासक बीचक तीर्थ आ सातो दिनक आठो पहरक बोध भऽ गेलै। राति-दिनक बीच घरक काज कखन कएल जाए आ बाहरक कखन ,ऐ लेल तँ पहरे पहरा करैत अछि। वसन्ती-वयार तँ गोटि-पङराक लेल नै सबहक लेल समान सोहनगर अछि भलहिं कियो कुम्भकर्णी नीनक मस्ती लिअए आकि ब्रह्मलोक पहुँचि कुम्हारक चाक चलबए। जा धरि चाक नै चलत ता धरि नव बर्तन केना गढ़ल हएत? ओहन खेत वा पोखरि जकाँ शंभुक मन दिन-राति छिछलए लगल जेहेन पोखरिक किनछरिमे ठाढ़ भऽ चौरगर खपटा वा झुटका पानिक ऊपर फेकलासँ ऊपरे-ऊपर छिछलैत दूर तक जाइत ,जहिना अनगर लबल धानक सीसपर होइत मन छिछलैत एक आड़िसँ दोसर धरि छिछलि-छिछलि देखि-देखि खुशी होइत ,तहिना। भोरमे नीन टुटिते शंभु ओछाइनेपर दिन भरिक जिनगीक बाट जोहए लगैत। साँझ परैत-परैत जहिना कृष्ण संगी-साथीक संग आबि माए जशोदाकेँ अपन लकुटि कमरिया सुमझा संध्या बंधन करए विदा होथि तहिना शंभुओ उगैत सूर्जक संग दुनियाँ देखैक उपक्रम सोचए लगैत। भगवानक नजरि तँ पहिने ओइ पुजेगरीपर ने पड़ैत जे नव-नव फूल-अछतसँ सजल सिक्कीक नव फुलडालीमे नव गाछक फूल लऽ रहैत। बॉकीकेँ तँ गिनती कऽ कऽ रखि लेल जाइत। गाछमे सबुरक फलक सिरखार ,कटहर जकाँ ,देखि पड़ैत। दिन भरि समए बँचल अछि जखने बाध-वोन दिस जाएब तँ कोनो-ने-कोनो भेटबे करत। जँ भेट गेल तँ बड़बढ़िया नै तँ उचिति-विनती कऽ आर्त्त भऽ थारीमे रूइक बत्ती नेसि कानि-कलपि कहबनि। अनकर जँ सुनैत हेथिन तँ हमरो सुनताह नै तँ केकरो नै सुनथिन। अपना-अपना करमे-भागे लोक जीब लेत।

चौदहो भुवन -चौदहो लोक- सदृश समाजमे चित्र-कुटक घाट जकाँ अनेको घाट। कम वा बेसी सबहक मनमे भगवानक प्रति आस्था भलहिं आत्मा ,जीव आ मायाक तात्विक रूप नै बुझैत हुअए। से सिर्फ पुरुखेटा मे नै महिलोमे। समर्पित भऽ निअम-निष्ठासँ आठ घंटासँ लऽ कऽ बहत्तरि घंटा तकक उपवास

हँसैत-मुस्कुराइत कऽ लैत। एहेन पत्निये कि जे अपन पतिकेँ देवालय जाइसँ रोकती। समाजक भीतर समबेत स्वरे अष्टयाम ,नवाह, नाचक संग आनो-आन सामाजिकता होइत जे मंचपर बैसि सामूहिक रूपे गबैत। तहिना माइयो-बहिनिक बीच छन्हि। मूड़न हुअए आकि उपनयन ,कुमार गीत हुअए वा बिआह ,छठि हुअए वा फगुआ ,सामूहिक रूपे सभ एकठाम भऽ गबैत छथि। नव-नव गायिकाक सिरजनो होइत आ अवसरो भेटैत। किएक तँ दादी बाबीक उदारतासँ कहैत छथिन जे आब बुढ़ भेलौं ,कफ घेरने रहैए तँए नवतुरियेकेँ गाबए दहक। सामाजिक वातावरणमे श्रद्धा ,प्रेमक संग भाइचाराक बेवहारिक पक्ष अखनो अछि। एकर अर्थ ईहो नै जे आपराधिक वृत्ति दबल अछि। अगुआएल छल ,बहुत अगुआएल अछि। आँखिक सोझमे बहिन-बेटीक संग दुरबेवहार बाड़ी-झाड़ीक वस्तु बलजोरी तोड़ि लेब ,खेतक फसल क्षति कऽ देब इत्यादि-इत्यादि। एक नै अनेक आपरधिक वृत्त अपन शक्तिसँ समाजकेँ दबने अछि। मुदा तँए कि जिनगीक आश नै छैक ,छैक धरमक संग प्रेमसँ छैक। जँ से नै छलैक तँ बाड़ी-झाड़ी वा खेत-पथारमे काज-करैत किसान केना गौऔं-घरूआ आ बाट चलैत बटोहीकेँ दूटा आम खाइले किअए कहैत छथि। एकटा सजमनि अगुआ कऽ दइ छथि जे धिया-पुताकेँ तरकारी बना देबै। कहाँ मनमे छन्हि जे दस रूपैया बूड़ि रहल अछि। रोपैइये काल दू-दूटा फलक गाछ लगबै छथि जे एकटा परिवार लेल , दोसर समाज लेल। जँ परिवार-परिवारमे एहेन वृत्ति अपनौल गेल रहैत तँ कि सामाजिक संबंधमे औझुके टुटान अबैत।

रवि-मंगलकेँ देवस्थानमे कीर्तन अनिवार्य रूपे चलिते छल ,जहिना विद्यालयक कार्य-दिवस। अनदिना सेहो दरबज्जे-दरबज्जे होइते रहैत छल। जेना सबहक जिनगी बन्हाएल चलैत होइ। भरि दिन खेत-पथारसँ माल-जालक पाछू लागल रहैत छलाह आ साँझ पड़िते कीर्तन-मंडलीक बीच पहुँचि जाइत छलाह जे खेबा-पीबा राति धरि चलैत छल। खेला-पीला बाद सुतै छलाह। कहाँ कखनो समाजक प्रतिकूल बात सोचैक समए भेटैत छलनि। जे लोकनि मंडलीकेँ हकार दऽ अपना ऐठाम कीर्तन कराबथि ओ अपन विभवक अनुकूल भोजनो आ साजो-समानक ओरियान कऽ दैत छलाह।

पहिल दिन शंभुओकेँ सवा हाथ वस्त्र आ सवा-आना पाइ भेटल। खा कऽ जखन शंभु विदा हुअए लगल तँ गरे ने अँटै। दू हाथमे तीन समान -पाइ , वस्त्र ,खजुरी- अन्हार रातिमे केना लऽ कऽ जाएब। पाइकेँ जँ वस्त्रमे बान्हि एक हाथमे लऽ लेब आ दोसर हाथमे खजुरी लऽ लेब ,से भऽ सकैए। मुदा दुनू हाथ अजबाड़ि रातिमे चलब केना? ढिमका-ढिमकीक रस्तामे कतए ठेंस लागत कतए

नै। जँ घरबारियेकेँ संग चलैले कहबनि सेहो उचित नै। हमरा सन-सन कते गोरे छथि। किनका-किनका संग पुरथिन। जँ कन्हापर आकि डाँड़मे वस्त्र लगा लेब तँ पहिरौठ भऽ जाएत। केना बाबूकेँ पहिरोठ वस्त्र देबनि। गुन-धुनमे पड़ल शंभु एक गोटेकेँ अपना घर दिस जाइत देखि पिताकेँ समाद पठौलनि -

''बाबूकेँ कहि देबनि जे डलना तेहेन चोटगर बनल छलै जे इच्छासँ बेसिये खुआ गेल। तइपर तीन-तीनटा वस्तु लऽ कऽ अन्हारमे केना आएल हएत तँए आबि कऽ लऽ जाथि।''

एगारहम बर्ख पुरैत-पुरैत शंभुक गिनती गामक भजनियाक संग भगवानक भक्तोमे हुअए लगल। तहूमे ओहन भक्त जे बिनु बिआहल हुअए। ब्रह्मचारी। ओना शंभुक स्वभावमे सेहो सामान्य बच्चाक अपेक्षा विशेष गुण छलैक जे सभ देखैत छलाह। जहिना कियो पनरह बर्खक उमेर बितेलाक बादो पाँचो बर्खसँ कम उमेरक बच्चासँ पछुआएल -लुरि-बुधिमे- रहैत आ कोनो-कोनो बच्चा दसे बर्खमे सियान जकाँ भऽ जाइत। मुदा समाज तँ अथाह समुद्र छी। जेहेन पारखी तेहेन परख। डोका-काँकोड़सँ लऽ कऽ हीरा-मोती धरि समेटिनिहार समुद्र सदृश समाज। एहनो पारखी जे एक तरहक जानवर -गाए-महीस इत्यादि- पोसि दोसरो-दोसरो तरहक जानवरक जिनगीकेँ दूर धरि देखैत आ एहनो जे सभ दिन सोझामे रहितो किछु ने -जिबैक रास्ता- देखैत। तहिना पारखी शंभुओकेँ परखलनि। कीर्तन मंडलीक ऊपर श्रेणीक कीर्तनियामे शंभुक गिनती हुअए लगल। गुरु तँ सदति शिष्य तकैत। शिष्य-गुरुकेँ एकठाम भेनहि ने जिनगी आगू ससरैत अछि। जाधरि से नै होइत ताधरि मिश्री कुसियारक पानिमे डुमल रहैत आ शिष्य सरपतक श्रेणीक गाछ बूझल जाइत। शंभुकेँ एक संग दू गुरु भेटल। एक अगुआ -वजन्त्रीसँ गौनिहार- मुरते आ दोसर साज-बाज। जहिना रंग-बिरंगक कोठीमे रंग-बिरंगक अन्न-पानि देखि गृहस्वामिनीक मन सदति हरिआएल रहैत तहिना शंभुओ हरिआएल।

अखन धरि शंभुक गिनती परिवारमे -माए-बापक बीच- ओहन बच्चा सदृश छल जेहेनकेँ काजक भार तँ नै मुदा जिनगीकेँ जिया राखब माए-बापक कर्तव्य-कर्मक श्रेणीमे रहैत। जइसँ बिनु पगहाक पशु जकाँ शंभुओ। तहूमे आब शंभु छँटगर भऽ गेल। जखने भूख लगतै तखने दौगल आओत नै तँ भरि दिन भुखलो रहि सकैए। तँए कि शंभुक खाइ-पीबैक आ रहैक ठौरो बिला गेल। नै ओ सभ रहबे कएल। हँ एते जरूर भेल जे कखैन आबए आकि जाए से पुछिनिहार नै रहल। सुखनिये संतोखी दासकेँ कहि देने रहनि जे बाल-बोधकेँ पाछूसँ नै आगूसँ टोकल जाइत अछि। जहिना राहड़िक गाछक बुट्टीकेँ चारू

भागसँ सिर पकड़ने रहैत तहिना तँ मनुक्खोक अछि। मुदा जीवनी तँ गर लगा कोदारिक छह मारैत जे अपन पएरो बँचै आ बुटो उखड़ै। तँए उत्तम कोटिक काज वएह ने जे साँपो मरए लाठियो ने टुटए।

घरक कोनो काजक भार शंभुकेँ नै रहैक कारण छल जे माए-बापक हृदए घेराएल जे माए-बाप अछैत जँ बेटा-बेटीकेँ कोनो भार पड़त तँ खिच्चा गाछ जकाँ वा केराक गाछ जकाँ पिचा कऽ थकुचा भऽ जाएत। जइसँ शरीर खिलैच जेतै। जखने शरीर लिखचतै तखने जिनगी खिलैच जेतै। जइसँ रोगाएल गाछ जकाँ सभ दिन खिद-खिद करैत रहत। जँ एहेन जिनगी बेटा-बेटीक भेल तँ ओ परिवार कते दिन आगू मुँहे ससरत। तँए जाधरि बाल-बच्चाकेँ निरोग बना नै राखब ताधरि वंशकेँ आगू मुँहे ससारब कोरी-कल्पना हएत। जइसँ ने माए-बाप -सुखनी-संतोखी दास -शंभुकेँ कोनो काज अढ़बैत आ ने शंभु किछु करैत। सभ किछु अपन रहितो शंभु अपन किछु नै बुझैत। तँए धनि-सन। परिवारक काजक तहमे पहुँचलापर ने कियो बुझैत जे ऐ काजकेँ नै भेने परिवारमे कि नोकसान हएत। ई जिनगीये तँ बरखा-पानिक बुल-बुला जकाँ अछि। लगले बनत ,चमकत आ फुटि जाएत। एहेन जँ क्षणभंगुरोसँ क्षणभंगुर जिनगी अछि ,जेकर कोनो बिसवास नै अछि तेकरा पाछू पड़नाइये नादानी हएत। भने ने जनकजी ऐ बातकेँ बूझि भोगो-विलासकेँ अधला नै बुझैत छलाह। भलहिं शंभुक मनमे जे होय मुदा माए-बापक मनमे जरूर रहनि जे जाबे थेहगर छी ताबे जँ काजसँ देह चोराएब तँ परिवारक प्रति अन्याय करब हएत। बुढ़ाड़ीमे झुनाएल धान जकाँ सीसक टुर तुइ-तुइ जहिना खसैए तहिना ने शरीरक अंगो -आँखि ,कान इत्यादि- खसबे करत। जखन देह भंग हुअए लगत तखन तँ बेटे-बेटी ने श्रवण कुमार जकाँ भारपर टाँगि तीर्थ-स्थान घुमाओत। एहेन काज तँ ओकरा ऊपर लधले छै तखन मुर्दा जकाँ नअ मन बोझ लधनाइ उचित नै। कि करत वएह बेचारा ,एक दिस माए-बापक बोझ पड़तै अपनो जिनगी रहतै तइपर सँ बाल-बच्चाक कोनो ठेकान छै जे भगवान कते देथिन कते नै। हुनका थोड़े बूझल छन्हि जे अन्न-पानि कते महग भऽ गेल अछि। जतए मडूआ बराबरि कऽ माछ बिकैत छल ओतए मरूआ धिना कऽ देश छोड़ि देलक मुदा माँछ सिमटीक चिनमारपर गिरथानि बनि अजबारि कऽ बैसल अछि।

ढेरबा बच्चा रहितो शंभु समैसँ दोस्ती केलक। दोस्ती निमाहैले मंडलीक संग पूरि जखन सभ सुतए ओछाइनपर जाइत तखन शंभु साइकिल सिखैत बच्चा जकाँ पहिने हारमोनियम ,ढोलक इत्यादिकेँ निहारि-निहारि देखए। जहिना युवक-युवती पहिल नजरिमे पहिल रूप देखैत तहिना शंभुओ देखलक। देखलक

जे एक नै अनेको जुगल जोड़ीक संयोगसँ समाज ठाढ़ अछि। जइमे अपन-अपन गुणकेँ मिज्झर भऽ कऽ मिलि-जुलि चलि उकरूसँ उकरू बाट टपि श्रृंगी ऋृषिक फुलवारी देखैत। एक पेरिया झालि केना टुक-टुक जोड़क बनल हारमोनियम संग ठिठिया-ठिठिया चलैत अछि। शंभुक सिनेह समूहसँ भेल।

पाँचिम दशकसँ पूर्व ,अष्टयाम कीर्तनक मूलमंत्र ''सीताराम ,सीताराम'' छल। कारणो स्पष्ट अछि। जगत जननी जानकीक मिथिला ,जिनक संकल्प पूर केनिहार राम। सीताराम मंत्रमे शंभुकेँ ऋृतानुसार सभसँ भेटए लगल। जहिना जखन जेहेन मन तखन तेहेन विचार ,तहिना। भोरमे प्रभाती बेर 'सीताराम'मे शंभुकेँ वसन्ती वा ब्रह्मणी रस भेटैत जखन कि दिन-रातिक गतिये रसोक रस बदलए लगैत। मुदा मंत्रमे कोनो बदलाव नै होइ। बाल-बोध रहितो शंभु जीवनी जकाँ सिर सजमनिक भाँज बुझैत। हनुमानजी जकाँ नै। जे छोटो काज लेल नमहर अस्त्रक प्रयोग करब। आ ने अनाड़ी-धुनाड़ी जकाँ पराती बेर साँझ आ साँझक बेर पराती गबैत। जँ गेबो करैत तँ जहिना हलुआइ चीनीक चासनीमे रंग-बिरंगक वस्तु बना ओइमे बोड़ि मधुर बनबैत। एहने सन शंभुओक मनमे उपजै। ओना जते रंगक मंत्रक जरूरति होइत तते एबो ने करै। नै अबै तहूमे ओकर दोख नै। दोखो किअए हेतै एक तँ बेचारा पशु जकाँ असगरे खूँटा धेने , तइपर बाल-बोध। मुदा तैयो बकरी बच्चा जकाँ नै जे दूध पिबिते छड़पए-कुदए लगैत।

हड़लै ने फुड़लै शंभु घरसँ पड़ा गेल। दुनू बेकती संतोखी दास खेतमे काज करए गेल रहथि। तँए भरि दिन कोनो भाँजे नै लगलनि। कारणो रहए। दुपहर तक तँ आनो दिन हटले-हटले रहैत छलाह। साँझमे खोज करैत छेलखिन। दिन तँ घुमै-फिरैक होइ छै मुदा राति तँ ठौर पकड़ैक होइ छै ,तँए। घरसँ निकलिते शंभु घरक सभ किछु बिसरि गेल। खजुरियो बिसरि गेल। बिसरि नै गेल मनसँ हटि गेलै। नवका चानक -तीर्थानुसार- नव ज्योति भेटलै। जहिना ताड़ी देनिहार खजुर ,लपकि कऽ ताड़ पकड़ि लैत तहिना शंभुक खजुरी , तबला पकड़ि लेलक। तबला पकड़ितहि खजुरियेक हाथसँ बजबए लगल। बजबैत कते दूर गेल तेकर बोध नै रहलै। दुनियाँक बीच हरा गेल। जिमहर देखैत दिन छोड़ि किछु ने देखैत। बाध-वोन ,गाछ-बिरीछ ,पोखरि-झाँखड़ि , हल्लुक-सुखाएल धार-धूर तँ सभ गाममे रहिते छै। आड़ि-धूर बनौनिहार आकि नक्शा-खतिआन देखनिहार ने खेत-पथार ,गाम-घरक बात बुझैत ,जे नै बुझैत ओ दिन-राति छोड़ि आरो कि बूझत ,तहिना शंभुओ। बीच बाटपर शंभुक मनकेँ हुदकबए लगलै। गामक कीर्तन मंडलीक अगुआकेँ मुँहक बात मन पड़ल जे

पचगछियामे बड़का-बड़का बजो छै आ बजोनिहारो। खाइयो पीबैले देल जाइ छै आ रहैयोक बेवस्था छै। जहिना कोनो बीज भूमि छेदि अँकुरि ऊपर आबि अपनाकेँ वृक्षक पूर्व रूप बूझि इतराइत तहिना ने बच्चोक बुइधिक अंकुर जगैत, तहिना शंभुओकेँ भेल। उत्साहित भऽ घरसँ निकलि विदा भऽ गेल मुदा खास जगहपर पहुँचए लेल जानकारीक जरूरति होइत। ओना जँ खास जगह नै ,आम जगह देखए चाहब तँ कोनो परिचयक जरूरति नै होइत। जएह देखब ,जतबे देखब ,जतए देखब सहए दुनियाँ। जेहेन आँखिक ज्योति तेहने रंगक दुनियाँ। मुदा पंचगछिया जाइले तँ जानकारी बनाएब जरूरी अछि। मनमे उठलै पूछि-पाछि लोक कतएसँ कतए चलि जाइए। तखन किअए ने जा सकै छी। जहिना आन बाट-घाट टपि लोक अपन स्थानपर पहुँचैए तहिना किअए ने पहुँचब। पेटक भूखक संग मनोक भूख कमलै। भूख कमिते संकल्प शक्तिक उदय भेलै।

पचगछियाक रायबहादुर लक्ष्मीनारायणजी जेहेन संगीत कलाक मर्मज्ञ तेहने साधको। संगीत कलाक सिनेही रहने ‘संगीत कला केन्द्र ’स्थापित केने छथि। जइसँ मिथिलांचलक अनेको गायक ,वादक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति पौने छथि।

एगारह-बारह बर्खक शंभुकेँ केन्द्र लग पहुँचलोपर भीतर जाइक हिऔए ने डटै। कातमे ओइ भूखल-पियासल मरूभूमिक चिड़ै जकाँ दूर-दूर धरि अन्न-पानिक छूति नै देखैत। समुद्रक ओइ सीप सदृश शंभु मुँह बाबि ठाढ़ भेल जे स्वाती नक्षत्रक बुन्नक आसमे रहैत। तखने मांगन मण्डल निकललाह। अन्तर्राष्ट्रीय स्तरक संगीत ममज्ञ। शंभुपर नजरि पड़िते आँखि आकर्षित केलकनि। मुदा चेहरा अपन भूख देखौलकनि। बिना किछु पुछने-आछने शंभुक वामा बाँहि पकड़ि केन्द्रक भीतर आनि खुओलनि। खेनाइ खेलापर शंभुक मन असथिर भेलै।

मांगन पुछलखिन -

“वाउ ,की नाओं छी?”

“शंभु।”

“परिवारमे के सभ छथि?”

“बाबू ,माए।”

“भाइयो-बहिन छथि?”

“हँ।”

“आइ रहि जाउ काल्हि निचेनसँ गप करब।”

“बड़बढ़िया।”

दिन बीतल साँझ आएल। बाहर दिससँ अन्हार आबए लगल। जेना-जेना

अबैत तेना-तेना करिआएल जाइत। करिआइत-करिआइत ओते करिया गेल जे अपन आँखि हाथो ने देखैत। जे जतए से ततए गबदी मारैक ओरियानमे लगि गेल। मात्र दूटा पिपनी लगल कपाट कखनो खुजै कखनो बन्न भऽ जाए। डर सन्हिआए लगलै। जेना-जेना डर अपन पैठ बनबैत जाए तेना-तेना शंभुकेँ डरौन लागए लगलै। कानए लगल। कनिते मनमे उठलै माए-बाप ,संगी-साथी , गाम-घर। केना नइ मन पड़ैत? माटिक बनल रस्तो अन्हारमे बजैत -भाय ऐठाम कटारि अछि ,आगू हुच्ची। भलहिं रस्ता हिसाबसँ ओकाइत कम अछि मुदा खुरलुच्ची सबहक खुनल छी तँए रस्ता बगलि कऽ टपब। पुन :उठलै माइक कएल भानस। खेबा-पीबा राति भऽ गेल। भानस कऽ कऽ माए तकैले बौआइत हएत। मने-मन कहैत हएत साँझ भऽ गेल अखनो धरि किअए ने आएल। चारि बेर सोर पाड़ि बाबूओ अकछि कऽ अपनो खेनाइ छोड़ि ओछाइनपर ओंघरा गेल हेताह।

मन कतौ तन कतौ शंभुक जहलक कैदी जकाँ। हिचुकी बढ़ितो गेलै आ जोरो केलक। आगूमे ठाढ़ भेल मांगन असमंजसमे पड़ल। केना नै पड़ितथि? जिनगीक पहिल दिन पहिल दृश्य। तँए नाटकक बिनु देखल दृश्यक सदृश। सोलहन्नी नव !जहिना परीक्षा फीस नै रहने विद्यार्थीकेँ फार्म भरैक अंतिम चारि बजे ,नमहर बेमारी एने परिवारक ,जेठुआ दुपहरियामे पीआकक मन बौरा जाइत तहिना मांगनकेँ सेहो भेलनि। एक दिस हुअएबला जिनगीक प्रश्न अछि तँ दोसर दिस असकरे ओइ जगहपर पहुँचि गेल अछि जतए सभ अपरिचिते छैक। मन नाचि भगवान रामपर गेलनि। अयोध्याक राजक बदला वन भेटलनि। मुदा अयोध्यासँ निकलि गंगा पार होइते कोनो-ने-कोनो ॠषि-मुनिक आश्रम भेटिते गेलनि ,तखन वन की भेलनि? मुदा लगले मन उनटि गामक बुढ़ माएपर गेलनि। बेचारीकेँ जही दिन नातिनक जन्म भेल बेटी मरि गेलनि। नानीसँ माए बनि बेचारी मरनी बेटी दुलारूक नाओं नातिनक रखलनि। उत्साह जगलनि। मन बाजि उठलनि -ऐ बच्चाकेँ नै बौआए देबै। भलहिं राति किअए ने जागि कऽ बितबए पड़ए। मुदा शंको तँ जीविते अछि। लगले मनमे उठलनि जे हो-न-हो अनचोकेमे नीन चलि आबए आ तहीकाल पड़ा जाए। झाड़ी वोन जकाँ मांगनकेँ रस्ता भेटबे ने करन्हि। जँ भेटबो करन्हि तँ कोशिकन्हाक खट्टा-पटेरक रस्ता। लगले ओरा जाएत। ओरेबो केना नै करितनि? भूख-पिआस ,नीन केकरो पूछि कऽ अबैए। भलहिं ओकरा सुति कऽ आकि खा-पी कऽ भगाओल जा सकैए। आगूक बाट भेटिते मांगन कोठरीक केबाड़मे लागल तालाक कुन्जी सिरमामे रखि लेलनि। मुदा तैयो शंका दबिते रहनि जे जखन नीनभेर भऽ सूतब आ शंभु पड़ाए

चाहत तँ कि सिरमाक चाभी नै निकालि सकैए।

धीरे-धीरे शंभुक कनैक अवाजमे मिठापन आबए लगल। भरिसक नीनक आगमन भऽ रहल छैक। मिठासे कानब ने सुखोक एकटा कारण छिऐ। मुदा तैयो मांगनक मन उचटिते जाइत। घर-बाहरक वा तीर्थ यात्रा आ तीर्थस्थानक सीमापर जहिना संकल्पक उदय होइत तहिना मांगनकेँ सेहो भेलनि। तकैत आँखिये काल्हुक सूर्ज देखब। मुदा असगर तँ रातियो काटब असान नहिये। समुद्रक अगम पानिमे डुमए लगलाह। मुदा लगले नाचक ओइ हरही बुढ़ियापर नजरि पड़लनि। नजरि पड़िते उठलनि ओहो बुढ़िया गामक युग पाखरिये छी। आन-आनकेँ देखै छी जे लोकक लाटमे राति बितबए चाहैए आ ओकरा कियो लाटमे रहए नै दिअए चाहैए। मुदा बुढ़िया तँ बुढ़िये छी ,कियो ओकर बात सुनै वा नै सुनै भरि राति बड़बड़ाइते रहैत अछि। भलहिं साँझकेँ भोर कहै आकि भोरकेँ साँझ। जखैन जे मन फुड़ैत तखैन से पहरिया नोकर जकाँ भरि राति ठाढ़ करैत। अस-विस करैत बरिआतीकेँ जहिना खिस्सकर रंग-रंगक चसगर चासनीमे डुमबैत तहिना मांगनिक मन बड़बड़ाए लगलनि। बिसरए लगला शंभुकेँ आ अपन कर्तव्य-कर्ममे डुमए लगलाह। हाथ-पएर मारि अन्हारे-अन्हार नीन आबि शंभुकेँ गोँति देलक। जहिना अथाह पानिक तरमे मुँहक बोल पानियेमे बिलीन भऽ जाइत तहिना शंभुक कानब भेल। नाकक साँसक अवाजसँ मांगनकेँ बिसवास भऽ गेलनि जे शंभुकेँ नीन आबि गेल। असथिर भेलाह। मुदा फेर लगले उठलनि जे चहाएल मन कखनो चहा कऽ उठि सकैए। जँ कहीं शंभुक नीन देखि अपनो नीन पड़ि गेलौं तखन तँ सभ चौपट भऽ जाएत। ओना दुनियाँ देखैबलाक छी। देखैबला दुनियाँक बीच हराएत किअए। जखन सभ मिला दुनियाँ अछि तखन हराइक प्रश्न कतए अछि? मुदा लोककेँ दिसांशो तँ लगै छै। दिसांशे लगलापर ने कियो पूबकेँ पछिम आ उत्तरकेँ दछिन बुझै छै मुदा अकासकेँ पताल आ पतालकेँ अकास कहाँ बुझै छै? लगले ओइ सीमापर पहुँचि गेल। जतए बाल-बोधक रच्छा होएत। बाल-बोधक रच्छा तखने भऽ सकैए जखन ओकरापर नजरि राखल जाए। तइ बीच मनमे उठलनि अपन आ अपन संगीक संग संस्थाक महत। मन बुदबुदाए लगलनि।

मनुखक जीवन तँ तखने ने जीवन जखन जीवनक वोन लगा दिअए। ओना एक बारगी एहेन शक्तिक उदय संभव नै ,मुदा डारि पात ,सिर ,फड़ ,फूल इत्यादिक एक-एक अंगक तात्विक बोध होय। कतेको व्यक्ति ऐठाम -संगीत केन्द्र -सँ गायक ,वादक बनि-बनि अपन शक्तिक प्रदर्शन करैत आबि रहल छथि। ओइ आम-जामुनकेँ किअए ने सबुर हेतै जे अपन बाल-बच्चाक -गाछी -

संग शरीर त्यागत। जहिना आइ धरि ,घर-परिवार बसबै पाछू लगल रहलौं तहिना जाबे घटमे घटवार अछि, नाउ खेबैत रहब। भिनसरमे जखन शंभुक संग गाम पहुँचाबए जाएब तखन सोझे घुरि कऽ चलि नै आएब। बहुत दिन भेँट भेना सरिया दासीनसँ भऽ गेल। स्वर्गक गायिका मुदा से नै पाहि लगा एकठामसँ शुरू करब आ सबहक भेँट करबनि। हँ ,जरूर करबनि। मुदा गुरुओजी मानथि तखन ने। जहाँ एकसँ दोसर दिन हएत कि हकबाहि करए लगताह। समाद-पर-समाद पठबए लगताह। ओहो तँ जरूरिये अछि। नै रहने अपन सुन्दर फुलवाड़ीक ताम-कोर के करत? खएर जे होइ, बाल गोविन्द जीक ऐठाम जरूर जाएब। बड़ागामक लहलहाइत बगीचाक ओगरवाही तँ वएह ने कए रहला अछि। ओना अपने सीख-लिखक समांग महेन्द्र सेहो छथि। महेन्द्र बालानन्द ,शंकर ,संजीव , रामनारायण ,विनय ,बेचन ऐठामसँ राम प्रसाद महतो ऐठाम होइते आगू बढ़ब। नै जाएब सेहो उचित नहिये हएत। मनुख तँ कौछु नै छी जे अंडा दैत पड़ाएल जाएब। मुदा काँकोड़ो तँ नहिये छी जे जेकरा पेटमे रखलौं ओ पेटे खोखरि खा लिअए। शीतनारायण सुरेन्द्र आ अजयसँ सेहो भेँट कैये लेब। ओना भेँट हएत कि नै सेहो ठेकान नहिये अछि ,किअए तँ उ़ड़ंतबाज सभ ने बनि गेला अछि। हदसँ अधिक पीतमरू राम प्रसाद। प्रेमकेँ जहिना प्रेमास्पदक बाट भेटिते विश्वास भऽ जाइत जे प्रेमी संगे-संग चलि रहल छथि तहिना राम प्रसादो ने। मुदा बेसी लटारम्हमे कतौ नै पड़ब। लटारम्हममे पड़ब तखने ने बेसी दिन लगत। जँ से नै करब तँ किअए बेसी समए लगत। हँ तखन एकटा करब जे जखन कियो भेँट हेता ते हुनको गुरुजीसँ मोबाइलपर भेँट करा देबनि। जखने भेँट हेतनि तखने ने बुझथिन जे परिवार आ संयास कि छिऐ। जखन ओमहर जाएब तखन हिताइ दास ,बेचन मण्डल, राम गुलाम दास ,रामायणी देवी ,छठू दास ,दरवारी दास ,बतहू मण्डल ,लखन दास ,राधेश्यामजी ,रामजी दास ,बौआ झा ,राम भजनसँ भेँट नै करियनि तँ जिनगी भरि उपरागक मोटरी कपारपर चढ़ल रहत। जँ कहियो भेँट हेता तखनो आ समदियो दिया समाद पठा कहता जे एमहर एलौं हमरा छोड़ि देलौं। मनमे उठलनि माटिये पानिक संयोगसँ ने जीवधारीक सिरजन होइए। गंगा-ब्रह्मपुरक बीचक धरती मिथिला। एकलब्य सदृश एक-सँ-एक योद्धा कर्मरत् छथि। एक लपकन अमतो चलिए जाएब। राधाकृष्ण आ कारतारामक लगाओल फुलवाड़ी। ध्रुपदक विशेष चमत्कारी शैलीक फुलवाड़ी। पद्मश्री राम चतुरजी ,विदुर ,अभय ,रामकुमार ,रमेश आ पाठक जीक भेँट सेहो कैये लेबनि। मन बिलमलनि। रातिक बारह बजि गेल। कोठरीसँ निकलि अकास दिस देखलनि तँ बूझि पड़लनि जे अन्हार ओससँ सिक्त भऽ शीतल बना रहल

अछि। साँझसँ दवाएल इजोत अन्हारक सोझ आबि ठाढ़ भऽ गेल अछि। अधे राति तँ आब जगैक अछि। एक दिन बीतने तँ माघ सन जाड़कँ पिहकारी दऽ भगाओल जा सकैए तँ आधा रातिकँ एकटा धुनो ठेल सकैए। पुन :कोठरी आबि शंभुकँ देखि ओछाइनपर ओंङठि गेला।

ओङठिते मन पड़लनि पानिचोभ। जखन अमता जेबे करब तखन एक लपकन पनिचोभो चलिये जाएब। ओना जखने पनिचोभ जाएब तँ ओ दिन गुनैत-गुनैत सात दिनसँ पहिने नहिये छोड़ताह मुदा ओत्ते नै अँटकब। एम्हर अँटकब तँ अपन बोहियो जाएब। अबध जीक लगाओल गाछी कोन तरहेँ रामचन्द्र ,दिनेश्वर ,राजकुमार मंगनू ,फुलानन्द ,भूपेन्द्र ओगरबाहि कऽ रहल छथि सेहो बिना गेने केना देखब। ओम्हरसँ बनारसक गुरु-शिष्य परम्पराक जीवित रखनिहार खरबान जीक ऐठाम सेहो जेबे करब। मनसा मिश्र आ डीही मिश्रक लगाओल कृष्ण लीला आ रामकथाक वृक्ष कोन तरहेँ सीतू ,हीरा ,भगत ,रामजी , परमेश्वरी ,अनन्त, दम्मन ,सत्यनारायण आ रामवृक्ष सिंह पालि-पोसि रहला अछि सेहो देखि लेब। ओना बीच बाटपर दरवारी दास सेहो पड़ताह मुदा ओ घुमन्तू लोक ,भेँट हेता कि नै खएर गाम तँ कम-सँ-कम देखि लेब। आगू कहियो दोखी तँ नै हएब।

भोर होइते चारू दिसक गाछी-कलम बँसवारिसँ चिड़ै सबहक अवाज उठए लगल। कियो अपन संगीकँ कहैत जे भोरूका नीन बेसी सोहनगर होइ छै तँए एक नीन ओरो लगा लिअ। तँ कियो कहैत सूर्ज उगलापर तँ दुनियाँक एक-कोनसँ दोसर कोन धरि उड़ैक समए रहैए तँए ओइसँ पहिने जते उड़ि लेब ओते अगुआएल रहब। चिड़ैक अवाज सुनि मांगनक मनमे सबुर भेलनि जे भरिसक भोर होइपर अछि। राति बीत गेल एकोबेर नीन कहाँ आएल। आब जँ शंभु उठबो करत तँ रतुका डर थोड़े खेहारतै। मुदा प्रश्न उठलनि -भरि राति जगैक प्रयोजन की?

जहिना गाछपर रहैबला चिड़ै-चुनमुनी हुअए आकि पोखरिमे रहैबला ,माटिमे रहैबला जीव-जन्तु हुअए आकि पाथरमे बास करैबला हुअए ,सबहक माए-बाप ताधरि ओगरबाहि करैत जाधरि ओ स्वतंत्र भऽ जिनगी नै प्राप्त कऽ लैत।

शंभुकँ गाम पहुँचा मांगन आगू बढ़ि गेलाह।

राति भरिक संतोखी दास आ सुखनीक चिन्ता शंभुपर नजरि पड़िते उड़ि गेल। पुछैक प्रयोजने ने बूझि पड़लनि जे पुछिऐ राति कतए रहए। ओना दुनू परानीकँ पहिनेसँ बूझल जे कीर्तन मंडलीक संग रहैए ,भगवानक भजन कीर्तन करैए। मुदा तैयो शंभुपर नजरि पड़िते मन खुशी भेलनि। मनमे उठलनि जे

माल-जाल जकाँ थोड़े बान्हल जा सकैए। जेना-जेना सड़कैत जाएत तेना-तेना अपने ने जिनगीक बान्ह लगैत जेतै। आह्लादित भऽ संतोखी दास पुछलखिन -

"बौआ ,काल्हियेसँ नै देखने छलियह। कतौ अनतए गेल छेलह?"

पिताक सिनेह शंभुक सिनेहकेँ सेहो जगा देलक। बाजल -

"बाबू ,काल्हि भोरेसँ मन औनाए लगल। कतबो असथिर हुअ चाही से हेबे ने करी। घूमि-फिर पचगछिये मन पड़ि जाए।"

संतोखी दास -"पचगछिया केना बुझलहक?"

शंभु -"कीर्तन मण्डलीमे बेसी काल चरचा होइ छै। जेना सभ किछु बिसरि गेलौं। हरल-ने-फुड़ल विदा भऽ गेलौं। ओतए चलि गेल छलौं। बड़का-बड़का गवैया ,वजन्त्री सभ ओइठीन छै।"

संतोखी दास -"अइले एते दूर जाइक कोन खगता अछि। सुनै छी अपने गाममे महीना दिन रमलीला चलत। कते देखबहक?"

शंभु -"कते दिनमे आओत?"

संतोखी दास -"अगिला मास आओत। अखन आसिन-कातिक छिऐ ने राजो-महराजक बखारी खलिया जाइ छै। तइपर दुनू मास तेहेन अछि जे सभ दिन पावनिये-पावनि अछि। अगिला मास धानोक लड़ती-चड़ती शुरू भऽ जाएत आ पानियो-बुन्नी ठमकि जाएत।"

शंभु -"सिनेमा जकाँ एक्के सभ दिन हएत?"

संतोखी दास -"नइ ,जहिना बच्चाक जन्म होइ छै ,आ लागल-लागल ठेहुनिया दइ छै ,खसैत-पड़ैत उठैए। उठि कऽ चलैए। पढ़ै-लिखैए बिआह-दुरागमन होइ छै ,घर-परिवार होइ छै। ताबे माइयो-बाप बुढ़ भऽ जाइ छै। ओकरो सेवा-बरदास करैए। तहिना रमलीलोमे होइ छै। सभ दिन सभ रंगक होइ छै। जइसँ बेसी खरचो होइ छै आ समैओ लगै छै। तँए भरि मन देखबो करैए। जइ काजमे जते समए मेहनत आ खर्च लगत ओ काज ओते नम्हरो आ नीको होइ छै।"

शंभु -"अपना गाममे कहियो भेलो छै?"

संतोखी दास -"नइ। रमलीला कोनो अद्दी-गुद्दी छी जे सभ गौआँ कऽ लेत। दुर्गापूजा जकाँ छी। जहिना पावनि-तिहार ,पूजा-पाठ तँ घरे-घर होइए मुदा दुर्गापूजा करैमे गौआँकेँ डोराडोरि सक्कत कऽ कऽ बान्हए पड़ै छै।"

छठिक परातेसँ झट्टा-पिट्टा शुरू भेल। बाधक रंग बदलए लगल। एक तँ रंग-रंगक धानक चास ,तइपरसँ धानक बदलैत रंग। बेरूपहर जँ किसान भरल चास देखैत ओ भिनसर सेहो देखैक उदेससँ खुशी होइत घरपर अबैत आ जे

भिनसरू पहर ओसमे नहाएल देखैत ओ बेरू पहर फेर देखैक आससँ अबैत। जहिना भरल-पूरल परिवारमे देहक सभ अंग भरल-पूरल चलैत तहिना सुभ्यस्त समए भेने शुरूहेसँ धानोक भेल। जहिना खेतमे काज करैकाल किसान हरा जाइत तहिना अगहनमे बोनिहार। के ने दुइयो-चारि कट्ठा खेती केने रहैए।

कातिकक पूर्णिमाक प्रातसँ रामलीला शुरू हएत। तँए अबैसँ आठ-नअ दिन पहिने रहुआक कमल नारायण ,गरीब झा ,जलेसर आ दयाकान्त बेर टगैत -करीब तीन बजे- गाम पहुँचलाह। ओना गामक लोक पनरह-बीस दिन पहिनेसँ बुझैत जे रामलीला हएत। मुदा बिआह-दुरागमनक लगने जकाँ लोकक मनमे। असल लग्न तँ तखन ने शुरू होएत जखन बर-कन्याक देखा-सुनी हुअए लगैत। गाम पहुँचते जेना हवाक संगे अबैक समाचारो पसरल। सीमाकातक आमक गाछक निच्चाँमे ठाढ़े-ठाढे चारू गोटे विचार करए लगलाह जे गौआँ सभसँ गप-सप्प केना हएत? बिना गप-सप्प भेने आगू काज नै ससरत। मुदा गौआँसँ मुखातीब केना हएत? ईहो तँ नान्हिटा काज नै अखनो समाजमे ओहन लोकक कमी नै जे बिना आग्रह केने बरो-बेमारी आकि मुरदो डाहए नै जेता। तइठाम अनगौआँक संग कि करताह ई तँ कठिन प्रश्न अछि। मुदा एकटा तँ अखनो अछि जे नव लोक वा नव चीज गाममे एने लोक बिनु कहनौं देखए जाइत। भलहिं बाधे दिस जाइक बहाना किअए ने करैत। कमल नारायण गरीब झाकेँ पुछलखिन -

‘‘गाम तँ आबि गेलौं ,आगू कि सभ हएत?’’

कमल नारायणक बात सुनि गरीब झा गाम दिस आँखि उठौलनि तँ देखलनि जे एक्के-दुइये आगू-पाछू लोक सभ धरिआएल आबि रहल छथि। लोककेँ देखबैत गरीब झा बजलाह -

‘‘जहिना अपना सभ गौआँकेँ रामलीला देखबए चाहै छियनि तहिना ने गौआँ सभ देखैक ओरियान करताह। एहेन-एहेन काज अगुतेने होइ छै।’’

अखन धरि गाममे रामलीला नै होइक कारण रहल जे गाममे ने एक्कोटा जमीन्दार आ ने जेठ-रैयत। कम ऑट-पेटक किसान। जिनका अपने जिनगी पहाड़। बाढ़ि-रौदीक इलाका। एक सालक बाढ़ि वा रौदी किसानकेँ पाँच बर्ख पाछू धकेल दैत अछि। तइठाम दुर्गापूजा आकि रामलीला लोकक मनमे उठत केना। मुदा गामक एकटा गौरव अछि- दू सए बर्ख पहिने जते लोक आ परिवार छल ओइमे दस गुणाक वृद्धि भेल अछि। ओना ई बात नै जे ओइ गामक लोक बम्बै ,कलकत्ता ,दिल्लीक आमदनी नै बुझैत ,बुझैत मुदा गामक सिनेह आ विश्वामित्र सदृश जिबटगर। किअए ने जिबटगर रहत? कोनो कि आइये रौदी ,

बाढ़ि आकि अन्हर-बिहाड़ि ,भुमकम भेल अछि सभ दिनसँ होइत आएल अछि होइत रहत। तरहस्थीक मैल जकाँ दू बेर रगड़ि देबै छूटि जाएत। ततबे नै गामक ईहो गौरव अछि जे बरहबरना माने बारहो वरनक गाम रहितो ने कहियो अपनामे लाठी-फराठी निकलल आ ने कोट-कचहरीक दछिना भरए पड़ल अछि।

रामलीलो पार्टी आ गौओंक बीच गप-सप्पक क्रममे तँइ भेल जे ब्रह्मस्थान सार्वजनिक जगह छी ,ओ तँ ओत्तै बैसि अगिला गप-सप्प हुअए। सएह भेल।

लोकक बीच कमल जीक हृदए उमड़ि गेलनि। कला-सिनेही। विह्वल भऽ बजलाह -

"आइ धरि एहेन गाम नै देखने छलौं जइठाम एहेन हृदैक मिलान भेल। अखन धरि जेहेन-जेहेन गाम देखलौं तइसँ भिन्न गाम बूझि पड़ैए। ऐ रूपे कहाँ कोनो गाममे रामलीलाक प्रति आकर्षण छै।"

मुदा लगले मन आगू बढ़ि गेलनि। भगवान रामक प्रति लोकक विश्वासक कारण अछि आकि मनोरंजनक? मनोरंजनो तँ जीवनक संगे चलैबला सहचरिये छी आकि जिनगीसँ अलग चलैबला? कर्म-आनन्द मिलि लीला करैत अछि। सभ सबहक मुँह देखैत जे के कि बजै छथि। कारणो अछि। सभ अपनकेँ नव बूझि नव फूलक सुगंध लिअए चाहैत। सभकेँ चूप देखि पुन :कमलजी बजलाह -

"अहीबेर टा नै जहिया कहियो लीला देखबैक अवसर देब तहिया जरूर आगूओ देखबैत रहब।"

बजैले आगू रहबे करन्हि आकि बिचेमे गरीब झा टपकि उठलाह। जहिना राज-दरबारमे किछु गोटेकेँ बजैले परमीशन नै लिअए पड़ैत तहिना रामलीला मेड़ियाक बीच गरीब जीकेँ। जहिना गरीब नाओं तहिना एक चेराक चेहरा। भीतर-बाहर एक्के रंग। ने गमहारिक चेरा जकाँ अमेरिकन आ ने कटहरक चेरा जकाँ यूरोपीयन। बस-बस सोलहो आना आमक चेरा जकाँ इन्डियन। चौबीसो घंटा शरीरसँ कला छिटकैत रहनि। मुस्की दैत बजलाह-

"भाय ,सर-समाज जहिना कमल भाइक संग पाबि गरीबो झा जलेसरो आ दयाकान्तो कलाकारक पात्र बनि सेवाक लेल एलौं तहिना अहूँ सभ गारा-जोड़ी कए संगी बनब। -हँसैत -जेना हिजरा-हिजरनिया सभकेँ देखै छिऐ जे कोनो-गाम कोनो समाज ओकरा बान्हि कऽ नै रखैत तहिना हमरो-सभसँ छिपाएब नै।"

कहि पुन :बजलाह -

"होउ भाय ,आब अपन अगिला विचार कहियनु।"

गरीब झाक विचारकेँ कमलजी मनमे औंटैत-पौड़ैत रहथि। मनमे हौंड़ैत रहनि जे भरिसक अपना इलाकामे जते रामलीला पार्टी छथि ओ सभ भरिसक एक

सीमाक भीतरे चक्कर कटैत रहलाह। जइसँ सभकेँ उठैक समान वातावरण नै भेट सकल। भरिसक गनल-गूथल गाम आ गनल-गूथल समाजक भीतरे रहि गेलाह। मुदा ईहो तँ झूठ नहिये जे जते रामलीला देखै-देखबैक जरूरति अछि ओते मेड़िया अछियो नै। तँए कि लोक नै देखैत अछि सेहो बात नै। जहिना पचमहलो कोठामे मनुखे रहैए आ बाधमे बनल रखबारक खोपड़ीमे सेहो मनुखे रहैए। रामलीलाक अतिरिक्तो नाटक ,नौटंकी थियेटर रास ,ऑरकेस्ट्रा ,लोक नाच ,विषय-कीर्तन ,कौव्वाली ,इत्यादि तँ चलिते अछि। रामलीलामे जहिना रामकथा चलैत अछि तहिना लोको नाचमे तँ चलिते अछि। मुस्कुराइत कमल बजलाह -

''आइ अहाँ सबहक अतिथि-अभ्यागती भेल। हम सभ गाछी-बिरछीमे रहैबला छी तँए भारो कम्मे देब। रातिमे निचेनसँ सभ एकठाम बैसि हब-गब करब। अखन एतबे कहू जे हृदैसँ चाहै छी आकि नै।''

एक तँ गाममे पहिले-पहिल रामलीला हएत तेकर खुशी तइपर उपजल गामक गदगदी। एक स्वरे सभ हूँहकारी भरि देलकै।

दिशा-मैदान दिस टहलि दोसरि साँझमे सभ कियो एकठाम बैसलाह। लोकक खुशीकेँ अपना दिस खींचैत गरीब झा ठाढ़ भऽ बजए लगलाह -

''अहाँ सभकेँ बुझले हएत जे रामलीलाक स्टेज बनत। स्टेजक पाछू कलाकारक बेवस्था रहत आ आगूमे देखनिहारक। स्टेज आ स्टेजक पाछूक बेवस्था ले तँ बासो-बेलन आ परदो अछिये। रहल स्टेजक आगूक बेवस्थाक। से तँ समाजे करब।''

गरीब झाक बात सुनि संतोखी दास दोहरबैत कहलखिन -

''कनी फड़िछा कऽ कहियौ गरीबबाबू। नीक-नहाँति नै बूझि सकलौं?''

गरीब झा -''कते गाममे रामलीला खेलेलौं हन। सभ गाममे किछु-ने-किछु तफड़का रहिते अछि। जेना कते गाममे पुरुख दर्शकक लेल अलग आ महिलाक लेल अलग ढाठ गाड़ि बेवस्था कएल जाइए। तँ कोनो-कोनो गाममे से नै होइए।''

संतोखी दास मुस्कुराइत -

''गरीब भाय ,देखनिहारसँ पहिने खेलेनिहारक चर्च करू जे खेलेनिहारक बीच ने ते.....?''

संतोखी दासक प्रश्न सुनि गरीब झा सकपकेलाह। ओना पेटक बात ओँढ़ मारि गोगिया-गोगिया निकलए चाहनि। मुदा अपनाकेँ एक कलाकार मानि सहमि जाथि। दुनू गोटेक बीचक सबाल-जबाब सुनि कमल जीकेँ नै रहल गेलनि। मुदा

नजरि गाम -समाज- दिस नै अपन मेड़ियापर पड़लनि। सभ एकठाम बैसि खाइ पीबै ,सुतै-बैइसै छी। घर-गिरहस्तीक संग घरवाली बाल-बच्चाक संग कला-साहित्यपर विचार करैत गति-मुक्तीक विचार-विमर्श करै छी ,तखन एहेन प्रश्न किअए उठल। पचपन-साठि बर्खक ,अगिला दाँत टुटल ,केश पाकल , छड़गड़ देह, कमलबाबूक मनमे झटका लगलनि। मनमे उठलनि जहिना गाए लेल गोशाला तीर्थस्थान होइत ,विद्यार्थीक लेल विद्यालय ,रोगीक लेल अस्पताल तहिना ने कला प्रेमीक लेल रंगमंच। यएह गरीब झा छथि जे प्राथमिक विद्यालयमे शिक्षक छलाह। दरमाहा पाइ कहियो परिवारमे नै दै छेलखिन। सभ दिन सिनेमे , नाटकक चक्करमे घुमैत रहलाह। जखन अपन पार्टी ठाढ़ भेल तखन विद्यालय छोड़ि एला। तहिना दयाकान्तो छथि। बनारसमे रहि शास्त्रीय ,उपशास्त्रीय संगीत सिखने छथि। तहिना जलेसर सेहो मन चोभिया नाचसँ आएल छथि। अपनो पचगछिया कुटुमक संसर्गमे रहल छी। अजुनो छकड़ बाजीसँ आएल अछि। पुन : मनमे उठलनियाकान्तो र परमीशन नै लिअह सच्चामे कच्चा की। उफनि बजलाह -

''सभ काजक सीमा होइ छै। अहाँ सबहक जे सीमा अछि तेकर भार अहाँ सभपर आ हमर सबहक जे सीमा अछि तेकर भार हमरा सभपर। द्वारपाल बनि अपन-अपन सेवा जँ इमानदारीसँ देब तँ कोनो तरहक गंदगी नै आओत।''

कमल नारायण जीक विचार सुनि संतोखी दास बाजल -

''आइ धरि ऐ गाममे रामलीला भेबे नै कएल अछि तखन अनुमानसँ किछु सोचब आ बुझबमे कतौ-ने-कतौ कमी रहियै जाएत। मुदा ईहो नै कहब जे ओ अनिवार्ये अछि नहियो भऽ सकैए। ई निर्भर करैत अछि गामक बेवस्थापर। जइ गामक जेहेन बेवस्था रहत तइ गाममे तेहेन काज हएत। ओना गामक भीतर काँकोड़ वा मकड़ा जकाँ गामक जाल पसरल अछि। एहनो नाच वा पूजा अछि जे खास जातिक प्रवेश आ खास जातिक निषेध अछि। जखन कि मूल प्रश्न अछि कला आ धर्मक। तहिना मनुक्खक संग देवतो आ कलो बटाएल अछि। जइसँ जबरदस टाट लगि गेल अछि।''

संतोखी दासक बात सुनि गरीब झा ठहाका मारि पुछलखिन -

''तखन?''

गरीब झाक जिज्ञासा देखि संतोखी दास मुस्की दैत कहलखिन -

''जेकरा कोनो गाछक जड़िक बोध हएत वएह ओइ गाछक गुण बूझि सकैए। मुदा ऐठाम तँ अखन गाछ जनमैक सुरे-सार भऽ रहल अछि तखन तँ प्रश्न उठैक समैओ नै बनल अछि।''

गरीब झा -''तखन?''

संतोखी दास -''हँ ,अखन घरसँ बाहर धरिक छी तँए अखने आगूक लेल रास्ताक निर्माण कऽ लेब ,नीक हएत। ओना कोनो निअम अस्थाइ नै भऽ सकैए। कारण जे समैक संग समाज चलैए तँ निअमोक संग चलए पड़त। जइसँ किछु नै किछु सुधार होइते चलत। जे समैक अनुकूल हेतै। हमर समाज ओहन अछि जइमे टोल-टोलक आठ-नअ बर्खक बच्चासँ लऽ कऽ चेतन , बुढ़-पुरान धरि संगे बाध-वोनमे एकठाम भऽ घास छिलैत तीन-तीन चारि-चारि घंटा संगे बितबैए। खेतमे संगे रोपैन-कमठौन करैए। ढेरबासँ जुआन धरि संगे साइकिलसँ दस-दस किलोमीटर स्कूल-कओलेज जाइए। तइठाम रामलीला सन जगहमे खाड़ी बनए ,ई केहेन.....?''

संतोखी दासक प्रश्न सुनि कमल गरीब दिस कनडेरिये आँखिये झँकलनि आ गरीब जलेसर दिस तहिना जलेसर कमल दिस। तीनूक-तीनू विपरीत दिशामे बौआए लगलाह। एक-दोसराक बीच नजरिक मिलान हेबे ने करैत। जहिना छोट बच्चा केशौरक ऊपरका भाग देखि हाथेसँ खोधिया उखाड़ए चाहैत तहिना तीनूक बीच मनमे हुअए लगलनि। मुदा से गरे ने लगनि। दयाकान्त लेल धैन-सन। मने-मन पावसक विसर्जन करैत समदौन ताल-मात्रा मिलबैत। तइकाल कमल नारायण पूछि देलखिन -

''की दया?''

जहिना कियो अनचोकमे कोनो प्रश्नक उत्तर किछु दऽ दैत तहिना दयाकान्त मुड़ीक ताल मिलबैत धाँइ दऽ बाजि उठलाह -

''हँ ,हँ ,सभ नीके।''

मुदा लगले जखन भक्क टुटलनि तँ मनमे उठए लगलनि जे भायकेँ की उत्तर भायकेँ दऽ देलियनि। ओ राय पुछलनि आ हम ओइ बच्चा जकाँ कहि देलियनि जे कोनो भोतिआइत यात्रीकेँ बिसवासक संग बिनु देखल रस्ता बता दैत। तहिना भेल। अखन समदौनक मात्रा मिलबैक समए नै छल जे मृत्युक पछातिक वएह मात्रा जन्मकालक केना हएत। किअए ने हएत। जन्म मृत्युमे अन्तरे कि छै। खेतक आड़ि जकाँ थोड़े अछि जे खेतसँ ऊपर होइमे वा आड़िपर चढ़ैमे डाँड़पर हाथ लिअए पड़त। ई तँ ईंटाक खरन्जाक ,बाट छी जे फुटल छोड़ि-छोड़ि सौंसकापर पएर दैत चली।

दयाकान्तक उत्तर सुनि कमल आरो भोतिआए लगलाह। जे सभ नीक तँ अधला की? जँ अधला नै तँ राक्षसक जन्म किअए। जँ राक्षस नै तँ मनुखक देहमे मासु-खुन किअए नै? मुदा तइकाल गरीबो झा आ जलेसरो अपन भाँज

पुरबैले कमल दिस तकलनि। बजैले दुनूक मुँह लुसफुसाइत। मुदा पहिने केना बाजब। जलेसरक मनमे गरीब भायकेँ गुरु बुझै छियनि। अखनो बहुत सिखबै छथि। जखन कि गरीब झाक मनमे उठैत जे कलाकारक रूपमे भलहिं दुनू गोटेक एक जिनगी अछि मुदा गाम-समाजक बंधनमे तँ दू छी। तँए पहिने जलेसरक विचार जरूरी। जँ से नै ,अगर पच्चीस तरहक रोगसँ ग्रस्त रोगीक इलाज पहिने नै भऽ एक बेमारीबलाक इलाज हएत तँ निश्चित रूपेँ अधिक बेमारीबला रोगी मरबे करत। मुदा से नै ,जँ पच्चीस बेमारीक इलाज उपलब्ध हएत तँ एक बेमारीक इलाज एकटा कोरामिनोसँ भऽ जाएत। आँखिक इशारासँ जलेसर गरीबकेँ आग्रह केलखिन। शिक्षक गरीब झा ,जे रामलीलाक विदूषककेँ मनमे बिजलोका जकाँ तड़कलनि जे रोगीक रोगक इलाज किमहरसँ कएल जाए? जालेसर आ गरीब झा दुनूक तत्-मती देखि कमल नारायण जीक मनमे उठलनि जे कतौ जरूर नमहर खाधि अछि। विचार बदलैत हँसैत बजलाह -

“जिनगीक पहिल दिन एहेन आनन्दक अवसर भेटल।” कहि चुप भऽ गेलाह। मनमे उठलनि जहिना घरमे आगि लगलापर आन्हरो भागए चाहैत मुदा आँखि नै रहने ढिमका-ढिमकीमे ठेसिया-ठेसिया खसैत ,कोनो टंगटुट्टाक आभास पाबि जान बँचबए कहत तँ ओ टंगटुट्टा यएह ने कहत जे भाय केकरा के देखै छै जे तोरा हम देखबह आकि तूँ हमरा। तोरा आँखि नै छह जे देखि कऽ चलबह आ हमरा टांग नै अछि जे देखतो एको डेग चलब।

कमल सदृश खिलैत कमल जीकेँ संतोखी दास कहलकनि -

“भाय ,जतेकाल अहाँ स्टेजपर रहब ओतेकाल अहाँ राम ,हनुमान आकि रावणक रूप बना रहब मुदा तकर बाद जते समए बचत ओ तँ समाजेक भाए-भैयारीमे बनि रहब किने? बारह-तेरह बर्खक एकटा बेटा हमरो अछि। ऐठाम अछियो। जाबे धरि ऐठाम रहब ताबे धरि ओ सेवामे लगल रहत।”

हँसैत कमल बजलाह -

“सेवाक फल मेवा होइ छै।”

जे रोगीकेँ मन भाबए से वैदा फरमाबए। अपन नाओं सुनिते शंभु फुड़फुड़ा कऽ उठि कमल जीकेँ गोड़ लगलकनि। मुदा जाबे कमलजी असिरवाद दितएथिन तइसँ पहिने गरीबो ,जलेसरो आ दयाकान्तोकेँ गोड़ लागि समाज दिस घूमि पहिने पिता संतोखी दासकेँ गोड़ लागि पाहि लगा सभकेँ गोड़ लागए लगल। मनमे बेहद खुशी !ओहन खुशी जेहेन दुरगमनिया बहिन ,पहिलुक समाजसँ आगू बढ़ैत नव समाज दिस डेग उठबैत। अखन धरि शंभुकेँ असिरवाद दइक विचार कमलजी करिते रहथि। कारणो भेल ,जखन शंभु गोड़ लगलकनि तखन कमल

योगासनमे बैसले रहथि। जइसँ दहिना पएर पोन तर दाबल आ वामा बाहर रहनि। तँए असीरवाद दइमे पहिल देरी भेलनि ,दोसर देरी भेलनि जाबे असीरवाद दितथिन ताबे शंभु तीनू गोटेकेँ गोड़ि लागि लेलकनि। जइसँ कमल असमंजसमे पड़ि गेला। स्कूल-कओजेजमे विद्यार्थीक प्रवेश दिन जँ शिक्षकक बीच हुअए आ ओइ दिन शिक्षक विद्यार्थीक बीच प्रवेश पर्व हुअए जइ दिन सभ विद्यार्थी-शिक्षक रंगमंचक कलाकार जकाँ नव-नव चेहरा सजा ,नव-नव कला देखबैत। जइसँ एक-कलाकारकेँ जहिना एक संगी भेटलापर नन्द रूप आनन्दक रूपमे बढ़ैत , तहिना ने ओहू पर्वमे हएत। सभकेँ तत्-मत् करैत देखि गरीब टभकि उठलाह -

"आइ शंभु ओइ सीमापर आबि अँटकि गेल जइठामसँ दिशा बदलैत। बहुत पैघ आश समाजमे भेटल। मुदा सबुर कहाँ भेल। सबुर हएत तखन जखन भरि पोख काज अहाँ सभ लेब। शंभुए किअए ,एहेन-एहेन शंभु समाजक फुलवाड़ीमे छिड़िआएल अछि।"

गरीब झाक विचार सुनि संतोखी दास बजलाह -

"गरीब भाय ,आन जे होथि ,नै बूझल अछि मुदा अहाँ प्राइमरी शिक्षकसँ कलाकार भेल छी। तँए जहिना देव पूजनक लेल फुलवाड़ीक फूल बर्जित नै अछि ,पुस्तकालयक पुस्तक बर्जित नै अछि तहिना निरविकार भऽ अहूँ समाजक फुलवाड़ीमे घूमि-फिरि अपन पूजाक फूल चुनि पूजा-पाठ -तामि-कोड़ि -सेवामे लगा सकै छी।"

छठिक तेसरा दिन ,अकासक चान अपन प्रवेश देखि मधुरिया मुस्की दैत। ठंढ़-गर्मक सीमान जेहने मोहक होइत तेहने मोहक दुनू समाजक मनमे। एकक मनमे जे दस गोटे एकठाम बैसि रामलीलाक आनन्द लेब तँ दोसराक मनमे नव समाजक बीच जँ नव-कलाक प्रदर्शन नै हएत तँ समाजकेँ जे भेटोन्ह मुदा कलाकार तँ शंखे डोलबैत रहि जेता। अपन सत्ताइसो मेड़ियाक संग दू बजे , बेरू पहर टाएर गाड़ीपर ,साज-बाज ,पर्दा-पोस ,बाँस-बेलन नेने पहुँचलाह। स्कूलक बगलक गाछीक जगह बूझले रहनि। एक्के-दुइये गौआँ सेहो पहुँचए लगलाह। जाबे टायरक सामान उतारि परतीपर रखैत ताबे लोको गोलिया गेल। देखले गरीब झा आ देखले संतोखी दास। नजरि पड़िते संतोखी दास पुछलकनि -

"भाय ,शंभुकेँ डटि कऽ पहुँनाइ करौलिऐ?"

संतोखी दासक बात सुनि गरीब झा बजलाह -

"एते दिन शंभुक संग रहितो नै परेखि सकलौं जे शंभु कि चाहैए।"

संतोखी -"मतलब?"

गरीब -"यएह जे केकरो शुरूहेसँ बाजा दिस नजरि रहल तँ केकरो नाच

दिस तँ केकरो गान दिस। ई शंभु तँ अद्भुत अछि जे बाजो दिस ओहने झुकाउ देखै छिऐ आ अवाजोक चर्चे की?''

संतोखी-''आब तँ गप-सप्प होइते रहत। जखन आबि गेलौं तखन-अंङस-मंङस नहिये हएब नीक। कि विचार अछि?''

गरीब -''अखन धरिक यएह रहल जे आइ खुँटा-खुट्टी गारि लेब। काल्हि परदा-पोस लगा लीला शुरू कऽ देब।''

''हद करै छी गरीब भाय। अहाँ सभ खाली देखबैत रहियौ गौआँ सभ एक्के घंटामे सभटा तैयार कऽ देत। मुदा जखन गाम आबि गेलौं तखन एको दिन नागा करब समैक संग धुड़तै हएत?''

तइ बीच समाजमे एकटा हवा उठि गेल। हवा ई जे कियो बाजि देलकै जे जइ गौआँकेँ पच्चीस-पच्चीस अनगौआँक भोज करबैक इज्जत छै ओ दसटा ब्राह्मणकेँ भोजन नै करा सकैए। मुदा गामे छी। खड़ौआ जौरक बान्हसँ बनल घर-सभ। एहेन खुऔनिहार चारि गोटे। चारू तैयार जे असकरे देब। नवका विवाद चारू गोटेक बीच। गरमा-गरमीक हवा वहए लगल। कियो भोजक संग बुधियारी जोड़ि बजैत तँ कियो बाप-दादाक खुनेलहा पोखरि जोड़ि बजैत। कियो जाइतिक भगैत गबैत तँ कियो हाकिम बेटाक। चारू बात सुनि-सुनि गौआँक मन घोर-मट्ठा। जे ई चारू केहेन बेर पड़क भदबा बनि गेल। केहने सुन्दर सभ कियो एकठाम बैसि रामलीला देखतौं तँ चारू कोट-कचहरीक बाट पकड़ैपर उताहुल। जे गाम कहियो ने देखने छल से देखैले तनफन करैत।

मुदा चारू ,गौआँ-अनगौआँ मिलि पनचैती मानि लेलक। सबहक बीचमे चारू गोटे पहुँचलाह। गौआँ सभ दोहरी लाभ देखि अनगौआँक आदर आ गौआँमे देखारसँ बाँचब -गरीब झाकेँ मानि लेलनि। मने मन गरीब झा सोचलनि जे कोन बड़का पहाड़ अछि जे सभ पाछू ससरि रहल छथि। कियो पहाड़ देखि डरैत तँ कियो बच्चा माए-बापक संग खुरपीसँ खाधि खुनि खेलाइत। मुदा लगले मन घुमलनि जे जँ चारू गोटेकेँ कहि दियनि एक-रंग कऽ सभ चीज दऽ दियौ तखन तँ खीराक फाँक बनि जाएत। ऊपरसँ चिक्कन आ भीतर फाँक। नीक हएत जे हुनके सभकेँ पूछि-पूछि बाँटि दियनि। मुस्की दैत बजलाह -

''भाय ,अनगौआँ छी तँए ई नै कहब जे छठूसँ छठुपाना केलक। जिनका जे चीज छन्हि ओ ओ चीज देथुन। अपना खेतमे जिनका सतरिया-बासमती धान भेल होन्हि ओ चाउर देथुन। जिनका बाड़ीमे तरकारी उपजैत होन्हि ओ तरकारी देथुन। जनका खूँटापर गाए-महीसि होन्हि ओ दूध-दही देथुन।''

सभ किछुक जोगार घंटे भरिमे भऽ गेल। आइसँ रामलीला हएत ई समाचार

जेना सबहक छाती धड़कबए लगल। जिनगी विषयक कथाक रंगमंच मास दिन धरि गौआँ देखताह। किएक ने खुशीक हिलकोर उठतनि। आरती चढ़ौआक बरखा सोहे बरसबे करत।

मास दिन शंभु संगे-संग खटल। आइ समाप्त भऽ रहल अछि। काल्हि सभ कियो दोसर गाम चलि जेता। आड़िपर शंभु ठाढ़ भेल सोचि रहल अछि। समाज बदलि कहाँ रहल अछि। बढ़ि रहल अछि संतोखी दासक मनमे उठैत जे छोटसँ पैघ दुनियोमे प्रवेश केनिहार -जाइबला -कें किछु कहब कठिन अछि। तहूमे आब तँ सहजहि नेनासँ चफलगर भेल।

जाइकाल कमल जीक नोर टघरि रहल छन्हि। वएह नोर जे ससुरारि जाइवाली रहै छै।

साल भरि बितैत-बितैत शंभु रामलीलाक प्रमुख कलाकारक श्रेणीमे आबि गेल। ओना प्रमुखताक कारण उत्कृष्टता होइत मुदा शंभुक प्रमुखताक कारण भेल बहुआयामी। जहिना आद्राक पहिल बर्खामे ओहन किसानक मन अधिक छटपटाइत जेकरा एक संग अनेको खेती करैक रहै छै। फसल लगबए लेल मन छटपटाए लगै छै जे अगहनी धानोक बीआ आ चौड़ियो खेत अछि ,गरमा धानक सहो रंग-रंगक बीआ अछि ,जे मौसमक हिसावसँ नै समैक हिसाबसँ होइत अछि। जौं ओ बिआ समैपर नै उखारि लगौल जाएत तँ उपजा प्रभावित हएत। मुदा बर्खा चटकने तँ चौड़ीक खेतिये बुड़ि जाएत। मुदा शंभुकेँ से नै भेल। ढोलक , हारमोनियम बजबैसँ लऽ कऽ नचनाइ पार्ट खेलनाइ तकमे शामिल भेल। जइसँ पार्टीक भीतर शंभुक महत बढ़ि गेल। कोनो आदमीक अभिनयकलासँ लऽ कऽ वाद्यकला धरिक -अनुपस्थितिक पूर्ति शंभु करए लगल।

कमलजीक रामलीला पाटीमे शंभु सात बर्ख रहल। ओना अधिक उमेर भेने कमल नरायण पार्टी खसा लेलनि। गामोक स्थितिमे ठनका खसलनि। सन्मुख कोसीक मुँह पछिम मुँहेँ जोर केलक। जइसँ गामक छिड़िआएल बास समटा कऽ घोदिया गेल। खेतबलाक स्थिति बिगड़ि गेलनि। कतेको परिवार गाम छोड़ि परदेश रहए लगलाह।

बीस बर्खक शंभु अपन ओकाइत -लम्बाई-चौड़ाइ -बुझए लगल। मनमे रंग-रंगक विचार उठए लगलै। मुदा सभ गुण होइतो शंभुक मन उपशास्त्रीय संगीत दिस अधिक झूकल। जेहने स्वर तेहने कला। सामंत सबहक टुटैत स्थिति शास्त्रीय संगीतकेँ प्रभावित केलक। ओना प्रभावित उपशास्त्रीय सेहो भेल मुदा कम। दरवारी दासक लाट पकड़ि शंभु राजक गबैया बनि विभूषित भऽ गेल।

हजारो लोकक भीड़मे जहिना कियो अपन प्रेमी देखि सभ किछु बिसरि जाइत तहिना संगीत प्रेमी शंभुदास घर-परिवार बिसरि बिआह नै केलक। ढहैत बेवस्थाक तरमे शंभुओदास पड़ि गेल।

बेवस्थाक बेवस्था चलैत मिथिलाक धरतिये जकाँ मिथिलाक कला सेहो राँइ-बाँइ भऽ छिड़िया-बितिआ टूटि-फाटि गेल।



फाँसी

काल्हि बारह बजे बलदेवकेँ फाँसी हएत, रेडियो-अखबार कान-कान जना देलक अछि। जहिना बलदेव बुझैत तहिना जहलक उत्तराधिकारियो बुझैत अछि। जहिना बलदेवक परिवार बुझैत अछि तहिना सर-समाज, दोस-महिम सेहो बुझैत अछि। सबहक मन बारह बजेपर अॅटकल। वएह बारह बजे दिन वा राति अपन प्रखर रूपमे दिशा दिस मैदानक रस्ता धड़ैत अछि।

जहलक एक नंबर सेल घर। जे घर ओइ अपराधीकेँ ओइ बीच भेटैत अछि जखन न्यायालयसँ फाँसीक तिथि निर्धारित होइत अछि। सेलक बुनाबटियो, आन सेलो आ वार्डोसँ भिन्न बनल अछि। ओना सेलक बुनाबटि विचित्र अछि मुदा आनसँ अलग तँ अछिये। कोठरीनुमा घर, कोठरियेक आँट-पेट सेहो अछि। एक कोठरी ओहन होइत जे नमहर घरमे बनैत आ एक कोठरी ओहन होइत जे घरे कहबैत अछि। एक नंबर सेलो तहिना बनल अछि। चिमनीक एक नम्बर ईंट, क्यूल-लक्खीसरायक बीचक पथराएल बालु, दू-एक सिमटीक जोड़सँ देबाल बनल अछि। सात एस्क्वाइर फुटक घर, जे घरक कोठरीओसँ हीने अछि। पौने दू फुट आगूक दरबज्जा, खिड़की दरबज्जा नै, जे भीतर-बाहर अबैत-जाइत अछि। लोहाक बनल केबाड़ लगल अछि। शेष कोनो देवालमे ने खिड़की-खोलिया अछि आ ने पूब-पछिम दिशा देखबैक कोनो दोसर साधन अछि। एक तँ ओहुना जइठाम सभ किछु -दिशा-वोधक- रहैत अछि तहूठाम दिशान्स लगि जाइ छै। आ पूबकेँ पछिम, पछिमकेँ पूब कहए लगै छै। जिनगीक पूर्ण लीला बलदेवकेँ ओइ कोठरीनुमा घरमे पनरह दिनसँ होइत अछि। ओना तइसँ पूर्वो -१५ दिनसँ पहिने- सेहो सात नम्बर सेलमे तीन सालसँ रहैत आबि रहल अछि।

ओना एक नंबर सेलमे एलापर एतेक सुविधा जरूर भेट गेल छलै जे पहिनेसँ नीक भोजन, नीक ओढ़ना-बिछौना भेट गेल छलैक। भलहिं घरमे नेहिये बिजलीक तार आ ने बौल लागल मुदा दरबज्जा सोझे एहन बौल लागल छलै जइसँ कोठरियोक भीतर इजोत पहुँचैत छल। मुदा कोठरीक बाहर स्पेशल सिपाहीक बेवस्था सेहो भऽ गेलै।

बारह बजे रातिक घंटी टावरक मुरेड़ापर बाजल। राति-दिनक पाशा बदलैक समए भऽ गेल। जहिना भूत-वर्तमान आ वर्तमान भविष्यमे बदलैत अछि सएह मुहूर्त अछि। राति-दिनक बाट पकड़त मुदा दूत-भूत एतेक प्रबल जे आरो बेसी उग्र बनैत अछि। जहिना रातिक जनमल बच्चा दिनेक होइत तहिना बलदेवक राति सेहो दिने भऽ गेलै। राति-दिन भऽ गेलैक आकि निनिये देवी विध्नवादिनीक

संग डरे पड़ा गेलखिन, से नै कहि। ओछाइनपर पड़ल बलदेव उठि कऽ बैस कोठरीक चारू देवाल दिस तकलक। अन्हारमे सभ हराएल बूझि पड़ल, किएक तँ बाहरक बिजलीक इजोत सेहो अन्हार चद्दरि ओढ़ि ओहन भऽ गेल जे अपनो भरि नै देखि पड़ैत। देह दिस तकलक। हाथ-हाथ नै सुझैत, बलदेव अजमा कऽ घरक मुँह लग ससरि कऽ पहुँचल। हाथ बढ़ा देखलक तँ बूझि पड़लै जे यएह घरक मुँह छी। घरक मुँह देखि मनमे बिसवास जगलै जे ऐठामसँ अन्हार-इजोतक सभ किछु देखब। हिया कऽ बिजली खूँटामे लटकल बौलपर नजरि देलक। मरियाएल इजोत तइपर असंख्यो मच्छर-माछी जान गमबैले तैयार नाचि रहल अछि। खूँटापर गिरगीटक झुंड। मुँह बाबि खाइले तैयार आसन लगौने अछि। निच्चामे बेंगक जेर कुदैत। तइ बीच मच्छरक जेर गीत गबैत फाटक टपि भीतर पहुँचल। मुदा बलदेवक धियान मच्छरपर नै गेल। जहिना शरीरमे अनेको रोग रहलापर बड़का रोग छोटकाकेँ चापि रखैत तहिना बलदेव बाहरक मच्छरक भोगकेँ दाबि देलक। केना नै दाबैत, जइठाम जिनगीक खूनक कोनो महत नै तइठाम मच्छर कत्ते पीबे करत। मुदा तहूसँ बेसी बलदेवक मनमे जागि गेल जे जखन बारह बजे अन्ते भऽ रहल छी तइ बीच जँ कनियो उपकार दोसरक भऽ जाइ छै तँ ओहो धर्मे छी कि ने? बलदेवक मनमे पनपए लगलै।

तखने पएर दाबि सिपाहीक झुंड सेलक चारूकात चक्कर कटए लगल। अन्हारमे सभ हराएल। पएरक धमकसँ बलदेव बूझि गेल। जहिना गाए-महिंस मनुक्खक संग कुत्तो-बिलाइक चालि अन्हारोमे परेखि लैत तहिना बलदेवो परेखिलक। मुदा सभ चुप्प। बलदेवक मनमे उठलै, जब कि बारह बजेमे फॉसियेपर चढ़ब तखन किअए एते ओगरबाहिक जरूरति छै। एक तँ ओहिना बड़का छहर-देबालीक बीच जेल बनल छै, तइ बीच वार्ड-सेल बनल छै, तइ बीच एते ओगरबाहिक कोन जरूरति छै। मुदा लगले विचार बदलि गेलै। वार्ड सभक कैदी तँ अबैत-जाइत रहैए। सभ दिन दू-चारि एबो करैए आ निकलबो करैए। मुदा हम तँ आब निकलि नै पाएब। निकलबे नै करब आ कि जिनगिये अंत भऽ रहल अछि। आँखि उठा आगू तकलक तँ बूझि पड़लै जे साल-महिनाक कोन गप जे मात्र किछु घंटाक लेल छी। जइ दिन फाँसीक आदेश न्यायालयसँ भेल ओही दिन किअए ने फाँसियो भऽ गेल। अनेरे कोन सोग-सन्ताप देखै-भोगैले पनरह दिन जीआ कऽ राखल गेल अछि। मन शान्त केलक। शान्त होइते, जहिना पोखरिक अगम पानिकेँ पूर्बा-पछबा हवा डोलबैत रहैए तहिना मन डोललै। डोलिते उठलै, फाँसी किअए हएत? प्रश्नपर नजरि अँटकिते उठलै जे फाँसीपर सपूत-कपूत दुनू चढ़ैए। फेर उठलै जे तइ सपूत-कपूतमे हम की छी?

अन्हर उठैसँ पहिने जहिना हवा खसि पड़ैत अछि, वायुमंडल शान्त भऽ

जाइत अछि तहिना बलदेवक मन सेहो शान्त भऽ गेलै। कोनो तरहक तरंग नै। मुदा लगले मनमे उठलै जे जिनगीक अंतिम सीमापर पहुँच गेल छी। जहिना गामक सीमा टपिते दोसर गाम आबि जाइत अछि तहिना जीवनलोकसँ मृत्युलोक चलि जाएब। मुदा एते तँ हेबे करत जे अखन ठेकानल जिनगी अछि पछाति बेठेकानलमे पहुँचि जाएब। फेर उठलै, जीवनलोक तँ खाली मृत्युक लोक नै छी। जीवनो तँ लोक छी। जहिना कोनो जंगलसँ पड़ाएल जानवर दोसर जंगलक सीमापर पहुँचते चारूकात नजरि उठा कऽ देखैत जे रहै जोकर अछि वा नै, तहिना जीवन-मृत्युक सीमापर बलदेवक मन अँटकि गेलै। धरतीपर जहिना एक-दिशासँ दोसर दिस बहैत धार रास्ताकेँ बाधित कऽ दैत तहिना बलदेवकेँ जीवन धार बाधित कऽ देलक। आगू टपैक आशा नै देखि बलदेव बामा-दहिना दिशा पकड़ैत विचार केलक। एक दिस पहाड़सँ निकलैत धार धरती टपैत समुद्रमे मिलैत तँ दोसर धरती टपि समुद्रमे मिलैत। आगू तँ किछु घंटा शेष अछि मुदा पाछू तँ सौंसे जिनगी पड़ल अछि। कि एक बेरक फाँसी फाँसी, छी आकि फाँस चढ़ल जिनगीक फँसरी फाँसी छी। मन ठमकि गेलै। मुदा लगले मनमे उठलै जे गुमसुम भऽ समए काटब नीक नै। कत्तेकाल पहिने बारह बजेक घंटी बजल। जहिना धरतीपर आएल बच्चा आस्ते-आस्ते सकताए लगैत तहिना बलदेवक मन सेहो सकताए लगलै। मन पड़लै पनरह दिन पहिलुका फाँसीक सजए। मनमे खौंझ उठलै जखन फाँसीक आदेश भेल तखन फेर पनरह दिन जहल किअए भेल? कोन अपराधक फल भेटल। जौं ओही दिन फाँसी भऽ जाइत तँ पनरह दिन जे सोग-सन्ताप भेल से तँ नै होइताए। ततबे नै अपनो ऊपर अनेरे भार किअए बढ़ौलक? फेर मनमे उठलै जे अनेरे ओझराइ छी। मन शान्त केलक। शान्त होइते मनमे उपकलै, सपूत बनि दुनियाँ छोड़ब आ कि कपूत बनि। कियो हिलसैत, पुलसैत दुनियाँ छोड़ैए आ कियो विलखैत, डुमैत दुनियाँ छोड़ैए। मुदा जे हिलसैत-फुलसैत छोड़ैए ओ छोड़ैत कहाँ अछि? ओ तँ जीवात्माकेँ एहेन चुहुटि कऽ पकड़ैत अछि जे छोड़ौनौं नै छुटैत अछि। मुदा हम तँ से नै छी। फेर मन घुमलै। दुनियाँ बड़ीटा अछि.., बड़ छोट अछि...।

बड़ीटा ओकरा लेल छै जे बरी पाबए चाहैए। मुदा बरी तँ भोजोक अंतिम पराव नै, घरक मध्य सेहो छी। तखन किअए ओकरा लिअ चाहैए। फेर मन ठमकि गेलै। अनेरे अछाहे कुकुड़ भूकब नीक नै। अपनो तँ संसार अछि। जइमे अकास-पताल, चान-सूर्ज, नदी-सरोवर सभ किछु अछि। तखन अपन छोड़ि दोसराक देखब अपनासँ दूर हएब हएत। अपन कर्म, अपन धर्मक मर्म बुझब उचित हएत। जाबे से बूझि दुनियाँक रंगमंचमे नै उतरब ताबे कौआ कान

नेने जाइए, तइ पाछू दौगब हएत। अपन रंगमंच आ अपन अभिनय लग अबिते मन ठमकि कऽ ठाढ़ भऽ गेलै। ठाढ़ होइते अनायास मनमे उठलै। अभिनाइयो तँ देखिनिहारोक लेल आ संसारोक लेल रंग-बिरंगक, कतेक स्तरक होइत अछि। मुदा कहल तँ अभिनाइये जाइ छै। कियो लीला रचि अभिनय करैत, तँ कियो गुण-गुणाइत अभिनय करैए। कियो मूक भऽ करैत अछि तँ कियो प्रेमावेशमे करैत अछि। केना एकरा बिलगाएब? एक दिस चित्र-विचित्र बनल अछि तँ दोसर दिस कुचित्र सेहो बनल अछि। ओझराइत मन झमान भऽ झमा उठलै। अनेरे ओझड़ेने समए ससरि जाएत। गनल कुटिया नापल झोर जकाँ समए बचल अछि, तेकरा जौं ओझरौठेमे राखब सेहो नीक नै। बारह बजेक घंटी कतेखान पहिने बाजि चुकल अछि। हाथमे जौं घड़ी रहैत तँ ठीक-ठीक समैयोक बोध होइत, सेहो नहिये अछि। जइ दिन जेलमे प्रवेश केलौं तेही दिन जहलक मुँहपर जमा कऽ लेलक। जइ दिन निकलब तइ दिन देत। मुदा निकलब कहिया? आइ तँ फाँसियेपर लटकि जिनगीक विसर्जन करब तखन घड़ी केना लेब आ पहिर कऽ समए बुझब? मुदा तँए कि जइ गाममे मुर्गी नै रहै छै तइ गाममे भोर नै होइ छै? पाँच-दस मिनट आगू-पाछू, अनुमान तँ कऽ सकै छी। मुदा काजक संग जे समए चलैए ओकर अनुभव आ बिनु काजक अनुभवोमे तँ अन्तर होइते अछि। काजक दौड़क अनुभव बेसी बढ़ियाँ होइत अछि। किएक तँ काजक संग समए सटि चलैत अछि। मुदा हमरा तँ सेहो ने अछि। बस दू बेर खाइ छी, ढेंग जकाँ ओंघराएल पड़ल रहै छी। कखन जागल रहै छी आकि सूतल रहै छी, से आनक कोन बात जे अपनो नै बूझि पबै छी। पछतेनौं तँ किछु ने भेटत। फेर मनमे उठलै- फाँसी किअए?

किछु समए गुम्म रहलाक पछाति अनायास मनमे उठलै जौं भक्ति-भावसँ समए कटने रहितौं तँ हँसी-खुशीसँ चढ़ितौं, से नै केलौं तँ कुहरि-कलपि चढ़ब। जहिना शक्तिक स्रोत ज्ञान छी तहिना ने भक्तिक स्रोत श्रमो छी। फेर मन ठमकलै। जौं भक्तिक स्रोत श्रम छी तँ हमहूँ तँ श्रमिक छिहे। जौं से नै रहितौं तँ एत्ते खेल केना केलौं। अचताइत-पचताइत मुँहसँ निकललै। से तँ जरूर केलौं। एक पसीना पत्थर तोड़ैमे चुबैए, दोसर पत्थर बनबैमे चुबैए। हँ से तँ दुनूमे चुबैए। मुदा कि दुनूक मिठास एक्के रंग छै? से तँ नै छै। तखन श्रम -सेवा- केकरा कहबै? फेर बलदेवक मन ठमकि नजरि उठा-उठा चौकन्ना होइत चारू दिस तकए लगल। मुदा अन्हारमे किछु देखबे ने करए। मनमे उठलै, अनेरे श्रमक पाछू बौआइ छी। गेल जमाना फेर नै लौटए। आब तँ जिनगीक अंतिम खाड़ीपर चलि एलौं। ने श्रमिक छी आ ने श्रमक सिरजन कर्ता। अनेरे

अनका पाछू बौआए रहल छी। सभकेँ अपन-अपन जिनगी छै। अपन-अपन जगह छै, जे समैयोक आ प्रकृतोक प्रभावसँ प्रभावित होइत रहै छै तँए अपन बात जेना लोक अपने बुझैत अछि तेना आन थोड़े बूझत। चारू दिससँ घुमैत-फिड़ैत मन अपना लग बलदेवकेँ एलै। मनमे खौंझ उठलै। यएह मन छी जेकर किरदानीसँ कियो भगवान बनि जाइए आ कियो हत्यारा बनि दुनियाँक सोझामे फाँसीपर लटकि जाइए। मुदा कहबै केकरा आ सुनत के? मन ठमकलै। हत्यारा के? हत्या की? आ के पैदा करैए? जहिना कम माछी-मच्छर रहने खेबो काल आ सूतबो काल ओते परेशानी नै होइत जते अधिक रहने होइत। बलदेवक मन फेर ओझरा गेलै। ओझरी छुटिते अपनापर ग्लानि हुअए लगलै। हमहूँ तँ दुनियाँक चुनल अपराधीमे छी। जिनगी भरि अपनेमे बेहाल रहलौं मुदा बेहाले केना रहि गेलौं, से कहाँ बूझि पेलौं। जहिना धरतीकेँ बेहाल भेने सृजन शक्ति कमि जाइ छै तहिना ने हमरो भेल। मन उफनि गेलै। चिचिआइत बाजल-

''हम अपराधी छी, अपराध केने छी। डकैतीक संग हत्या केने छी। अखने हमरा फाँसी हुअए?''

पितोक मास्चर्य ओइ बेटासँ ओही दिनसँ कमए लगै छै जइ दिन सुपात्र कुपात्र दिस जाइत देखै छै। तहिना बलदेवक कलपैत आत्मा मनसँ हटि रहल छै। अनधुन मुँह पटकि रहल छै। अपराधी छी, अपराध केलौं। एक अपराध नै, अनेको, एक दिन नै जिनगीयो भरि। बहुत विलमि कऽ फाँसी भऽ रहल अछि। बहुत पहिनहि भऽ जाइक चाहै छल। मुदा भेल किअए नै?

एकाएक मुँहमे पर्दा लगल हुमड़ैत मन पाछू दिस ससरलै। अंतिम हत्या आ डकैतीक फल फाँसी छी, मुदा आरो जे जिनगी भरि केलौं, तेकर की भेल?

मध्यमासक स्नान जहिना आन मासक स्नानसँ अधिक सुन्दर, अधिक शीतल होइत तहिना जिनगीक अपराधक बीच बलदेवक मन अँटकि गेलै। एक दिस जिनगी दोसर दिस अपराध। शीतल भेल शान्त मनमे उठलै, कि हमर जन्म अपराधिये बनैक लेल भेल छल जे अपराधीक जिनगी बितेलौं। मुदा बुझियो कहाँ पेलौं जे अपराध करै छी, अपराधी बनै छी। ओझराइत मनकेँ सोझरबैत बलदेव जिनगीक एक-एक दिन आ एक-एक घटना मोन पाड़ए लगल। मुँहसँ निकललै -

''अपन जिनगीक बात जत्ते अपना मनमे अछि ओत्ते थोड़े दोसराकेँ हेतइ। सिर्फ हत्ये-लूट टा तँ नै केने छी, माए-बहिनिक संबंध सेहो तोड़ने छी।''

मन कलपि कऽ बजलै -

''एकबेर नै हजार बेर फाँसी हेबाक चाही।''

मन बेकल हुअए लगलै। केकरा ले केलौं? ई बात मनमे उठिते धियान

परिवार दिस बढ़लै। अंतिम दिन पत्नी आ बेटाक दर्शन हएत? ओ सभ बेचैनीसँ भेँट करए जरूर औत। मुदा कि जहिना परिवारमे भेँट होइत छल तहिना हएत? से केना हएत? सिपाहीक घेरावंदीमे हम रहब आ ओ सभ हटि कऽ कातमे ठाढ़ रहत। मन घुमलै। अनेरे किअए कियो भेँट करए औत? कोन मुँह देखत आ कोन देखौत। तइसँ नीक जे भने हमहूँ हराएल छी आ ओहो सभ हराएले रहए। दुनियाँक सभ तँ नै ने चिन्हतै-जनतै। जौं समाजमे लोक ओंगरी देखौते तँ समाज छोड़ि दोसर समाजमे चलि जाएत। जखने एक समाजसँ दोसर समाजमे जाइए तखने पछिला समाजक बान्ह टूटि जाइ छै। बान्हक भीतर बनल समाज अपन हितक बात सौचैए। मुदा समाज तँ समुद्र छी, जइमे घोंघा-घोंघीसँ लऽ कऽ गोहि-गमार तक छै। बलदेवक मन ठमकि गेल।

जहिना जन्म-जन्मान्तरसँ वा कुरीति-कुसमए पाबि बाँसक छाँहमे जनमल लतामक गाछ सेहो समए पाबि कलशि जाइत तहिना बलदेवक मन कलशल। अबोध बच्चाक हाथसँ गिरल अइना, माए-बापक दुख जकाँ नै मुदा तैयो टुकड़ी बीछि-बीछि जोड़ैक कोशिश करैत अछि तहिना बलदेवक कलशल मनमे उपकलै। तीन बर्ख जहल एला भऽ गेल। राता-राती घरसँ पकड़ा बन्दूकक हाथे जहल आएल रही। नव-नव लोक, नव-नव जगहसँ भेँट भेल। जहिना देशक मिथिलांचलोक वासी दुनियाँक कोण-कोणक बीच बसि अपन पूर्ब परिवारक स्मरण करै छथि तहिना बलदेवक मनमे परिवार सेहो आएल। मुदा लगले जहलक परिवार अगुआ गेलै। एक-फाटक टपि दोसरमे घेराएल रही। तलाशीक संग सभ किछु घेरा गेल। बाहरसँ आओत नै अपने घेराइये गेलौं। मुदा तैयो नव-नव चेहरासँ भेँट भेल। भीतर अबिते -वार्डमे- घूस्सा-मुक्काक सलामी भेल। जहिना अखड़ाहापर उतरैत खलीफाकेँ पानि उतरए लगैत तहिना उतरल। जिनगीक पहिल बेर जहल देखलौं। स्वागतक बाद मेट लग पहुँचाओल गेलौं। अखड़ाहा बदलने खलीफाक पानियो बदलि जाइ छै। मुदा.....। मेटक रजिष्टरमे नाओं चढ़िते ढेर हुकुम एक संग उठल। झाड़ू लगबैक ड्यूटी, पैखानामे पानि पहुँचाबैक ड्यूटी इत्यादि-इत्यादि। काजक भारसँ मन दबाइत जा रहल छल आ कि मसलनपर पसरल मेटक हुकुम भेल -

''एम्हर आ, पहिने जाँत तखन दोसर काज हेतइ।''

अवग्रहमे फँसल मन हल्लुक भेल। मनमे खुशी उपकल जे कनियो-कनियो कान ऐंठैत तँ काने उखड़ि जइतए। जान बचल तँ लाख उपाइ। एक करोट घूमैत मेटक मैनजन बाजल -

''पहिल दिन छिऔ, आइ तोरा खेनाइ नै भेटतौ।''

जहिना मुर्दापर अस्सी मनसँ नब्बे मन जारनि चढ़ि जाइए तहिना चढ़ि गेल। असबिसो नै कऽ सकलौं। मुदा तैयो सबुर भेल जे नै खाइले देत, सुतैक तँ जगह भेट गेल कि ने। तइ बीच मैनजनक हुकुम भेल -

"कोन केसमे एलेहें?"

केसक नाओं सूनि मन दलदल भऽ गेल। जहिना सोग-पीड़ामे नोर बहा केकरो सान्त्वना दैत काल होइत, तहिना। जहलसँ निकलैक आशाक अँकुर बलदेवकेँ जगलै। हलसि कऽ बाजल -

"सरकार, डकैती आ खून संगे छै।"

डकैतीक संग खून सूनि मेटक मन ठमकल। अधिक दिनक संगी हएत। तँए दोसतिये करब नीक। पड़ले-पड़ल हुकुम चलौलक -

"नवका कैदीकेँ खइयो आ सूतैयो ले दिहक।"

जहिना जिनगीक सुख, खाएब-सूतबमे अबै छै तहिना सूतबक आश देखि बलदेवक मनमे खुशी उपकलै। खुशी उपकिते मन बौआए लगलै। तही बीच मेटक मुँहसँ फुटलै -

"तेलक शीशी छेबे करौ, काल्हिसँ गोदामे सँ लऽ लऽ अनिहें।"

गोदामक नाओं सुनिते वार्डमे गल-गूल शुरू भेल।

"नवका कैदीकेँ गोदाम केना जाए देब। ई अन्याय छी।"

एक कैदी ठीकेदारकेँ पुछलक-

"कि बात छिऐ हौ ठीकेदार भैया? एना किअए हड़बिर्ड़ो केने छह?"

ठीकेदार बाजल-

"तूँ अखन तड़ी-घटी नै बुझबिही।"

"से किअए हौ भैया, सुनने लोक सुनबो करैए आ नहियो सुनैए। बुझौने लोक बुझबो करैए आ नहियो बुझैए। पहिने बजबहक तब ने?"

"रौ बूड़िबक, सभ गप सभठीम बाजब नीक थोड़े होइ छै। नीको अधला भऽ जाइ छै आ अधलो नीक भऽ जाइ छै।"

"एकबेर अजमा कऽ देखहक। नरकोमे ठेलम-ठेल करै छह। बहरामे लोक किछु करैए तँ भीतर -जहल- अबैए। ऐठामसँ कतए जाएत। बाजह, तोरा कि बूझि पड़ै छह जे हम ओहिना आएल छी। आकि किछु कए कऽ आएल छी।"

ठीकेदारक बढ़ैत संगी देखि कठहँसी हँसि मेट बाजल-

"कि रे ठीकेदरबा, कथीक बमकी धेने छौ। सुन....।"

एक दिसि ठीकेदारकेँ अपन घटैत आमदनी मनमे नचैत तँ दोसर दिसि मेटक आदेश। घुसुकि कऽ ठीकेदार लगमे आबि फुसफुसा कऽ बाजल-

“मेट भैया, अहाँसँ कि कोनो बात छिपल रहैए। बुझिते छिऐ जे दू पाइ बचा कऽ गाम पठबै छी।”

ठीकेदारक बातसँ मेटक मनक आगि नै ठंढ़ाएल। मुदा हवाक लहकी जकाँ जरूर लागल। मनमे उठलै दस लंठ तखन ने महंथ, जँ से नै तँ असगर वरसपतियो फूसि। जहिना गुलाबी लाल आल-अड़हुल बनि जाइत, रंग बदलि अपराजित उज्जर-कारी बनि जाइत, दिन-रातिक खेलमे पूर्णिमा अमावस्या आ अमावस्या पूनो बनि जाइए तहिना बलदेवक मनमे जिनगीक जुआरि उठए लगलै। मुदा बिना जारनक आगि जहिना, पियासल बिनु पानि जहिना, खेतिहर बिनु खेत जहिना शक्ति रहितो हीनशक्तिका बनि जाइत अछि तहिना जिनगीकेँ सुता कऽ राखब छी। मुदा प्रश्नो तँ अजनव अछि। नीक भोजन, नीक नीन इन्द्रासनक मुख्य द्वार छी, तखन जिनगी....?

जिनगीक आवश्यक तत्वमे सूतबो -नीन- तँ अनिवार्य छी। तखन अधला केना भेल? मुदा जखन दस कोठरी बहारैक, साफ करैक भार रहत तखन एक्के कोठरी बहारबो तँ उचित नै। मेटक मन ठमकल। ने आगूक बाट देखै आ ने पाछू घूमि ताकब नीक बुझै। मनमे पुन: उठलै, कियो जोग क्रियामे जोगी बनि जोगिया जाइत अछि, कियो भोगी बनि भोगिया जाइत अछि तहिना तँ कियो काजोमे कजिया जाइए। मुदा कज्जी भेने तँ अबाहो भइये जाइए। जइठाम निरोगक बलि प्रदान होइत तइठाम अबाहक पूछ केतेक?

सामंजस करैत मेट भाव-विह्वल भऽ बाजल-

“बौआ ठीकेदार, ई दुनियाँ खेल छी। अपना सभ जहलमे तीत-मीठ करै छी, आ कियो खुलल धरती-अकास बीच खूलि कऽ खेलाइए। तइठाम तोहीं कहह जे कि नीक हेतइ?”

जहिना चोरोक भरमार अछि, किसिम-किसिमक चोर अछि, तहिना ने एकरंगाहो चोरक भरमार अछि। अमती काँटमे ओझराएल जकाँ ठीकेदार ओझरा गेल। जँ चोर चोरि कए कऽ आनए आ जरूरतमन्द लोककेँ दऽ दइ तखन ओकरा की कहब? चोरि तँ ओ ने होइत जे चुपचाप आनि चुपचाप रही। जइसँ कियो बुझबो ने करत आ तरे-तर मखड़ैत रहब। ठीकेदारकेँ गुम देखि मेट पुछलक-

“गुम किअए छह, ठीकेदार? तोरेपर छोड़ि देलियह जे जे तूँ कहबह सएह करब। जाधरि प्रेम-प्रेमसँ नै मिलि, आत्मा-आत्मासँ नै मिलि, मन-मनसँ मिलि कऽ नै चलत ताधरि भरि मन सिनेह कतए सिंगार करत।”

जबाबक तगेदा सुनि ठीकेदारक मनकेँ नै रहल गेलै बाजल-

''मेट भाय, जखन किलो-किलो तेल अहाँकेँ पहुँचैबिते छी, तखन नवका कैदीकेँ किअए गोदाम जाइले कहलिऐ?''

''बौआ, मालीमे तेल हथुड़ैत देखलिऐ, तँए बजा गेल।''

अपन बढ़ैत पक्ष देखि ठीकेदारक मनमे खुशी पनपल। खुशिआएल मन बजलै-

''जे आदमी आइये जहल आएल अछि, ओकरा सोझे गोदाम पठाएब नीक नै। चोर अछि कि छुलाह अछि, से अखन लगले केना बूझि जेबै? जखन हमरे हाथमे गोदाम अछि तखन अहाँकेँ अभाव नै हएत सएह ने?''

ठीकेदारक बात सुनिते मेटक मन तीआइर जालमे फँसल माछ जकाँ ओझरा गेल। चोर तँ चोर भेल, मुदा छुलाह कि भेल? मुदा मेट भऽ पूछबो नीक नै। जेकरे हाथ सभ किछु, सएह नै बुझै, मेटक मनकेँ घुरिअबए लगल। एते दिनसँ जहलमे छी, ठीकेदारक हिसाबे छुलाहोक संख्या कम नै अछि, मुदा नै बूझि पेलौं से केहेन भेल?

शब्दक मोड़ बदलैत मेट पुछलक-

''कते रंगक छुलाह जहलमे हएत ठीकेदार?''

जहिना नारद धरतीक रिपोर्ट अकासमे करैत तहिना ठीकेदार अपनाकेँ महसूस करैत बाजल -

''भाय सहाएब, तेहन घुरछी लगल सबाल अछि जे धड़फड़मे छूटि जाएत। तँए विहिया कऽ देखए पड़त। पान-सात दिनमे पूरा-पूरी कहि देब।''

बलदेवक मनमे जहलक पहिल दिन नाचए लगलै। पुन: मनमे उठलै, मात्र किछु घंटाक लेल दुनियाँमे छी, तखन एक्के दिनक काजमे घेराएल रहब नीक नै। मुदा कहबो केकरा करबै आ सुनबो के करत। आगू बढ़िते मनमे उठलै, जिनगीमे जे किछु जे करैए ओ आन देखौ, बुझौ आकि नै देखौ-बुझौ मुदा केनिहार तँ जरूर देखबो करैए आ बुझबो करैए। मनमे ग्लानि उठए लगलै। जहिना बर्खाक बहैत बुन्नक बेग, घेरामे घेरा जमा हुअए लगैए तहिना जिनगीक चलैत चक्रक चालि बलदेबक मनमे समटाए लगलै। कते भारी अपराधी छी जे धरतीक भार बनि गेल छी, जँ हमरा सन अपराधीकेँ फाँसी नै होइ, सेहो अनुचित हएत। मन असथिर भऽ गेलै। मनुखे ने मानवो आ दानवो बनैए। दुनियाँक ऐ रंगमंचपर कियो वीर बनि तँ कियो कायर बनि, पार्ट अदा करैए। मन ठमकलै। पुन: उठलै, जइ धरतीक भार उठबए आएल छलौं ओइ धरतीक भार बनि गेलौं, एना किअए भेल? की जिनगी भरि हाथ-पएर मारि रहलौं, सेहो तँ नै अछि। चलबैत आएल छी। तखन भार किअए बनि गेलौं। मन अँटकि गेलै। आइ जरूर बूझि

पड़ैए जे जिनगी भरि विपरीत -बे-पीरित- दिशा चलि कुमार्ग पकड़ि लेलौं मुदा से ओइ दिन कहाँ बुझलिऐ जे कुमार्ग छी आकि सुमार्ग। काजोमे कतौ बाधा कहाँ उपस्थित भेल? जहिना धारक धारा सिरासँ भट्ठा दिसि धड़धड़ाइत चलैए मुदा भट्ठाकेँ सिरा दिसि ससरैमे सामना करए पड़ै छै। केना-पानिये पानिकेँ रोकैत रहैए। मुदा बीचमे एकटा तँ होइ छै सिरोक पानि आ भट्ठोक पानि एक-दोसरसँ रोकाइत, ठाढ़ हुअए लगैत अछि। ताधरि ठाढ़ होइत जाइत जाधरि धारसँ ऊपर उठि धरतीपर नै छिड़िआए लगैत। मुदा धरतियोपर तँ दिशा अवरूद्ध करिते अछि। आइ धरि जे नै बूझि सकलौं ओ अपने केना बूझि पाएब। मुदा नै, जिनगीक अंतिम छोरपर भलहिं सब बात नै बूझि सकिऐ, मुदा किछु नव तँ जरूर बूझि पाबि रहल छी। जँ से नै, तँ कहियो नै बूझि पेलौं जे फाँसी हएत? हमहीं नै सभ एहने वृत्ति करैए, मुदा सभकेँ फाँसिये कहाँ होइ छै। जइठाम पुरजा-पुरजी मनुखक अंग बनल अछि, सभ अंगमे गुण-दोष छै, तइठाम केना जोड़ि कऽ चलाओल जा सकैए। समए पाबि कियो दौड़ए लगैए आ कुसमए पाबि थकथका जाइए। तइठाम सौंसे मनुख बनब, धीया-पुताक खेलौना नै छी। समए अनुकूल बनए-बनबए पड़ै छै, से नै तँ रग्गड़मे लोक रगड़ाए किअए जाइए।

बिसरि गेल बलदेव बारह बजेक फाँसी। मन आगू दिसि बढ़लै। जइठाम अधिकांश फूल ओहन अछि जे अनेको रंगक होइए। गंध, रूप, आकार समान रहितो एक-दोसराक अनुकूलो आ प्रतिकूलो अछि। तहिना गुलाबी आ लाल आलो-लाल आ गाढ़ो लाल बनैए तहिना तँ अपराजित करियो बनैए आ उजरो। आ जँ उजरोपर करिये रंग चढ़ि जाए, जेना एक-दोसरपर चढ़ैए। भलहिं थलकमल उज्जरसँ लाल भऽ जाए मुदा सभ तँ थलकमले ने छी।

जहिना फुलवाड़ी फलवाड़ी वा वंशबाड़ी टहललाक उपरान्त छाहरिमे बैसैक मन होइए तहिना बलदेवकेँ सेहो भेल। दुनियाँक दृश्य देखि मन हहिआए लगलै। ऐठाम के देत? केकरासँ मंगबै? जँ मंगबो करबै तँ जरूरी नै अछि जे नीके देत। अधलोकेँ नीक कहि दैत अछि।

जुग-जुगसँ रंग-बिरंगक फूल-फलक गाछ रहितो अखनो हराएल अछि आ हराइयो रहल अछि। भरिसक हराइ-जीताइक खेले ने तँ चलैए। बलदेवकेँ अपने-आपपर शंका उठलै। अखन जहलक सेलमे छी, अकलबेड़ामे फाँसीपर चढ़ब, कहीं बुइधे तँ ने भगंठि रहल अछि। भंगठले बुधि ने बताह कहबै छै। मुदा बिनु भंगठलोकेँ तँ बताह कहै छै। जहिना धान-रब्बीक रग्गड़सँ हाँसू मुरछि जाइए तहिना बलदेवक मन मुरछि गेलै। किछु समए निकलिते मनमे उठलै, अझुका बाद के हमरा मन राखत। कोनो कि हम असगरे मृत्युदंड पेलौं आकि

पबै छी। कियो गाछपरसँ खसि तँ कियो पानिमे डूमि, कियो बीखहा दबाइ पीब, तँ कियो विषैला साँपकट्टीसँ....?

मुदा हम तँ ओइ सभसँ भिन्न छी? दुनियाँक बीच अपराधी छी, ओहन अपराधी जेकरा दुनियाँ थूक फेक भगबैए। मनमे हुमड़ैत वायुक दरद बूझि पड़लै। केकरा लेल एते अपराध केलौं? कि अपना ले आकि परिवार ले। आइ के हमरा संग फाँसीपर चढ़त? जँ अपना ले केलौं तँ कि हाथ-पएर नै अछि। मनमे एकाएक समुद्रक शीतल समीरक झटका लगलै। झटका लगिते मुँहसँ निकलए लगलै- ओ फाँसी केहेन होइए, जे हँसैत अपने हाथे गरदनिमे लगबैए। ओहिना हँसैत मुँह लोकक सोझामे हँसैत रहैए। आ ओ फाँसी केहेन जेकरा थूक फेक लोक आँखि मूनि लइए। कियो सपूत बनि फाँसीपर चढ़ि अमर ज्योति जरबैत अछि आ कियो करिआएल इजोतमे अन्हराएल रहैत अछि। ऐ धरतीपर केकरो संग कियो नै जाइत अछि। सभ अपन-अपन स्वार्थक पाछाँ रहैत अछि। मन ठमकलै। मनमे उठलै, केना नै जाइत अछि। आत्माक संग आत्मा जरूर जाइत अछि। नीकक संग नीक आ अधलाक संग अधला तँ जाइते अछि।

रातिक अंतिम पहर। एक दिसि राति उसरैक बेर तँ दोसर दिसि दिन चढ़ैक समए। अर्द्धचेत बलदेवक भक्क तखन पुन: खुजल जखन अन्हारमे हराएल परुकी संगीक बीच अपन उपस्थिति दर्ज करबाक लेल घूटकल, अवाज देलक। अपन-अपन आवेशी अवाजमे गामसँ आन गाम, आ एकसँ अनेक किसिमक गाछपर एक जुटताक अवाज देलक। यएह समए छी जे गौतमो ऋृषिकेँ चन्द्रमा धोखा देलकनि। सराप चाहे गौतम जे देलखिन मुदा एते तँ भेबे केलनि जे आत्मासँ खसि देहलोकमे उतरि गेलाह। चन्द्रमामे जखन गहन लगि जेतै तखन अन्हारमे धरतीपर केकरा के चिन्हत?

परुकी सबहक अवाज सुनिते बलदेवक मनमे जहिना तरेगन रहितो भुरुकबा तरेगन आल-लाल ज्योति धरतीपर हँसैत आबि प्रकाशित करैक परियास करैत, तहिना बलदेवक मनमे सेहो पतराएल प्रकाशक आगमन भेलै। ज्योतिक आगमन होइते उठलै, कोनो कि हमरेटा फाँसी हएत आकि अदौसँ होइते एलै आ भविष्योमे होइत रहतै। मुदा हमरा जिनगीमे फाँसी चढ़ैक बाट पकड़ाएल कहिया?

बलदेव पाछू उनटि ताकए लागल। हम तँ ओइ दिन फाँसीक बाट पकड़ि लेलौं जइ दिन डगर छोड़ि डगहर पकड़ि लेलौं। डगरक तँ सीमा-सरहद होइ छै, निश्चित जगहसँ निश्चित जगह पहुँचैए, मुदा डगहर तँ से नै होइत। घुरिया-फिड़िया बौअबैत रहैए। मनुष्यक तँ डगर होइ छै, डगहर तँ पशु लेल होइ छै जे जंगलमे चरैले जाइत छैक। कि हमहूँ पशुए भऽ गेलौं। मुदा पशुओ तँ जीबे

छी आ मनुखो जीबे छी। दुनूक बीच आत्माक बास होइ छै। मुदा आत्माक बास रहितो पशु कहाँ बूझि पबै छै जे हमरा बीच आत्माक बास अछि। मुदा मनुष्यकेँ तँ से नै होइ छै। मनुष्ये नै जीव-जन्तुओसँ प्रेम करैत अछि आ प्रेम पबैत अछि। सहयोगी बनि जिनगीमे सहयोगो करैत अछि आ सहयोगक अपेक्षो रखैत अछि। जँ से नै तँ ओ अपन रहैक बेवस्था किअए ने कऽ पबैत अछि। जेकरा रहैक बेवस्था नै हेतै तेकरा जिनगीक गारंटी कि भऽ सकै छै। भलहिं बौआ-ढहना घास-पात वा अन्य भोज्य पदार्थ ताकि पेट भरि लिअए मुदा मनुष्य जकाँ तँ जिनगी जीबैक गारंटी नै कऽ सकैए। मनुष्य तँ पातालसँ पानि आनि पीब सकैए, धरतीसँ भोज्य पदार्थ उपजा सकैए। फेर मन ठमकलै। सोचती बन्न भेलै! सोचनशक्ति रूकलै!

जहिना कटल वा टुटल रास्ता देखि राही ठमकि जाइत जे ओइ पार केना जाएब। मुदा कटबो आकि टुटबो तँ रंग-बिरंगक होइत अछि। एक टुटब ओहन होइत अछि जइमे पानि-थाल-कीच होइत अछि आ दोसर ओहन होइत जे सुखले रहैत अछि। जइमे सावधानीसँ निच्चाँ उतरि पार कएल जाइत अछि। तहिना तँ पनिआएलो-थलाहमे होइत। कतौ अगम होइत कतौ कम होइत जइठाम कम होइत तइठाम कने कठिने सही मुदा पार तँ कएल जा सकैए। मुदा अगममे तँ डुमबोक आ गड़बोक संभावना बनले रहै छै। फाँसी लगा, गरदनि दाबि हमर प्राण लेत, मुदा फँसरियो लगा तँ लोक मरिते अछि। एहेन-एहेन परिस्थिति पैदा कऽ दैत जे बेवस भऽ लोक अपन गरदनिमे फँसरी लगा प्राण गमबैत अछि। कि ओ अपराधी छी आकि अपराधीक सजा पबैए। जखन ओ अपराधी नै छी, तखन अपराधीक सजा किअए भेटलै?

वोनक बाघ सिंह किअए दोसराक प्राण लऽ लऽ खून पीबैए? ओकर कि दोख छै? यएह ने जे ओकरा आगू ओ अब्बल अछि। फेर मन ठमकलै। कियो इनार-पोखरिमे डूमि मरैए, कियो आगि, पानि-पाथर, विर्ड़ोमे मरैए। ततबे नै कियो गाछपर सँ खसि मरैए, तँ कियो गाछपर चढ़ैत-उतरैत काल खसि मरैत अछि। प्रकृतिक तँ अद्भुत लीला अछि। क्षण-क्षण पल-पल बाटो पकड़बैत अछि आ धकेल-धकेल निच्चो करैत अछि। ऊपर-निच्चाक खाढ़ा बना जीवन-मृत्युक सीमा बनोनै अछि। एक तँ ओहिना आगिमे अगिआएल अछि, पानिमे पनिआएल अछि, हवामे हविआएल अछि, तखन केना परेखि पाएब। परखैले जेहेन आँखिक इजोत चाही तेहेन ने करिआएल बादलमे अछि जे बर्खासँ सिक्त करत आ ने डभिआएल धरतीमे अछि, जे धरतीक परतकेँ तेना सिर गछाड़ने अछि जे शक्तिहीन बना देने अछि। सूखल माइक छातीमे दूध कहाँ अछि जे चाहियो कऽ बेचारी दऽ

सकती। अन्हारो रातिमे, जखन हाथ-हाथ नै सुझैत, जखन अपन देहो हरा जाइत, देहक सभ अंग निष्क्रिय भऽ जाइत, तखनो तँ किछु रहिते अछि जे हँथोरियो-हँथोरि किछु दूर धरि लइये जाइत अछि। मुदा हम तँ सोलहन्नी आन्हरा गेलौं। जखन पीबैयो बला पानि बसिया गेने फेका जाइत, तहिना आइ दुनियाँसँ फेका रहल छी। अपन फेकाइत जिनगीपर नजरि पड़िते बलदेवक मन सहमि गेलै। ने आगूक बाट देखै आ ने पाछू घुसुकि पाबए। जहिना जिनगीक ओहि मोड़पर कियो चारू दिससँ दुश्मनसँ घेरा, हारि-जीतक तारतम्य नै कऽ पबैत तहिना बलदेव सेहो घेरा गेल। हारियो मानने दुश्मनक हाथे प्राण गमेबे करब, तखन प्राणक मोह राखि हारियो मानब उचित नै। तइसँ नीक जे सामना करैत सामनेमे जत्तेकाल ठाढ़ रहब ओत्तेकालक जिनगीक महत तँ आरो किछु हएत।

मुदा ठाढ़ रहि के सकैए? जेकर शरीर टी.बी., केन्सर सन रोगसँ जर्जर भऽ खोखला भऽ गेल रहैए ओ ठाढ़ केना रहि सकैए। पएरमे ओ शक्ति कहाँ छै जे ठाढ़ रखतै। बलदेवक मन विचलित भऽ गेलै।

किछु क्षण बाद मनमे उठलै, फाँसी तँ पोखरिक जाइठ सदृश जिनगीक छी। कियो अगम पानिमे डुबकुनियाँ काटि, माटि निकालि जाइठक मुरेड़ापर लगबैए तँ कियो किनछैरे-किनछैरमे पिछड़ि कऽ खसि, पिछड़ैत-पिछड़ैत अगम पानिमे डूमि, सड़ि-सड़ि सड़ैनिक गंध पसारैत अछि। मुदा जिनगीक अंतिम छोड़पर बुझनहि की हुअए? कमसँ कम जँ अपनो लेल केने रहितौं तँ कनैत किअए, हँसैत किअए ने दुनियाँ छोड़ितौं। जिनगीक अचूक उपाय कहाँ बूझि पेलौं।

सूर्योदय भऽ गेल। बलदेवक पत्नी कामिनी आ बेटा सुशील गुमसुम भेल अपन-अपन काजमे लागल, मुदा मनमे विचित्र स्थिति बनल रहैक। ने सुशील माएकेँ किछु कहैत आ ने माए बेटाकेँ। दुनूक मनकेँ बलदेवक फाँसी भीतरे-भीतर खिंचैत रहए। जइसँ मनक पीड़ा बढ़ैत रहैक। मनक पीड़ा ताधरि बढ़ैत जाधरि ओकरा निकालि दोसरकेँ नै कहल जाइत अछि। तखने अकासमे एकटा कौआ बाजल। कौआक बोलमे कामिनीकेँ अपशगुन बूझि पड़लनि, मुदा सुशीलकेँ सगुन बूझि पड़ल। गुम्मी तोड़ैत कामिनी बाजलि-

''बौआ, कौआक बोल केहेन ओल सन भेल।''

ओना बलदेवक फाँसी दुनूकेँ बूझल, मुदा तैयो मनकेँ फुसलबैत बहलबैत कामिनी बजलीह। माइक बेथाकेँ सुशील बूझि गेल, मुदा जिनगीमे एहिना सोग-पीड़ा अबै-जाइ छैक। छोटसँ-छोट पीड़ा होय आकि पैघसँ-पैघ होय मुदा समैक संग तँ लोक ससरिये जाइत अछि। जइसँ धीरे-धीरे कमैत-कमैत मेटा जाइत अछि। जहिना चलैले रास्ता चाही, से तँ नीक कि बेजाए अछिये। समाज तँ

ओहन समुद्र छी जइमे करोड़ो-अरबो जीव-जन्तु स्वछंद भऽ जीवन-यापन करैत रहैए, भलहिं एक-दोसराक बाटो घेरैत रहै छै, पकड़ि-पकड़ि खेबो करै छै मुदा, तैयो तँ रहबे करैए। नीक कि अधला, मनुख मनुखे बीच रहैत अछि। माइक पीड़ाकेँ सुशील भाँपि गेल। मने-मन सोचलक जे एक तँ बेचारीकेँ जिनगी भरिक संगी छूटि रहल छन्हि तइपर जँ हमहूँ ओहने बात कहबनि तँ आरो मनमे धक्का लगतनि। चोटपर-चोट लगने आरो अधिक वेदनाक अनुभव होइ छै। मुदा जहिना कड़ू लगने लोक पानि पीब कड़ू कम करैए तहिना जे दर्द मेटबैक उपाए करब तँ दर्द आगू नै बढ़ि या तँ ठमकल रहतनि वा कमतनि। समगम होइत सुशील माएकेँ उत्तर देलक-

''माए, कौआ तँ केहेन सुन्नर बाजल। कबकबाएल कहाँ?''

सुशीलक बात सुनि कामिनी बजलीह-

''आन दिन केहेन सुन्नर भिनसुरका बोली निकालै छलै आइ केहेन सबसबाएल बोल निकाललक।''

माइक हृदैक वेदनाकेँ सुशील भाँपि लेलक। ओना मनुष्यक हृदैक थाह नै छैक। एक दिस रूइयाक फाहा जकाँ बिनु हवोक उड़ैए तँ दोसर दिस जुआन पति, कमाइबला जुआन बेटाक मृत्यु, सेहो तँ सहबे करैए। बाट टुटल वा कटल होउ आकि छोटसँ नमहर खाधि होउ, लोककेँ चलैले तँ बाट चाहबे करी। एकठाम बैसलासँ तँ जिनगी नहिये चलै छै। कोनो-ने-कोनो उपाए तँ करै पड़ै छैक। कतौ लोक कूदि कऽ खाधि पार करैत अछि तँ कतौ बगलक माटि काटि वा छीलि कऽ ओकरा पहेटि चलैत अछि। कतौ एहनो होइ छै जे नमहर टुटान वा कटान रहै छै तँ ओकरा छोड़ि दोसर बाट बना लइए। माइक पीड़ाकेँ कमैत नै देखि सुशीलक मनमे उठल। एक-एक ढेपासँ सेहो बाटक खाधि भरल जाइत अछि आ खाधिक हिसाबसँ चेकान काटि सेहो भरल जा सकैत अछि।

सुशील बाजल-

''माए, हमरा तँ कौआक बोलमे सकुन बूझि पड़ल। जहिना केकरो कोनो वस्तु हरेलासँ दुख होइ छै तहिना ने भेटिनिहारकेँ खुशियो होइ छै। बीचक वस्तु तँ एकेटा रहै छै। एक्के बात वा वस्तु एकक लेल नीक अछि तँ दोसराक लेल अधलो भऽ जाइत अछि। जीवन रक्षक पतियो होइत अछि आ बेटो होइत अछि। मुदा एक काज रहितो दुनूक करैक विधिमे किछु-ने-किछु अन्तर तँ भइये जाइत अछि। वएह अन्तर तँ एक-दोसराक बीच अन्तरो पैदा करैत अछि।''

सुशीलक विचार कामिनीक विचारक सोझा-सोझी ठाढ़ भऽ गेल। कामिनीक विचार ठमकलनि। एकाएक ठाढ़ भेने जहिना शरीरमे झोंक अबैत छैक तहिना

कामिनीकेँ एलनि। मनमे झोंक लगिते डोललनि। डोलिते नजरि एक दिस पतिपर तँ दोसर दिस पुत्रपर विभाजित हुअए लगलनि। जइ छत्रछायामे अखन धरि रहलौं ओ तँ टूटि रहल अछि। मन निराश हुअए लगलनि, मुदा लगले आगूमे पुत्र देखि आशा जगलनि। पुत्रो तँ पतिये जकाँ प्रहरी होइत अछि। निराशाक मचकीमे आशाक आश लगलनि। हृदय सिहरलनि। सिहरिते पुत्रक प्रति प्रेम जगलनि। ओ प्रेम नै जे प्रेम माइक आशामे पुत्रकेँ होइत। बल्कि ओ प्रेम जइ आशामे पुत्रक आश्रयमे माए जीबैत छथि। जहिना जलसँ जलकण आ ओससँ ओसकण बनि पुन: जल वा ओसक सृजन करैत अछि, तहिना। निराश मनमे खुशीक संचार भेलनि। संचार होइते खिलैत कली जकाँ मन खिललनि। जहिना खापड़िमे मकै वा धानक लाबा एक्के-दुइये फुटि-फुटि रंग बदलैत तहिना मनक रंग बदलए लगलनि। केना लोक कहैए जे कोनो बीआक लेल अनुकूले वातावरण भेटलापर अंकुर होइ छै। अंकुरक लेल तँ वएह वातावरण अनुकूल भऽ जाइत अछि जइ मूलक ओ बीआ आ बीआक गाछ होइत अछि। जँ से नै तँ एक दिस अगम पानिबला समुद्रमे बीआ अकुरि पनिगाछक जन्म दैत अछि तँ दोसर माटि-पानि बीच सेहो दैत अछि। ततबे किअए? दोखरा बालुओ आ चखान भेल पाथरोमे तँ कोनो-ने-कोनो गाछक बीआ तँ अकुरिते अछि। जखन दुनियाँक सभठाम शक्ति मौजूद अछि तखन मिथिलाक भूमि किअए शक्तिहीन भऽ जाएत। जे बीत भरिक पेटक रच्छा नै कऽ सकैत अछि। जे धरती भिखारीकेँ भिक्षु बना सकैए, भोगीकेँ जोगी बना सकैए, ओ जोगीकेँ किअए ने भोगी आ भिक्षुकेँ भिखारी बना सकैए। एक नव शक्तिक उदय कामिनीक मनमे भऽ चुकल छलनि। सौंसे धानक लाबा जकाँ मन दू फाँक भऽ गेल छलनि। जहिना खापड़िमे एक-फाँक, दू-फाँक, तीन-फाँक होइत लाबा खापड़िसँ उड़ए चाहैत अछि, उड़बो करैत अछि तहिना कामिनीक विचार उड़लनि। मुदा मुँहक बोल सुखा गेलनि। कंठक तरास बढ़ए लगलनि। मुदा पति-पुत्रक बीच चलैत धारमे अपनाकेँ पाबि कामिनीक हृदय छटपटेलनि। सुशीलक आँखिमे आँखि गाड़ैत बजलीह-

''बाउ सुशील, अहाँक पिता आ अपन पतिक तँ अंतिम दिनक क्षण क्षणकि रहल हेताह। चलि कऽ आइ दुनू माए-बेटा भेँट कऽ लिअनु?''

माइक बात सुनि सुशीलक मन ठमकल। केकरो मनमे फूलक वर्षा होइत अछि तँ केकरो पानि-पाथर बनल ओला-पाथर बरसैए। मुदा जहिना मरबो दुनू करैए तँ जीबो तँ करिते अछि। भेँट करए चालैले माए कहै छथि मुदा कि ई उचित हएत? हम सभ जेबे करब तइसँ कि हुनका भेटतनि? आ हमरे सभकेँ

भेटत? अस्ताचल गामी सूर्यक लाभ तँ ओकरे भेटैत छै जे उदीयमान अछि। जे उदीयमान नै अछि ओकरा लेल तँ जेहने दिन तेहने राति, तखन अस्ताचलक महत्वे की? हुनका -पिता- किछु ने भेटतनि, भेटतनि वएह जे अपना ले फाँसीपर चढ़ि रहला अछि आ परिवारक लेल। जँ परिवारक लेल तँ कि अधले काजपर परिवार चलि सकैए आ नीक काजपर नै चलि सकैए। जँ चलि सकैए तँ ओ खुद नीक बाट छोड़ि अधला बाटपर चलि अंतिम दर्शन देखा रहला अछि। अंतिम दर्शन की? यएह ने जे धरतीपर कनैत एलौं हँसैत जाएब आकि जहिना कनैत एलौं तहिना कनैत जाएब, तँ कि एहेन जिनगीकेँ सुभर जिनगी मानबै? कथमपि नै? जखने घरसँ डेग उठाएब तखनेसँ लोक कहबो करत आ थूकबो करत जे खुनिया-अधरमीक बहु-बेटाकेँ देखियौ? निरलज जकाँ केहेन धमौड़ दैत जा रहल अछि। माइक प्रश्नक उत्तर दैत सुशील बाजल-

‘‘माए, कोन मुँह देखए आ देखबए जाएब। सोझ पड़लापर पिता यएह ने कहता जे अहीं सभले जा रहल छी? मुदा अपना सभ कि पुछबनि?’’

सुशीलक विचार कामिनीक मनमे अभिभावकक रूपमे जगलनि। जहिना सइयो हाथक लत्ती बिना सहाराक धरतीसँ नै उठि सकैत अछि तहिना ने नारियो अछि। डॉड़मे चोट मारि ने विधातो विधिक रचना केलनि। बेटाक सहारा देखि कामिनीक मनमे अगिला जिनगीक आस जगले रहनि। विह्वल भऽ बजलीह-

‘‘बेटा, बेटा बनि जँ धरतीपर आबी तँ बेटा कहबैत चली। आब तँ तोंही ने सभ किछु भेलह। वैधव्य भेने एक आकुश मात्र लगत। मुदा आरो जिनगी तँ संग मिलि चलबे करबह किने, तोहर जे विचार हेतह सएह ने हमरो विचार हएत। कहुना भेलह तँ तूँ पुरुष-पात भेलह? हम कतबो हएब तँ घरे भरि हएब।’’

माइक बात सुनि सुशीलक मन पसीज गेल। अपन दायित्वक भान भेलै। मुदा लगले मन मुरुछि गेलै। एक दिस धरती सदृश निश्चल माए तँ दोसर दिस कुकर्मी अपराधी, धरतीक पापात्मा पिता देखए लगल। पिताक प्रति मनक उष्मा तेज भऽ गेलै। बाजल-

‘‘माए, परिवारक बड़का बोझ उतरैक दिन........।’’

सुशीलक बोल बन्न भऽ गेलै। विस्मित अवस्थामे सुशीलकेँ देखि कामिनी बाजलि-

‘‘सोग नै करह। जइ दिनक जे भवितव्य छलै ओ भेलै। जहिना जरल-मरल धरती आद्राक बुन्न पाबि सिर्फ जीविते नै सृजक सेहो बनि जाइत अछि। तों तँ सहजे पुरुख छिअह। आन के केकरा कहत आ केकर के सुनत। मुदा जहिना

तोहर पिता तहिना तँ हमरो पति छथिये। तँए अन्तिम घड़ीमे श्रद्धापूर्वक स्मरण कऽ विसरि जाह। चलह अंगनेक ओसारपर बैस चाहो बना पीब आ गपो-सप करब। दुनियाँ किछु कहह, मुदा तोहर मुँह देखि एहेन खुशी भऽ रहल अछि जे जिनगीमे कहियो नै भेल छल।''

माइक बात सुनि सुशीलक मन ओहिना फड़फड़ा उठल। बाजल-

''असगरे लोक जन्म लइए आ अपने आशा सभकेँ करैक चाहिये।''

बेटाक आस भरल बात सुनि कामिनीक हृदए पसीज गेलनि। बजलीह-

''बौआ, आब तूँ बौआ नै बेटा भेलह। बापक काज कऽ देखि परेखि दुनियाँक संग चलैक एक सिपाही भेलह। परिवार-समाज कर्मभूमि भेलह। ने अनका पढ़ने आनकेँ ज्ञान होइत आ ने अनकर ज्ञान अनका ले सबतरि उचिते होएत। तँए अपन समए, परिस्थितिकेँ अँकैत परिवारकेँ आगू मुँहेँ ससारैक तँ भार माथपर आबिये गेल छह। केहेन मनुख बनि धरतीक धारण केलौं, यएह ने जिनगीक परीछा छी।''

माए-बेटाक बीच जिनगी परिवारक गप-सपक बीच कामिनीक मन कखनो पतिसँ हटियो जाइत मुदा लगले पुन: आबि मनकेँ पकड़ि लैत। जखन मनसँ हटैत तखन अपनो हाथ-पएर निहारि-निहारि देखथि आ सुशीलोकेँ निहारि-निहारि देखथि। मनमे उठलनि पाँखि तँ टिकुलियोकेँ होइ छै, अकासमे उड़बो करैए मुदा तँए ओ चिड़ै तँ नै कहाइत। चिड़ै लेल तँ पाँखिमे दम चाही। से कहाँ टिकुलीमे होइ छै। कनियो किछु होइ छै कि पाँखि टुटि जाइ छै। जइसँ अकास उड़बे बन्न भऽ जाइ छै। तहिना तँ अखन अपनो परिवार भऽ गेल अछि। हम उमरदार छी तँ घरसँ बहार किछु करबे ने केलौं आ सुशील तँ सहजे कोनो भार बुझबे ने केलक। नै बहराइक कारणो भेल जे अपनाकेँ घरेक सीमामे रखलौं। जे उचितो भेल आ अनुचितो भेल। अर्द्धांगिनी होइक नाते जिनगीक सभ वृत्तिसँ परिचित हेबाक चाहै छल से नै भेल। जँ से भेल रहैत तँ जरूर नीक-अधला वृत्तिक विचार करितौं। मुदा, अपसोचो केने तँ नहिये किछु हएत। बाजलि-

''बेटा, जँ ऐ धरतीपर बेटा बनि आबी तँ किछु कऽ देखाबी। जँ से नै तँ बेटाक महत्ते की?''

माइक बात सुनि सुशीलक मन नव कलशल टुस्सा जकाँ नव रूपमे पनगल। माइक आँखिमे आँखि गाड़ि बाजल-

''माए, दुनियाँमे सभ अपन-अपन भाग-तकदीर लऽ जिनगी बनबैत अछि। जेहेन जेकर जिनगी जीबैक बाट रहै छै तेहेन से भार उठा चलैत अछि।''

सुशीलक बात सुनि कामिनी विह्वल होइत बजलीह-

“बेटा, जहिना एक बेटा बनल-बनाएल परिवार-खनदानकेँ नाश कऽ दैत अछि तहिना एक बेटा बनल-बनाएल परिवारकेँ उठा ठाढ़ो कऽ दैत अछि।”

जहिना कल्पवृक्षक निच्चा बैसिनिहार बौड़ाइत रहैए तहिना फाँसीपर चढ़ैत बलदेवक परिवारक मन बौड़ा रहल अछि। असमसान जाइकाल मुर्दाक पाछू कठियारीबला ‘राम-नाम सत् है, सबको यही गत है।’, कहैत चलैत मुदा घुमतियो काल जखन कि मुर्दा नै रहैत, वएह कहैत जे ‘राम नाम सत् है, सबको यही गत है।’ भलहिं मृत्युक आंगन आबि लोह-पाथर, आगि छूबि बिसरि जाइत वा छोड़ि दैत। जइठाम बच्चासँ सियान धरि मंत्र जपैत तइठाम एहेन जिनगीक दशा किएक? जहिना रस्ता चलैत बताह कखनो रस्तासँ हटि तँ कखनो सटि ललकारो भरैत आ कखनो असथिर भऽ बौको बनि जाइत तहिना माए-बेटाक अर्थात् सुशील-कामिनीक मन पिता-पतिक फाँसीक किछु समए पूर्व पुरबा-पछबा जकाँ रस्सा-कस्सी करैत।

कामिनी- “बेटा, तीन गोरेक परिवारमे एकक अंत भऽ रहल अछि तैयो तँ दू गोरे बँचलौं। तोहर बिआह होइते फेर तीन गोरे भइये जाएब।”

माइक बात सुनि सुशील बाजल-

“एहिना परिवार कम-बेसी होइत एलैए आ होइत चलतै। तइले कत्ते माथ धूनब। तखन तँ एकटा बात बुझए पड़त जे आनकेँ केकर परिवारक भार उठबैए, अपन परिवारक भार तँ अपने उठबए पड़त।”

कामिनी- “हँ, ई तँ बेस बजलह।”

सुशील- “दुखे कि सुखे परिवारक बोझ तँ परिवारेक लोककेँ उठबए पड़तै।”

सुशीलक बात सुनि कामिनीक मन सहमि गेलनि। बेटा सहजहि अनाड़िये अछि, अपने कहियो भारे ने बुझलौं। तखन.....?

बकार बन्न भऽ गेलनि। जहिना भुमकमक समए धरतीक सभ किछु डोलए लगैत तहिना कामिनीक भीतर-बाहर डोलए लगलनि।

धारक बहैत पानिमे जहिना पएर असथिरो कऽ टपैमे थरथड़ाइत तहिना कामिनीकेँ हुअए लगलनि। सुशीलोक मन विचलित होइत मुदा मनकेँ थीर करैत बाजल-

“माए, प्रश्न तँ छुटिये गेल अछि। उत्तर कहाँ देलँह।”

सुशीलक प्रश्न मन पाड़ि कामिनी बजलीह-

“अर्द्धांगिनी बनि जइ पुरुखक संग पकड़लौं हुनका चीन्हि नै सकलियनि। आइ बुझै छी जे पुरुखक भीतर सेहो, पुरुख होइ छै आ नारीक भीतर सेहो नारी

होइ छै। जँ से बुझने रहितौं तँ एतेक दूरी नै बनि पबैत। ओना परिवारक भीतर अपन भार निमाहैमे कहियो कोताही नै केलौं मुदा....। आब उपाऐ कि अछि?''

बजैत-बजैत कामिनी ठमकि गेलीह। जहिना नदी-नालाक पानिक बेग आगूमे बान्ह पाबि रूकि जाइत तहिना कामिनीकेँ भेलनि। सहत बेधल माछ जकाँ छटपटाए लगलीह। छटपटाइत मनमे आबए लगलनि, एक दिस तत्ववेत्ता तात्विक चिन्तन-विवेचनमे लगल रहैत अछि तँ दोसर दिस व्यक्ति-व्यक्तिक बीच सेहो होड़ लगल अछि। सभ सभसँ आगू बढ़ए चाहैत अछि। जइसँ संगे चलब छूटि जाइत अछि। समाज विखंडित भऽ जाइत अछि। श्रमिक अश्रमिकक बीच दिशा-दिशान्तरक अंतर बनि जाइत अछि।

दुनू माए-बेटा गुमसुम भेल एक-दोसराक मुँह देखैत। गुम्मी तोड़ि सुशील बाजल-

''माए, तोहर की इच्छा छउ?''

बेटाक बात सुनि कामिनीक मन शान्त भऽ गेलनि। पतिक फाँसी मनसँ हटि गेलनि। मन पाड़ि बाजए लगलीह-

''बेटा, बहुत दुनियाँ देखलौं। नाना-नानी, दादा-दादी, बाप-माए, मामा-मामी, केत्ते कहबह। पाछू उनटि तकै छी तँ सभ किछु देखै छी मुदा आगू तकै छी तँ तोरा छोड़ि किछु ने देखै छी। जहिना नमहर गाछ खसि रस्ता रोकि दइए तहिना आगू बूझि पड़ैए।''

माइक बात सुनि सुशील बाजल-

''माए, तोहर जे इच्छा छोउ, ओकरा जहाँधरि भऽ सकत पूरबैक कोशिश करब। जे धरती छोड़ि चलि गेल, ओ तँ सहजे चलि गेल। ओकरा संग किछु थोड़बे जेतइ। मुदा जे अछि ओकर तँ आशा अछिये।''

आशा भरल सुशीलक विचारमे आस लगबैत माए बजलीह-

''दुनियाँक खेल छिऐ जे एकपर सए ठाढ़ अछि आ कखनो सए सए दिसि छिड़िआएल रहैए। तँए सभ किछु बिसरि जाह। बीतलाहा काल्हि मन राखह आ अगिला काल्हि ले हाथ-पएर उठाबह।''

नअ बजिते जहलक भीतर ओहने चलमली आबि गेल जेहने नमहर बर्खा भेलापर वा भूमकम भेलापर होइत अछि। किछु गोटे -सिपाही- नहाइ-खाइले गेला। तँ किछु गोटे दस बजे जहलसँ निकलैक कागज-पत्तर सरियबैमे लगि गेला। ओना अनदिनासँ ऑफिसोक रंग बदलल। जेना घंटा-घंटा भरि ऑफिसरक अभावमे गेटपर ठाढ़ भऽ प्रतिक्षा करए पड़ैत रहैत तेना नै। ऑफिस समैयेपर खुजि गेल। केना नै खुजैत, आइ बलदेवकेँ जहलक सजाए जे समाप्त भऽ रहल

अछि। फाँसी तँ जिनगीक छी। सिर्फ दूटा सिपाही बलदेवकेँ सेलसँ निकालि अग्नेयक गाछक निच्चामे सबजियेपर बैसि गप-सप्प करए लगल। तहूमे एक गोटे चीलमक भॉजमे लगि गेल आ दोसर बलदेवसँ गप-सप्प करए लगल। मुदा तीनू गोटे माने दुनू सिपाही आ बलदेवक मन तीन दिस बौआइत ढहनाइत। चीलमक भॉज-भूँज केनिहार -पहिल सिपाही- तमाकुलबलापर बिगड़ि गरिअबैत जे साला सभ पानि छीटि अधलो पत्ताकेँ तेहेन डगडगी आनि दइए जे लेनिहारकेँ बूझि पड़ैत जे टिपगर अछि। मुदा स्नो-पोडर लगौलहा मुँह तँ ओतबे काल ने चमकैत जतेकाल ओकरा चमकैक शक्ति छै, मुदा तँए की सभ मुँह ओहने होइए जे लगले चमकत लगले दबि जाएत, बिलिन भऽ जाएत। तमाकुलक तामस सिपाहीकेँ आगू बढ़ा सरकार दिस लऽ गेल। सरकारपर नजरि पड़िते हँसी लगलै। बड़बड़ाए लगल-

"अजीब मदारी-नाच सरकारो करैए। एक दिस तमाकुल खेती करैक लाइसेंस, गुटका बनबैक लाइसेंस दइए आ दोसर दिस कैंसर रोगक कारण कहि मनाही करैए। मुदा लगले मन घूमि कऽ अपनापर चलि एलै। तीस बर्खक नोकरीक कमाइ अही-गॉजा-भॉगमे चलि गेल। जखन रिटायर करब, आ आधा दरमाहा भेटत तखन कि करब। एक तँ देहमे किछु ने रहल जे दोसरो काज करब, खेनाइ-पीनाइक अभाव सेहो हेबे करत। तइपर बुढ़ाड़ियो तँ बीमारीक जड़िये छी, कहियो दाँत टुटत तँ कहियो आँखिक इजोत कमत। कहियो कानक बहीर हएब तँ कहियो बातरस ठेहुनमे पकड़त। मुदा अपना विषयमे अपने सोचलौं कहिया जे बूझब। सिपाही दोसर जे बलदेवक आगूमे बैसल रहए, ओकर मन भिन्ने बौआइत। जहिना शराबीकेँ शराबक बोतल आगूमे अबिते शरावक खुमारी आबि-आबि नाचए लगैत तहिना ने मृत्यु वा फाँसीसँ पूर्वक क्षण होइत। फाँसीसँ पूर्व धरि ने बलदेव अपराधी छी आ हम ओकर पहरुदार सिपाही मुदा किछु काल बाद अर्थात् बारह बजेक पछाति के कतए रहब तेकर कोन ठेकान अछि। से नै तँ अखन ने हम सिपाही आ ने बलदेव अपराधी। कि केने बलदेव एत्ते पैघ अपराधी भेल आ हम ओकर सिपाही छी। बलदेवक मन बीरान होइत ऐ दुनियाँकेँ देखैत जे जहिना फलसँ लुबधल आमक गाछ बिहाड़िक झोकमे खसि पानि फेरि दैत तहिना ने अपनो आ परिवारोकेँ भऽ रहल अछि। मुदा आब तँ ने सोचै-बिचारैक समए रहल आ ने ओकरा पुरबैक।"

तीनू गोटे अपने-आपमे मस्त। मुदा जहिना तीर्थस्थानमे अनठिया यात्री एक-दोसर लग बैसि अबैक कारणो पुछैत आ रस्ताक भीड़-कुभीड़ सेहो पुछैत तहिना दोसर सिपाही चुप्पी तोड़ैत बलदेवकेँ पुछलक-

''भाय, आइ तँ फाँसियेपर चढ़ि जिनगीक अन्त करबह। मुदा एकटा बात कहह जे केना-केना करैत एहेन सजाएक भागी भेलह?''

सिपाहीक प्रश्न सुनि बलदेव मर्माहत भऽ जिनगीक समुद्रमे डूमि गेल। जहिना पोखरिमे पानिक ऊपरक आवाज तँ पानिक भीतरोमे पहुँचैत मुदा पानिक भीतरक आवाज ऊपर नै अबैत तहिना बलदेवकेँ भेलै। बकार बन्न रहै मुदा कलपैत मन किछु बजैत जरूर रहै। जिनगीक समुद्रमे डुमैत बलदेवकेँ, जहिना छठिआरीक दूध बच्चाकेँ मन पड़ि जाइत छैक तहिना जिनगीक ओइ धरतीपर पहुँचि गेल जतए अवोधे नै छेहा अवोध रहैए। मन पड़लै ओ दिन जइ दिन दोसर बच्चाक खेलौना छीनि नुका धेलौं आ माइयो झूठ बाजि लाथ कऽ लेलकै। मन पड़िते सुबहक सूर्ज जकाँ, लालीसँ दप-दपी चेहरामे आबए लगलै। मुसिकियाइत बलदेव बाजल-

''सिपाही भाय, बच्चाक ओ दिन मनसँ निकलैले छटपटाइए तँए पहिने वएह कहै छी।''

बलदेवक बात सुनि सिपाहीक मन सेहो अपन बालपन आ परिवारक बच्चापर पड़लै। सड़क नपैत दूरबीन जकाँ कतौ-सँ-कतौ दुनू गोटे नापए लगल। सगतरि बच्चे-बच्चा देखि पड़ैत। आगूओ बच्चा पाछूओ बच्चा तइ बीच अपनो दुनू बच्चा। बच्चाक वनमे दुनू गोटे हरा गेल। हराइते दुनू गोटे सहटि कऽ आरो लग आबि गपकेँ आगू बढ़ौलक।

जहिना दुखक निवारण बोल आ नोर दुनूसँ होइत अछि तहिना बलदेव अपन दुखनामा बजैत बाजल-

''भैयारी, बच्चामे हम दोसर बच्चाक खेलौना छीन कऽ चोरा रखलौं। कनैत ओ बच्चा आंगन जा माएकेँ कहलक। बच्चाक संगे माए आबि पुछलक। नठि गेलौं। मुदा रखैले माएकेँ दऽ देने रहिऐ। माइयो नठि गेल। तेसर दिन वएह खेलौना लेने ओकरे आंगन खेलाइले गेलौं। दुनू माए-बेटा चिन्ह गेल। कहलक तँ किछु नै मुदा चोरबा नाओं राखि देलक।''

बलदेवक बात सुनि ठहाका मारि सिपाही अपन संगी, दोसर सिपाही दिस इशारा करैत बाजल-

''भैयारी, संगी तँ गाजा पीब मस्त छथि। बचलौं दुइये गोटे, जेकरा सभक राज-पाट छिऐ से सभ अपन सम्हारह। तइसँ हमरा की। अच्छा तेकर बाद की भेल?''

सिपाहीक बात सुनि बलदेव गुम्म भऽ गेल। कने काल गुम रहि बाजल-
''ओइ दिनक नीक आइ अधला बूझि पड़ैए।''

बलदेवक उत्तर सुनि चौंकैत सिपाही बाजल-

"से केना, से केना भैयारी?"

विस्मित होइत बलदेव बाजल-

"भैयारी, बात ओतबेपर नै अँटकल। आगू बढ़ि गेल।"

"की आगू बढ़ि गेल?"

"पानि भरैले माइयो इनारपर गेल आ ओहो दुनू माइपूत आएल। आरो गोटे सभ रहए। तइ बीच ओ माएकेँ कहलक, अहींक बेटा हमरा बेटाक खेलौना चोरा लेलक। एतबे बजैत, अँएले, वँएले, पछियामे पजड़ल पसाही जकाँ लगि गेलै। दुनूक बीच कहा-कही शुरू भेल। कहा-कहीसँ गारा-गारी हुअए लगल। जहिना सात पुरुखाकेँ हमर माए उकटए लगलै तहिना ओहो उकटए लगल। तइ बीच एक्के-दुइये आनो-आन कहा-कहीमे शामिल हुअए लगल। हल्ला सुनि लोको सभ आबए लगल। जे अबै से कोनो दिस सन्हिया जाए। दू पाटीमे बँटि खूब गारि-गरौबलि चलए लगलै।"

बलदेव बात समाप्तो नै केने छल आकि बीचेमे दोसर सिपाही टोनि देलक-
"ई तँ नाहकमे एत्ते बात बढ़ल?"

"से कि ओतबेपर अँटकल। आरो बेसिया गेल। दुनू दिसक गबाही कमलेसरिये माता हुअए लगलखिन। कारण जे सभ तँ कानो ने कोनो दिसक पाटी बनि झगड़ा, गारि-गरौबलिमे शामिल रहए।"

जहिना फुलाएल पानकेँ मुँह बन्न कऽ आनन्द लेल जाइत अछि तहिना आनन्द लैत सिपाही बाजल-

"स्त्रीगणेक बीच झगड़ा भऽ कऽ रहि गेल। आकि आगू बढ़ल?"

सिपाहीक प्रश्न सुनि बलदेव बाजल-

"मरद स्त्रीगणमे कोनो भेद अछि। ने मरद मरद जकाँ रहैए आ ने स्त्रीगण स्त्रीगण जकाँ। मरदो मौगिआही चालि पकड़ि मौगी बनि गेल अछि आ मौगियो मरदनमा चलि पकड़ि मरद बनि गेल अछि। स्त्रीगणक गारि-गरौबलि पुरुखक मुँहमे चलि आएल। जहिना एक चम्मच दही तौला भरि दूधकेँ दही बना दइए, जइसँ एक तौलाकेँ के कहए जे कतेको तौला दूध दही बनि जाइए तहिना स्त्रीगणक मुँहक गारि पुरुखमे चलि आएल।"

सिपाही- "होतसँ होतान भऽ गेल।"

बलदेव- "अँए एतबे भेल, स्त्रीगण ने भोरसँ साँझ धरि गारियेक माला जपि सकैए मुदा पुरुखमे तँ से नै होइए। एकसँ दू गारि मुँहसँ निकालिते हाथ उठए लगै छै। जखने हाथ उठल आकि दोसरपर खसल। सएह भेल।"

रस चुसैत सिपाही बाजल-

“तखन तँ मारि भऽ गेल हएत?”

सिपाहीक जिज्ञासु प्रश्न बलदेवकेँ उत्साहित करए लगल। उत्साहित होइत बलदेव बाजल-

“मारिये भेल की गधकिच्चनि मारि भेल। मुदा दुनू दिस एक रंग नै भेल। हमर दियादी नमहर, तहूमे तेहेन छड़े-छाँट समांग सभ अछि जे देखबोमे राक्षसे जकाँ लगबो करैए। ओकर दियादी छोट माने कम संख्याक अछि तँए वएह सभ बेसी मारि खेलक।”

सामंजस करैत सिपाही बाजल-

“एतए तँ दुइये गोरे छी, तेसर हमर संगी- पहिल सिपही अछि, ओ तँ भकुआएले अछि। निच्चा धरती ऊपर अकास अछि। तँए दुइये गोरेक बीच पनचैती करू जे नीक भेल कि अधला?”

सिपाहीक बात सुनि बलदेव आगू बढ़ैत बाजल-

“पनचैती पछाति करब। अखने अगुता गेलौं भैयारी! अखन तँ पेनियो नै छनाएल अछि।”

बलदेवक बात सुनि सिपाही घड़ी देखलक। साढ़े नओए बाजल। एक तँ ओहिना प्रतीक्षाक समए गड़ूगर होइ छै तइपर जहलक बीचक प्रतिक्षा! समए पाबि सिपाही बाजल-

“आरो बात अछि भैयारी?”

आरो सुनि जहिना आदि-इत्यादि नेनमुँह बच्चाकेँ हरा दैत अछि तहिना बलदेव हरा गेल। बाजल-

“आरो कि कनिये अछि जे धक दऽ नजरि चलि जाएत। मारे-अमार लगल अछि। तइ बीचमे सँ बीछए पड़त किने। नै तँ ओही नेनमुँह बच्चा जकाँ जिनगी भरि आदि-इत्यादि करैत रहब, मुदा ओकरा बीछि नै पएब।”

बलदेवक थीर विचार सुनि सिपाही अपनाकेँ थीर करैत बाजल-

“अच्छा होउ। अखन दू घंटासँ बेशिये समए अछि।”

दू घंटासँ बेसी समए सुनि बलदेव बाजल-

“दू घंटामे तँ विद्यार्थी परीक्षा पास कऽ लइए। तइसँ बेसी समए लगने बोर्ड-युनिवसिटीसँ डिग्री लऽ अबैए। अखन बहुत समए अछि।”

समए पाबि सपाही जेबीसँ सलाइ-सिगरेट निकालि एकटा अपनो आंगुरसँ दबलक आ दोसर बलदेवोकेँ देलक। सलाइ खरड़ि सिगरेट सुनगा दुनू पीबए लगल। दुनू मुँहक घुआँ मुँहसँ निकलिते तेना मिलैत जाए जे फुटा कऽ देखब असंभव भऽ गेल। मुँहक सिगरेट सठिते बलदेब बाजल-

“भैयारी, किछु घंटाक मेहमान छी, अहाँ कतए रहब हम कतए रहब तेकर कोन ठेकान। मुदा मनमे जे अछि ओ केकरा कहि सकबै। तँए जाबे एकठीम छी ताबे सुनू। जतए धरि भऽ सकत ओते तँ मन हल्लुक रहत।”

बलदेवक बात सुनि सिपाही बाजल-

“जखन सुनै लगलौं तँ सुनाउ, जत्ते सुनाएब सभ सुनि लेब। तहूमे बाल-बोधक गप छी, हम सभ नै सुनब तँ के सुनतै। आखिर गारजनो तँ छियन्हिहेँ।”

मुस्कुराइत बलदेव बाजए लगल-

“ठीकसँ मन नइए। मुदा वएह सात-आठ बर्खक रही।”

बीचेमे सिपाही टोकलक-

“ने सात ने आठ, साढ़े सात भेल। तइले एत्ते ततमताइ किअए छी।”

बलदेव- “एते नीक नहाँति मन अछि जे अनका बाड़ीसँ नेबो, दाड़ीम, लताम चोरा-चोरा खूब आनी। पड़ोसियेक नेबो बाड़ी हमरा भाँगक चहटि लगौलक।”

जिज्ञासा करैत सिपाही-

“से केना, से केना?”

“बाड़ी-झाड़ी लगबैमे एकटा पड़ोसिया बड़ माहिर। भरि दिन ओही पाछू बेहाल। मुदा गुणो रहनि, ने केकरो बाड़ी-झाड़ी जाइसँ रोकथिन आ ने सोझामे छुच्छे हाथे केकरो घुमऽ देथिन। हुनके बाड़ीसँ सभ दिन दूटा नेबो तोड़ि ली, आ चौकपर बेचि, भांगो आ पानो खा ली। गुजर करै जोकर खेत-पथार तँ नहिये रहए मुदा तैयो सात-आठ मास खेतक उबजासँ गुजर चलि जाए। कट्ठा दसे-बारहेक करीब बटाइयो खेत बाबू करैत रहथि। तइ सब मिला साल-माल लगि जाइत छल। ओना साँझू पहर कऽ जे अन्ट-सन्ट काजो करी आ बजबो करी तइसँ बाबू बूझि गेल रहथि जे छौड़ा बहबाड़ि भेल जाइए। संगति खराब भऽ गेल छै।”

सिपाही- “बाबू किछु कहथि नै?”

बलदेव- “कहितथि की माइयक ने दुलारू बेटा रही। जँ कहियो किछु बजौ चाहथि तँ तेना कऽ माए झपटि लन्हि जे मुँहे बन्न भऽ जानि। ओना भैयारीमे असगरे रही तहूसँ कहियो तेना भऽ नै कहए चाहथि।”

सिपाही- “तब की भेल?”

बलदेव- “एक दिन कनी पहिने पिसुआ भांगक गोली खा लेलौं तइपर सँ पान सौ नम्मर जरदा देल पान कनी पुष्टसँ चढ़ा देलिऐ। घरपर अबैत-अबैत खूब निशां लगि गेल। बाबू दरबज्जेपर रहथि। कहलनि जे एकटा बात पूछियौ, कहलियनि जे एकटा किअए एक हजार पूछू। हमहूँ हाथियेपर सवार रही।”

हाथीपर सवार सुनि सिपाहीकेँ हँसि लगि गेल। हँसिकेँ सम्हारि बाजल-

''आ जे हाथीपर सँ खसि पड़ितौं तखन की होइतए?''

मुस्कुराइत बलदेव बाजल-

''हद करै छी भैयारी। से जँ बुझैत रहितिये तँ एहिना करितौं। यएह ने नै बुझलिऐ जे केना लोक उट्ठी-बैसी खेल खेलाइए। केना खसलाहा अपनाकेँ चढ़ल बुझैए।''

सिपाही- ''बाबू की पुछलनि?''

''पुछलनि जे अन्न-पानि तँ जेना-तेना बटाइयो-खोटाइ कऽ साल-माल लगिये जाइए मुदा दूध-दहीक नसीब नै होइए। दूध-दहीक नाओं सुनि अपनो मन चमकल। कहलियनि से कि कहै छहक। कहलनि, एकटा महींस पोसिया लऽ लइतौं। आब तोहूँ चरबै-बझबै जोकर भइये गेलह।''

बीचेमे सिपाही टोनलक-

''बड़ सुन्दर बात कहलनि।''

बलदेव- ''हँ-हँ। से तँ अपनो नीक लागल। मनमे उठल जे जहिना खेतक उबजाक अगो, तीमन-तरकारीक पहिल फड़क हकदार आने होइत तहिना गाए-महींसबला परिवारमे डारहीक हकदार तँ धिये-पुते ने होएत। एक तँ डारहीसँ छालही धरि, दोसर दूधसँ दही धरिक ओरियान हएत। तइपर सवारी बना महींसपर चढ़ि सौंसे गामो घूमब। बिनु किछु केनहुँ काजक मोजर सेहो हेबे करत। आ कनी-मनी संगतियो मुँहेँ सुनि रहइो बुझैत रहिऐ जे गजेरी-भंगेरीक पथ्य दूधे-दही छी। जँ से नै खाएत तँ उनटे गांजा-भांग खा जेतइ। जानिये कऽ तँ भांग खाइते छी। अहीमे रमल रहै छी। जे काजुल अछि ओ ने काजमे रमैए आकि जे चिन्तक अछि ओ चिन्तनमे। मुदा हम तँ तइ सभमे नै छी। जिनगी जँ रमता जोगी बहता पानी नै बनल तँ जिनगी सराठिये ने भऽ जाइए।''

चौंकैत सिपाही बाजल-

''सराठी जिनगी केकरा कहै छिऐ?''

सिपाहीक बात सुनि बलदेवकेँ हँसी लागल। जहिना एको दाना नून आकि चिन्नी अपन सुआद जना दइए। तहिना बलदेवकेँ अपन ज्ञानक सुआद लगलै। मुस्की दैत बाजल-

''जहिना धारक पानि ताधरि चलता रहैए जाधरि संगे-संग चलैत रहैए। मुदा जखने कोनो खत्ता-खुत्तीमे फँसि जाइए आ बहाउ रूकि जाइ छै तखन माटिक संग सड़ए लगैए। सड़ैत-सड़ैत एत्ते सड़ि जाइए जे नहाइ-पीबैक कोन गप जे अपन सड़निसँ ओहन-ओहन बिमरियाह कीड़ी सभकेँ जनमबए लगैए जे हाथियो सन-सन जानवर ओइमे फँसि जान गमबैए। महींस चरबै जोकर भइये गेल रही।

किएक तँ देखिये जे हमरोसँ छोट-छोट छौड़ा सभ चरबैए। कहलियनि नीक काजमे एक्को दिन देरी नै करबाक चाही बाबू। जे देरी करैए वएह पछताइए। बाबूओकेँ गप नीक लगलनि। एकटा पोसिया महींस लऽ अनलनि।''

महींसक नाओं सुनि सिपाही बाह-बाही भरैत बाजल-

''जखने कमाइ-खटाइ लोक करए लगैए तखनेसँ अपन धरतीक भार उतारए लगैए।''

सिपाहीक बात बलदेवकेँ नीक लगलै। जहिना एके अन्न पेट भरैक संग-संग मनमे आनन्दो दइ छै तहिना बलदेवोक मनमे भेलै। गद-गदाएल बाजल-

''असलाहा बात तँ कहबे ने केलौं।'' कहि चुप भऽ किछु मन पाड़ए लगल। जहिना खिस्सकरक संग हूँहकारी भरने ओकर उत्साह उठैत रहै छै तहिना बलदेवोक उठल। राज-काजसँ हूसल रागी-भोगी जकाँ दोहरबैत बलदेव बाजल-

''ओह, सुखक दिन चलि गेल। आब थोड़े देखब आकि भोगब। ओ हो हो।''

दुनूक मनसँ बारह बजेक फाँसी हराएल। एक फाँसी ओहनो होइत जइमे संकल्प रूपी कल्याणी माइक गोदमे बैसि हँसैत-चढ़ैत दोसर एहनो होइत जे खण्ड-खण्ड टुटल-छिड़िआएल मन शरीरकेँ छौड़ैत। हूँहकारी भरैत सिपाही बाजल-

''से की। से की?''

चानि ठोकैत बलदेव बाजल-

''महींससँ दूध-दही हेबे करए। पाँच गोटे एहेन छड़े-छाँट महींसवार रही जे महींस चरा साँझू पहर घुमती काल लोकक खेतक जजातो चरा लिऐ आ धानक महीनामे धानो नोचि लिऐ आ नारो बान्हि महींसपर लादि लऽ अनियै। तते अन्न घरमे ढेरिया जाए जे खाइक दुखे हरा गेल रहए।''

सिपाही- ''सभ दिन महींसे चरबैत रहलिऐ?''

आँखि-भौं चमकबैत बलदेव बाजल-

''हद करै छी अहूँ भैयारी। बुधि-बलक संग जिनगियो ने घटै-बढ़ै छै। ठीकसँ तँ नै मन अछि। मुदा एते मन अछि जे दुरागमन भऽ गेल रहए। बाबूओ मरि गेल रहथि। जहिना खेत-पथार बेचि लोक नोकरी करए जाइए तहिना महींस बेचि लेलौं। मुदा पाँचो महींसवारक संबंध आरो बढ़ि गेल। खेनाइ-पीनाइ कथा-कुटुमैतीक संग पनचैती सभ करए लगलौं। गामेमे बहरबैया मालिकक जमीनो आ कचहरियो रहए। कचहरीक बराहिलसँ दोस्ती सेहो भऽ गेल। संजोगो नीक रहल, बराहिलगिरीक नोकरी भऽ गेल। सए बीघा जमीनक मालिक भऽ गेलौं।''

मालिकक नाओं सुनि सिपाही बाजल-

''तखन तँ मानो-दान हुअए लगल हएत?''

मानदान सुनि कठ-मुस्की दैत बलदेव अपसोच करैत बाजल-

''सोझामे जहिना मान-दान बढ़ल परोछमे तहिना गारियो बढ़ि गेल।''

''से किअए?''

किछु मन पाड़ैत बलदेव बालज-

''करबो तहिना करिऐ। जेना गमैया नेता सभकेँ देखबै जे उपरका नेताक आगूमे जे किछु बाजत आ करत, लोकक बीच उनटि कऽ मुँहो आ चालियो बदलि लेत। तहिना करए लगलौं। मालिकक -जमीनदार- आदमीक बीच किछु आ लोकक बीच किछु करए लगलौं।''

उनटैत-पुनटैत पाशा देखि सिपाही बाजल-

''से की?''

बलदेव- ''गामक लोककेँ कोनो मोजर दिऐ। अनेरे केकरो गरिया देलौं, बलजोरी कोनो चीज लऽ लेलौं। तहिना स्त्रीगणो सभकेँ, केकरो किछु कहि दिऐ, केकरो किछु।''

''कियो जबाब नै दिअए?''

''जबाब कि दइत, जहिना पर्डू खुट्टा देखि चुकड़ै छै तहिना ने रहए। एक दिस मालिकक धाक दोसर अपन बलउमकी।''

बीचेमे सिपाही बाजल-

''की अपन उल-उमकी?''

''जहिना शरीरेक मुख्य अंग आँखियो छी आ कानो छी। मुदा दुनूमे कते अन्तर छै से देखै छिऐ। कान बेचारा एहेन सज्जन अछि जे नीकसँ नीक आ अधलासँ अधला सुनि किछु नै करैत, मुदा आँखि केहेन लुच्चा अछि जे देखिते छिऐ, कखनो ललिया कऽ अगिया जाइत तँ कखनो कनखिया जाइत तँ कखनो गैंचिया जाइए। तहिना अपनो अलेल खेने-पीने सदिकाल रमकी चढ़ले रहैत छलए।''

सिपाहीक मनमे तरंग उठलै। तरंगि कऽ बाजल-

''गामक पढ़ल-लिखल लोक ऐ बातकेँ नै बुझैत?''

सिपाहीक प्रश्न सुनि बलदेव गुलाबी हँसी हँसि बाजल-

''जहिना कृष्ण एक दिस भदवरिया बूझल जाइ छथि तँ दोसर परव्रह्म सेहो छथि। मुदा छथिन तँ सभ ले। तँए जे जेहेन तेकरा ले तेहन। तहिना वीणा वादिनी सेहो ने छथि। जेहेन कर्म तेहेन वोध। तही बीचमे ने समाजक पढ़लो-लिखल लोक छथि। जखन जेहेन तखन तेहेन।''

“से केना?”

सिपाहीक प्रश्न सुनि अपनाकेँ सम्हारि बलदेव बाजल-

“जहिना काजोमे लोक एहेन रमान रमि जाइए जे खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ अपन जिनगीक किरिया-कलापक संग घरो-परिवार बिसरि जाइए तहिना दोसर दिस बेरागी सेहो ने व्रह्ममे लीन भऽ सभ किछु बिसरि जाइए। रमता जोगी तँ दुनू बनि जाइए। मुदा की दुनू एक्के भेल?”

बलदेवक बात सिपाही नै बूझि सकल। बाजल-

“कनी फरिया कऽ कहियौ।”

जहिना कारखानाक बनल कपड़ाक थानसँ दरजी काटि-काटि रंग-रंगक वस्त्र बनबैत तहिना बलदेव बनबैत बाजल-

“देखियौ, सप्ताह मास आ सालेक लिअ। आइ तारीख एक महीना एक छी। ई दू सालक बीचक सीमानपर अछि। एकक अंत दोसराक आरंभ छी। बाकी जते अछि से सभ कचिया अछि। जेना मासक भीतर बाइस दिनकेँ कि कहबै? तहिना सप्ताहक भीतर पाँच दिनकेँ की कि कहबै?”

बलदेवक बात सुनि सामंजस करैत सिपाही बाजल-

“खैर, छोड़ू दुनियादारीकेँ। ठनका ठनकै छै तँ कियो अपना माथपर हाथ दइए।”

सिपाहीक बात अन्तो नै भेल छल कि बीचेमे बलदेव बाजल-

“भैयारी, आइ बूझि पड़ैए जे गलती नै भेल गलतिक बाटे पकड़ा गेल।”

चौंक कऽ सिपाही बाजल-

“से की! से की?”

उदास होइत बलदेव बजए लगल-

“भैयारी, कहैले तँ जते मुँह तते बाट अछि। जँ से नै रहैत तँ हृदैसँ निकलि दोसर हृदैमे सटैत केना अछि। मुदा ओते कहैक अखन समए नइए। तँए एतबे कहब जे मनुष्यक बीच दू रास्ता बनल अछि। एक रास्ताकेँ लोक मनुखक रास्ता बूझि केकरो कियो चलैसँ रोकैत नै अछि आ दोसर अछि जे अपना छोड़ि दोसरकेँ मनुख बुझिते ने अछि। रास्तासँ हटि जहिना जंगल-झाड़मे चलैत-चलैत डगर बनि जाइ छै, तहिना डगर धड़ा देने अछि।”

जहिना लोहाक कोनो औजार जखन भोतियाए लगैत तखन कारीगर ओकरा आगिमे धीपा, पीटि पानिमे पनिया दैत, जकरा पानि चढ़ब कहल जाइ छै। तहिना या तँ पाथरपर पानि दऽ दऽ रगड़ि सान चढ़बैए तहिना सिपाहीक कारीगर सिगरेट पीबाक इच्छा जगौलकनि। जेबीसँ सिगरेट निकालि एकटा अपनो संगी -

जे गांजा पीब मस्त भऽ सुनैत छल- कें आ एकटा बलदेवो हाथमे दैत सलाइ खरड़लक। एक दम पीब पहिल सिपाही धुँआ फेकैत बाजल-

"अनेरे अहाँ दुनू गोरे मगजमारी करै छी। एते छिलनि करैक कोन बेगरता अछि। देखबै जे भोजमे दर्जनो समान रहने खेनिहार एक-दूटा पर चोट करैए। परसनिहारक काज छिऐ पूछि-पूछि देनाइ। खेनिहारक मन छिऐ जे खाएब कि नै। आइ जइ गतिक फल पबए चलब से केना भेल?"

सिपाहीक प्रश्नसँ बलदेवकेँ दुख नै भेल। संगीक एहसास भेल। जहिना जुआन-जहानकेँ सासुरक रंगोली कथा संगीकेँ सुनबैत आनन्द अबैत तहिना बलदेवकेँ भेल। दुखो तँ दोसरकेँ कहने कमैए। जँ से नै तँ नोरक संग कियो किअए अपन पति-वियोगक खेरहा सुनबैए। बात मन पाड़ैक समए बनबैत बलदेव बाजल-

"भाय सहाएब, औझुका खुशी सन जिनगीमे कहियो खुशी नै भेल छल।"

सिपाही- "से की?"

बलदेव- "अपन बेथा-कथाकेँ जँ एकोटा सुनिनिहार भेट जाए तँ ओइसँ नीक की हएत। तहिना हृदैक वेदना जँ अहाँ सुनए चाहलौं तँ जिनगीक अंतिम दिनक अंतिम पहरमे सीढ़ीक अन्तिम पौदानक बात कहए चाहै छी।"

बलदेवक विचार सुनैक खुशीमे सिपाही विह्वल भऽ बाजल-

"जहिना भतभोजक अंतिम विन्यास चीनी होइत तहिना जँ अहाँक मधुर वाणी वाणीक -अपन वाणी- संग मिलत तखने ने मिश्री बनि पाथर सदृश सक्कत हएत। यएह ने जिनगीक ओर-छोर छी।"

सिपाहीक बात सुनि दोसर सिपाही बाजल-

"भैया, अहाँ भकुआएल मने भकुआ लगा देलिऐ आ भकुआ गेलौं। कनी चिक्कन जकाँ कहियौ।"

सिपाहीक बात सुनि पहिल सिपाही बाजल-

"सभ दिन तँ दस किलोक बन्दूक कन्हामे लटकौने रहै छह, तखन फुलसन विचार पाथर सन भारी कोन कान्हमे लटकेबह। वहिना तँ कान्ह बदलि दुनू कान्ह भकभकाइत रहै छह तखन माटि तँ माटिये छी।"

सिपाही- "कनी फरिछा कऽ कहियौ।"

सिपाही- "देखहक जहिना ई दुनियाँ माटिक बनल अछि तहिना ने ई देहो माटियेक छी। तँए देह बुझैले माटि बुझए पड़तह। रंग-रंगक माटिसँ ई दुनियाँ बनल अछि। एकर गिनती करब साधारण नै। जहिना देखबहक जे साते रंग तते रंग बनि गेल अछि जे डोराक दोकान, जे साइयो रंगक डोरा बेचैए तेकरो दोकानपर दर्जी घूमि जाइए जे ऐ रंगक डोरा नइए। तहिना माटियो अछि। एक

माटि थाल बनबैए तँ दोसर चिक्कन। ततबे नै एक पाथर सन सक्कत पत्थर बनबैए तँ दोसर पानि सनक वस्तुकेँ पैदा करैबला लेयर -जल मिश्रित माटि-। अच्छा छोड़ह अपना सभ गप। बेचारा बलदेवक अंतिम समए गुजरि रहल अछि तँए पहिने ओहिना सूनब होएत जहिना सूर्यास्तक समए कोनो दूर जाइत बटोही अनभुआर जगहपर आबि अँटकैक ओरियान करए चहैत। पहिने अहाँ अपन बात विसर्जन करू बलदेव भाय तखन जे हेतै से हेतै। जे जीबए से खेलए फागु, जे मरए से लेखे जागु।''

अंतिम तीर निकलैत जहिना हजारो वाणसँ वेधल तिराएलक हृदए सुखसागरक घाटपर पहुँचि हियबैत जे सभसँ सुन्नर जल कोनठाम छै, जइठाम स्नान करब। जाधरि पवित्र पानिसँ पथ नै पखारब ताधरि पएर पिछड़िते रहत। जाधरि पएर पिछड़ैत रहत ताधरि सोझ भऽ चलि नै सकै छी। जाधरि सोझ भऽ ठाढ़ नै भऽ पएब ताधरि कमलासन देखि नै पएब। जाधरि कमलासन देखि नै पएब ताधरि रंग बदलैत कमल कुमुदनीक संग भौराकेँ पराग-जालमे ओझरा लाल-उज्जर ऑचरे समेटि राति भरिक जीवन-रक्षण ओइ मातृ सदृश करैत जइ सदृश छातीमे सटा मैया यशोदा अपन लाड़लाकेँ जिनगीक कथा-बेथा सुना-सुना सुनबैत।

अंतिम तीरसँ तिराएल वा वाणसँ वेधाएल बलदेवक संकल्प-शक्ति जागल। शर्त लगबैत बलदेव बाजल-

''भैयारी, दुनियाँमे हित-अपेछित, दोस-महिम आदि अनेको तरहक होइत अछि, मुदा से नै जिनगी तँ ओकरे जिनगी ने सार्थक होएत जे संकल्पित हुअए। भलहिं छोटसँ-छोट संकल्प किअए ने होए। मनुष्यक पहिल वाण तँ संकल्पे वाण ने होइत जँ से नै तँ जिनगी की। आइ हमरा ओहनो विचार वोध भऽ रहल अछि जे सपनोमे नै सपनाएल छलौं। ओना सपनो तँ सपने छी। कोनो दवाइ जहाजक सैर करबैत, तँ कोनो मलेरिया मच्छड़क मेलामे सैर करैत।''

जहिना कोनो वस्तुक जिज्ञासा एते बढ़ि जाइत जे सभ किछु बिसरि ओकरा पकड़ैले बाबल बनि जाइत तहिना सिपाही बाजल-

''समैपर धियान रखए पड़त। कालक गति केकरो बुते ने रोकाइ छै। तँए अपनाकेँ ओइमे समावेश करू।''

जहिना भोजक वारीक चंगेरामे खाजा रखि एकटा हाथमे नेने पंचक आगूमे आग्रह करैत, तेहने तगेदा बूझि बलदेव बाजल-

''भैयारी, अहाँ तँ भाइक संग, जे माइक संग अबैत ओ यार छी तँए संकल्प बूझू जे झूठ नै कहै छी। ई बात आइ बुझै छी अनकर मेहनतिकेँ तागतिक बलपर लूटैत-चोरबैत एलौं। जेकर चोरोलिऐ ओहो हमरे सन मनुख दूटा हाथ-

पएरबला ने छै। हम किअए छुलिऐ। हमरा ओही दिन फाँसीपर समाज चढ़ा सकै छल आ अपन निअममे सुधार कऽ सकै छल। मुदा से नै भेल। हम गल्ती कहाँ कतौ केलौं गल्तीक बाटक जे कर्तव्य छै वएह ने केलौं। हम तँ तखन बुझितिऐ जे जखन अपने टा एहेन रहितौं। से तँ नै आगू-पाछू दुनू दिस भरल देखलिऐ!''

सिपाही- ''भैयारी, एहेन सजाए किअए भेल, से कहाँ कहलिऐ?''

एक टकसँ दुनू सिपाहीपर नजरि राखि बलदेव टकटकी लगा देखए लगल। जहिना हजारो मील हटि कोनो विचार जन्म लऽ सटि जाइत तहिना सिपाही अपराधीक दूरी मेटा गेल। ने सिपाही किछु बजैत आ ने बलदेव। मुदा डयूटीक तीर सिपाहीकेँ लगल। घड़ी देखि बाजल-

''भैयारी, आब सुनैक समए नै पाबि रहल छी।''

समैक अभाव देखि बलदेव ओहन कथाकार जकाँ जे जिनगीक बेथाकेँ कथा कहैत। घटना-विशेष तँ ओहनो होइत जइसँ गढ़गर घटना सुनिनिहार भोगने रहैत। मुदा तँए की हुनकर विचारकेँ विचार नै मानबनि। तँए समाजक वस्तु साहित्य छी। विचार-सुझावक लेल पाठक-श्रोताक दरबज्जा सदति खुजल रहैक चाहिये। समाधानक अनेको उपाए अछि।

तँए जाधरि साहित्य समाजक सचित्र नै बनि व्यक्ति-चित्र -वक्रचित्र- बनैत रहत ताधरि दुनूक बीच विषमत नै रहए ओहो अनुचित।

जिनगीक अंतिम मोहक बात अंतिम मोड़पर आबि बलदेव बाजल-

''भैयारी, सरकार विरोधमे हवा उठल। हमहूँ बराहिलगिरी छोड़ि नेता बनि गेलौं। हमरा सबहक जीत भेल। अपनेमे टुटान शुरू भेल सभमे, किसान, बेपारी, वुद्धिजीवी, अपराधीमे टुटान भेल। इलाकामे जाल पसरल छल। बुझबे ने केलिऐ जे नेताक टुटानसँ हमहूँ टूटि गेलौं। ऊपरे-ऊपर अपेछा रहल, भीतरे-भीतर दुश्मनी भऽ गेल। जहिना तीतहा रोगक तीतहो दवाइ होइत आ मीठहो होइत। तेहने टुटानमे फँसि गेलौं। चुनावक समए एलै दोसराकेँ ऐठाम धन लूटैक योजना बनल। मुदा ई नै बुझलिऐ जे ग्रुपमे ओहनो अछि जे खून करए जाइए। भेलै सएह। खून केलक कियो नाओं लागल हमर। अपनो मन कहैए जे खुनी हम नै छी। मुदा सोझामे खून भेल तखन हम केम्हर रहिऐ।''

तही बीच दर्जनो तैयार सिपाहीक प्रवेश भेल। सिपाहीकेँ देखिते सिपाहियो आ बलदेवो चौंक गेल। उठि-उठि सभ ठाढ़ भेल। जहलसँ निकलि सभ सभकेँ देखए लगल।

